विषयानुक्रम.

श्रीशंकर.

वनौषधिविज्ञान.

दूसरा भाग.

१ कसेरू.

नाम-संस्कृत-कशेरुक । म. कचरा.

वर्णन-तालावके आसपास दोदो घुटने गहरे कीचडमें एक प्रकारका घास जमा होता है, उसको नागरमोथा कहते हैं. उस घासके मूलमें कसेरू लगतेहैं. जब वह घास सूखने लगता है तब चारचार पहरत कीचडमें खडे रहकर लोग उसे निकाल लेतेहैं. कसेरु उबालकर या भूनकर खाए जातेहै. उनको छीलकर टुकडे कर लिए जातेहै और फिर इसके टुकडोको दूधमें डालकर उबाले जातेहैं. इन दूधको और कसेरुओंको पीस कर दूध निकाला जाताहै और फिर उसमे दूध शकर डालकर मिला लेते हैं. कसेरूको कोकनदेशमें ' कुरडी ' भी कहते हैं.

गुण-कसेरू मीठा, ठंडा, कसेला, भारी, ग्राहक, शुक्रवर्धक, वातकर, दूधवर्धक, मलस्तंभक, रुचिकर, वृष्य, कफकारक, कृमिकर होताहै. और रक्तपित्त, दाह, श्रम, तृषा, रक्तदोष, नेत्ररोग और प्रमेहका नाश करनेवाला है. इसका फूल कामला (पीलिया) और पित्तनाशक है.

२ कचूर.

नाम-स.-कर्चूर । गु. कचूरो म. कचोरा.

वर्णन—कचूरका पेड हल्दीके पेडकी तरह होता है. पान कुछ २ काले होते हैं. पानोंकी लंबाई लगभग दो हाथ होती है. हल्दीकी तरह इसका कंदभी पृथ्वीके भीतरही मिलता है.इसके टुकडे उबालकर आचारमें डाले जातेहैं. कोकन प्रांतमे इसके पेड बहुत होतेहैं. कचूर सुगंधित पदार्थमे डाला जाता है. इसकी गंध अच्छी होती है. इसमे शौकीन लोग ममालेके

साथ पीसकर इसको देहमें उबटनकी तरह लगाते हैं. मराठीमें इसको पद् कचोराभी कहतेहैं. कापूरकाचरीभी एक प्रकारकी कचूरही है.मराठी-में उसकोभी कचोराही कहते हैं. कपूरकाचरीमें सुगंध अधिक होती है. कचूरसे वह महँगीभी मिलती है. और सुगंधके पदार्थोंमें उसका उपयोग अधिक होता है.

गुण—कचूर कडवा,तीखा,उष्ण, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, सुगंधित,रुचिकर, लघु, मुख शुद्ध करनेवाला, रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, और कंठमाला, कुष्ट, अर्श (बवासीर), व्रण, खांसी, दमा, गुल्म, कफ, त्रिदोष, कृमि, वायु, ज्वर और प्लीहाका नाश करनेवाला है. कपूरकाचरी-तीक्ष्ण, दाहक, तीखी, कडवी, कसैली, शीतवीर्य, लघु, और कुछ २ पित्तकर है. तथापि-कास, श्वास, ज्वर, शूल, हिचकी, गुल्म, रक्तरोग, वायु, त्रिदोष, मुंहका फीकापन, दुर्गंध, व्रण, आम, वांति (वमन) और हिध्मरोगका नाश करनेवाली है.

औपधिप्रयोग — (१) त्रिदोष, सूतिका रोग, विषम और जी-र्णज्वरपर—कचूर, पित्तपापडा, देवदार, सोंठ, चिरायता, धमासा, कु-टकी, नागरमोथा और बडी कटेलीकी जडका क्काथ, शहद और पिपरका चूर्ण डालकर देना. (२) जीभपर घर जमता हो या लार पडती हो तो—नित्य सोनेसे उठतेही कचूरका गीला कंद चबार थूंक देना और फिर मुंह धोना चाहिये ऐसा करनेसे सोनेमें लार टपकना आदि विकार शांत हो-जाते है. (३) कृमिपर—कचूरका रस निकालकर पीना चाहिये. (४) अंगमर्द अर्थात् निर्बलतापर—कचूरके और छोटी अरनीके पत्तोंको उबाले हुए पानीमें स्नान करना चाहिये. (५) विशूचिकापर—कचूरके कंदका रस प्याजके रसमें मिलाकर देना चाहिये (६) कमी रोगपर—कचूरके कंदकी चक्रनिर्योंकी माला गलेमें पहनना चाहिये.

३ कडवी वचड.

नाम-म कडवी वचड.

वर्णन— इसको मराठीमें ' ग्ट ' और सैटमी कहते हैं. इसका पेड दक्षिण कोकन, गोआ और मलबार प्रांतमें बहुत होता है. इसके पत्ते

सीताफलके पत्तोंके समान परंतु छोटे होते हैं. फलभी इसके सीताफर जैसेही होते हैं. फलोंका रंग लाल और बीज लंबे होते हैं. बीजोंको उबा लकर तेल निकाला जाता है. तेल कडवा और ठंडा होता है. वह जलानेवं काममें आता है. तेल रक्तशुद्धिकर होता है, उसको मराठीमें 'खटेल' औ 'लैटेल' कहतेहैं.

औषधिप्रयोग-(१) देहमें गरमीका रोग होनेसे जो शरीरपर चढ पड गये हों उनपर-इसके बीज और सुगवेलीके बीज समभागको साधारण कुटकर मांगोरके अंगरसमें तीन दिनतक भिगो रखना और चौथे दिन पीस कर गोली कर रखना चाहिये. उसको नित्य चंदनके तेलमें या नारियल के हाथसे निकाले हुए तेलमें मिलाकर उबटन करनेसे चट्टे मिटते हैं इस मालिशसे एक पहर पीछे स्नान करना चाहिये. (२) गंज, खुजल आदिपर—इसके बीजोंका तेल और सुगळाई एरंड, बडी दंती अथव रतनजोतका तेल मिलाकर उसमें गंधक, कपूर, सिंदूर (कामी) औ निमका रस डालकर घोंटना चाहिये. इस तेलको लगानेसे शीघ्र आराग होता है. खाली इसीका तेल, अथवा गोमूत्रमें पीसकर इसके बीज लगा नाभी अच्छा है. (३) छोटे बच्चोंके सिरमें गरमीके फोडोंपर—इसवे बीजोंके तेलमें चूनेकी कलिका नितरा हुआ पानी डालकर लकडीसे हि लाते रहनेसे मक्खन जैसा बन जाता है. दिनभरमें बारबार नित्य लगाने तीन दिनमें आराम होता है. (४) महाकुष्टपर—भोजन करने उपरांत नि त्य इसके तेलको १०–२० बूंदे लेने और शरीरपर उसी तेलकी मालि श करते रहनेसे तीन महिनेमें रोग मिट जाता है.

४. कडवंची.

नाम-संस्कृत-कटुहुंची. म. कडवंची.

वर्णन- कडवंचीकी बेल होती है. पत्ते इसके बहुत छोटे होते हैं इसकी बेल देशमें होती है. ज्वारके खेतोंमें इसकी बहुत उत्पत्ति होती है बेलके मूलमें गांठ होती है. बेल सूख जानेपर दूसरे वर्ष फिर उसी गाठ अंकुर निकलकर बेल चल निकलतीहै. बेलमें बारीक और मुनक्काके बरा बर फल लगतेहैं. आकार उसका करेला जैसा होता है. फलका रंग हार

होता है. उसीको कडवंची कहते हैं. फलके भीतर छोटे २ बीज होते है. इसके पत्तोंकी भाजी बनाकर लोक बडे स्वादसे खाते है. उसका कंद उष्ण होता है. कंदका उपयोग एक बुरे कामके लिये किया जाता है.

क्षुद्रकरेला– कडवंची– उष्ण, तीक्ष्ण, रुचिकर, अग्निदीपक, रक्तवातकोपन, कटु, व्रण्य (व्रणकर्ता) और रेचक है. उसका फल पित्तकर, रुचिकर है. कंद उसका अर्श, मलरोग, मलग्रंथी और योनिदोषका नाश करनेवाला होताहै और गर्भका स्राव करताहै.

९. काला जीरा.

नाम- स. अरण्यजीरक. गु. कहजिरा म. कडुकारेळे.

वर्णन– मराठीमें इसको ' कडूजिरें ' और ' काळीजिरें ' कहते हैं. इसका पेड दो तीन हाथ ऊंचा और सीधा होता है. इसकी लकडी कुछ बारीक होतीहै. इसमे सरे, अर्थात भुट्टेसे लगते हैं उन्हींमे जीरा निकलता है. यह जीरा कृमिनाशक होता है इसको वनजीराभी कहते हैं.

गुण— काला जीरा उष्ण, कसेला, तीखा, और वायु, कफ तथा व्रणका नाश करनेवाला होता है.

औषधीप्रयोग–(१) ' फुरशा ' नामक विषेले सर्पके विषसे शरीरपर गाठ हो गई हो तो–काला जीराके पत्तोंको गरम करके बांधना अथवा रस लगाना चाहिये (२) नल फूल गया हो तो–कालाजीरा १ तोला और काली मिरच १ तोलाको पावभर पानीमें रातको भिगोदेवें और प्रातः उसपानीमे गरम ठिपरा अर्थात् ईटका टुकडा बुझाकर पिलाना चाहिए (३) पाडुरोगपर–पैसा भर काला जीरा पीसकर ठंड पानीके साथ देना चाहिए. (४) बच्चोंके श्वासपर–काला जीराको खाकर उसका पीक थोडी हलदी मिला कर देना चाहिए.(५)गर्भिणीकी मजनपर-कालाजीरा और मादा जीरा और कुटकीका काढा बनाकर देना. (६) कीडोंपर–कालाजीराका चूर्ण शहदमें मिलाकर देना (७) शरीरके भीतर कहीं वायुसे पीडा होतीहो अगरा पेट दुखता हो तो–काला जीराका बारीक चूर्ण खिलाकर ऊपरसे पानीका घुंट

पिला देना.(८) गर्मीकी फुन्सीपर-कालाजीराको लोटेमें डालकर जलाना और कोयलासा बनाकर तेलमें पिस मालिश करना. (९) बच्छडोंको दुधगा रोग होताहै उसपर–कालाजीराका रस पावभर पानीमें निकालकर उसमें कटुकरंजाका गिर (गुदा) और थोडी काली मिरच मिलाकर देना. अथवा १ तोला काला जिराको कुछ कूटकर काढा बनाकर और उसमें कटुकरंजाका गिर और खैरकी छाल पिसकर मिलाना और पिलाना चाहिये. (१०) बच्चोंके गर्मीपर –काला जीरा और मिश्रीका काढा करके ७ दिनतक दोदो बार नित्य देना. (११) सर्वज्वरपर–मट्टीकी हांडीमें तीन माशे काला जीरा डालकर आगपर चढाना; जब जीरा तडकने लगे तब २४ तोले पानी डालकर पकाना. पकते पकते ४ तोले रह. जाय तब उतारकर शहद मिलाकर पिलाना.

६. कडवी घिया तुरई

नाम—सं. कटु कोशातकी म. कडु घोसाळी.

वर्णन—मीठी घियाकी तरहही इसकीभी बेल होती है. अंतर इतनाही है कि इसका फल अति कडवा होता है.

औषधिप्रयोग—(१) सब प्रकारके विषोंपर–इसकी बेलकी जड अथवा पत्तोंका काढा शहद मिलाकर पिलाना चाहिये; तो वमन होकर विष निकल जायगा. (२) पानथरी और सूजनपर–इसके पत्तोंका रस शक्कर मिलाकर देना.

७. कडवी तुरई.

नाम— सं. महाजाली. गु. कडवा तुरयां. म. कडु दोडकी.

वर्णन–मीठी तुरईकी तरह इसकीभी बेल होती है. परंतु इसके पते,फल और फूल उससे छोटे होते हैं. इसके फल बहुत कडवे होते हैं. बरसातमें इसकी बेल अपनेआप उग जाती है इसके फलको मराठीमें ' दिवाळी' भी कहते हैं.

गुण–कडवी तुरई– ठंडी, कुछ तीखी, कसेली, कडवी होती है;और पक्वाशय,आध्मानवायु, और मलाशयकी शुद्धि करनेवाली, लघु (हलकी), रूखी; और वायु, कफ, पित्त, पाडु, विषदोष, यकृत, कुष्ट, अर्श,

सूजन, खासी, उदर रोग, कावर (पीलिया) और गुल्म (गोला) नाश करनेवाली है. इसका फल—भेदक, तीखा, कडवा, चिकना, ह दीपन और कांति, श्वास, अरुचि, प्रमेह, ज्वर, कुष्ट, कफ—पित्त औ वायुका नाश करनेवाले हैं. बीज—मस्तकशुद्धि करनेवाला होता है.

औषधिप्रयोग— (१) कावर पर—कडवी तुरईका बारीक चूर्ण क रके नाकमें डालना चाहिये. इससे छींकें आवेंगी और पीला पानी निक जायगा. अधिक छींकें आने लगें तो नाकमें घी लगाना. इस तरह ती दिनतक करना. अथवा तुरईमें राई और पीपर भरके रखदेना और उ सको पीसके जलाके सूंघना. (२) पागल कुत्तेके विषपर—कडवी तुरईका रेशे सहित गूदा पावभर पानीमें एक घडी भिगोना और मसल छानकर शक्तिके अनुसार पाच दिनतक सवेरे पीना चाहिये. इससे दस्त और वमन होकर विष निकल जाता है. बरसात निकल जानेतक पथ्य रखना चाहिये. कैसेभी विषपर यह दवा फायदा करती है. (३) दातोंमें कीडे पड जानेपर—इसको चुरटकी तरह पीना चाहिये. (४) आधाशीशीपर—इसका चूर्ण करके साव पानीके साथ थोडासा नाकमें डालना चाहिये. इससे नाकमेंसे पानी बहकर रोग निकल जायगा. (५) अर्शपर—इसका चूर्ण घिसनेसे गलकर गिर जाता है. (६) गलेमें सूजन होती है उसपर—कडवी तुरईको हुक्केमें डालकर पीना चाहिये. इससे मुंहमेंसे लार टपकेगी और गला खुल जायगा. (७) विषपर—इसका काढा घी डाल कर पीनेसे वमन होगा और विष उतर जायगा.

८. कडवा नीम.

नाम—सं. निंब. गु. लींबडा म कडूनिंब

वर्णन—मराठीमें इसको बालनिंब और बाळंतनिंबभी कहते हैं. इसका वृक्ष बहुत बडा होता है. यह हिंदुस्थानभरमें सब जगह मिलता है. पत्ते इसके कंगुरेदार और फूल सफेद तथा छोटे होते हैं गुणोंको देखते तो इसको भूलोकका कल्पवृक्षही कहना चाहिये. प्राचीन आर्य ऋषियोंने इसके अलौकिक गुणोंका शोध करके इसको बडा श्रेष्टपद दिया है.

सके सेवनसे अनेक रोग मिटते हैं. इसीसे हमारे प्राचीन शास्त्रकारोंने प्रत्येक नए वर्षकी प्रतिपदाके दिन काली मिरच, हिंग, सेंधा नमक, जीरा, अजवाइन, इमली और गुड सहित नीमकी कोंपलें और फूल खानेका नियम रक्खा है. इस नियमके होनेसेही सालभरमें एक बार इस सर्व रोगहरने वाले वृक्षके पान हमारे खानेमे आते हैं. इस बातके लिये हमारे दूरदर्शी शास्त्रकारोंका हमको एक बडा उपकार मानना चाहिये. केवल इस वृक्षके पत्ते खाकर रहनेवाले तेजःपुंज और शक्तिमान ऐसे, कोई २ विरक्त पुरुष कभी २ हमारे देखनेमें आते हैं. उनको देखनेसे हमको इस वृक्षके अलौकिक गुण मालूम होते हैं और आश्चर्य गलताहै. हमारे देशमें कई जगह प्रसूता स्त्रीको बच्चा होनेके पीछे तीन दिनतक भोजनके पहले नीमके पत्तोंका रस दिया जाता है, यह बहुत अच्छी बात है. जो स्त्रियां इस रसको अच्छीतरह पी लेतीहैं वे जल्दी नीरोग होजाती है. दूधभी उनके खुब उतरता है. और प्रसूतीके भयंकर रोग होनेका भय नहीं रहता. जो इस रसको लेनेमें आनाकानी करती हैं उनको प्रायः कठिन रोग होते हैं. आजकल भयंकर रोग लगजानेसे असंख्य स्त्रियां कालके मुखमें पडती हैं, इसका यही मुख्य कारण हो सकताहै. व्याही हुई गायकोभी जो नीमके पत्ते खिलाए जाये तो दूध अधिक होताहै और वह नीरोग तथा सशक्त होती है. इस वृक्षकी छायासेभी बडा सुख मिलता है. सार्वजनिक मंदीर, धर्मशाला, मार्ग, जलाशय आदीस्थानोंमें नीमके वृक्ष, छाया और स्वच्छ वायुकेलिये लगाए जाते हैं. जिन घरोंमें ये वृक्ष होते हैं उनकी हवा सदा स्वच्छ रहतीहै, और वहाके रहनेवालोंको उस वृक्षसे बडा आनंद आताहै. नीमका वृक्ष अधिक पुराना होजानेसे उसमें चंदनकीसी सुगंधि आने लगतीहै. इसकी लकडी इमारतोंकेलिये अच्छी होती है. क्योंकि कडवेपनके कारण उसमें कीडे पडनेका भय नहीं रहता. इसका वृक्ष वर्षोंतक रहताहै, और लोगोंको बडा फायदा पहुंचाता है. इसमें एक बडा गुण यह है कि वृक्ष काट डालनेपरभी उसकी जडें फिर फूट आतीहैं और थोडे समयमें वृक्ष खडा हो जाताहै. नीम और पीपलकी बडी मित्र-

ताहै. यह साधारण नियम है कि, जहा पीपलका वृक्ष होता है वहा नीमभी अवश्य होताहे. पीपलभी बडा उपयोगी वृक्षहै. बड, पीपल, गूलर, बिल्व, तुलसी आदि जितने वृक्ष हमारे यहा पवित्र माने गयेहैं, मालूम होता है वे सब उनके गुणोंहीके विचारसे माने गये हे. ऐसे २ उपयुक्त वृक्षोंके अलौकिक गुणोंकी ओर दृष्टि नकरके हम उनका अपने शरीरके लिये उपयोग नहीं करते और सारासारका विचार छोडकर विदेशी अपवित्र और निषिद्ध पानीको गगाजलकी तरह नि शंक होकर लेते हैं. धिक्कार है ऐसे लोगोंको ! ईश्वरनें हिंदुस्थानवासी आर्यजनोंके शरीररक्षणार्थ हजारों औषधिया और जडी बूंटिया उत्पन्न कीहैं उनकी शोध और उपयोग न करके हम परमेश्वरकी इस बक्षशीसका तो निरादर करतेहैं और विदेशी जलवायुके अनुकूल, निषिद्ध और परिणाममें अपकार करनेवाली विलायती दवाइया खातेहैं. इससे बढकर लज्जा और दु:खकी बात और कौनसी होगी? पुरानी कहावत है कि "गुड खानेसे नीमखाना अच्छाहै" इसपर बारीकीसे ध्यान देना चाहिये. नीम देखनेमे कडवा परतु परिणाममें मीठा होता है. इस बातको अच्छीतरह ध्यानमे रखकर उसीके अनुसार आयुष्यक्रममें बरताव करना चाहिये, तो निमके रसकी तरह उसकाभी परिणाम मीठाही होगा. खेतोंकी मेंडपर बबुल वृक्ष लगाए जाते हैं, भूमिमेंसे पौष्टिक अंशको खींचकर खाजातेहैं और धान्योंको नि सत्व कर डालतेहैं परतु नीममे वह बात नही नीमके वृक्ष मेडपर होनेसे खेतको किसी प्रकारकी हानि नहीं होती; इसलिये किसानोंको चाहिये कि अपने खेतकी मेंडपर नीमके वृक्ष लगादें

गुण—कडवा नीम- ठडा, कडवा ग्राहक, तीखा, अग्नि मंद करनेवाला, व्रणरोपण, सूजनको पकानेवाला, बच्चोंको हितकर, हृद्य और कृमि, वमन, व्रण, कफ, सूजन, पित्त, वातकुष्ठ, हृदयदाह, श्रम, खासी, ज्वर, तृषा, अरुचि, रक्तदोष और प्रमेहका नाश करनेवालाहै. इसकी कोंपलें ग्राहक, वात कर और रक्तपित्त, नेत्ररोगका नाश करनेवालीहै. नीमकी लकडी कास श्वास ऐश गुल्म कृमि और प्रमेहका

ाश करती है. पत्ते विशेषकरके व्रणदोषनाशक हैं. 'निंबोली' अर्थात् उसको
ल–चिकने, भेदक, उष्ण और प्रमेह तथा कुष्टका नाश करनेवाली है.
की हुई निंबोळी–मीठी, चिकनी, कडवी, भारी, पिच्छल और कफरोग,
त्ररोग, रक्तपित्त, तथा क्षयका नाश करनेवाली है. बीज–कृमि और
कुष्टनाशक है. नीमका पंचाग कडवा, और रक्तदोष, पित्त,
कुष्ट और दाहका नाश करनेवाला है. बीजका तेल कुछ
उष्ण, कडवा और कृमि, कफ, कुष्ट, व्रण, वात, पित्त, अर्श,
ज्वर, सफोदर, रक्तदोष, तथा कफ, पित्त और जराको जीत लेता है.
कडवे नीमकी छालका उपयोग क्वाथमें करनेकी आज्ञा वैद्यकशास्त्रमें
कई जगह दी गई है, परंतु विस्तारभयसे उन सब प्रयोगोंका यहांपर
वर्णन नहीं किया गया. केवल मुख्य २ प्रयोग दिए जाते हैं. औषधि-
प्रयोग(१) व्रणपर-कडवे नीमके पत्ते व्रणकेलिये अकसीर दवा हैं. नाडी-
व्रण, आदि भयंकर व्रण, नीमके पत्ते डालकर उबाले हुए पानीसे नित्य
धोनेसे साफ हो जाते हैं. और भर जाते हैं. (२) जो व्रण फूटकर
बहता हो उसपर–कडवे नीमके पत्ते पीसकर शहदके साथ लगानेसे व्रण
मिटता है.(३)खुजलीपर–पत्तोंको जलाकर मीठे तेल या कटकरजा(कणगच)
के तेलमें मिलाकर लगाना. (४)सर्पके विषपर–कडवे नीमके पत्ते
रामबाण दवा है. साप काटनेकी यह परीक्षा है कि जिस मनुष्यको साप
काटनेका संदेह हो,उसको नीमके पत्ते, नमक अथवा मिरच चबाना चा-
हिए. जो चबानेसे उसको उस वस्तुका स्वाद मालूम न पडे तो समझ लेना
चाहिये, कि उसको अवश्य सापने काटा है. बस जबतक विष न उतरे तब-
तक उसको बराबर नीमके पत्ते खिलाना अथवा पान या छालका रस पिला-
ना इसीसे विष उतर जायगा. (५) पित्तपर–कडवे नीमके पत्ते-
का पानी डालकर रस निकालना और पिलाना चाहिए. इससे वमन होकर
पित्त गिर जायगा.(६)गरमीपर–कडवे नीमके पत्तोंका रस मिश्री डालकर
सात दिनतक सायं-प्रातः लेते रहना चाहिए. कैसीही गरमी क्यों न हो,
मिटही जायगी.(७)महारोगपर-ये पत्ते उस्ताद हैं. पत्ते डालकर उबाले हुए
पानीसे नित्य स्नान कराना और उसका रस, या पत्तोंको गायके दूधमें

पीसकर उसका रस सेवन कराना चाहिए. इससे दो तीन महीनेमें रक्त पित्त और भयंकर कुष्टरोग अवश्य नष्ट होता है. पथ्यमें रोगीको रक्त और नीमकी छायामें गतको सुलाना चाहिए. (८) जलनसहित सूजनपर—पत्तोंको पीसकर लगाना चाहिए. तो दाह कम होगा और रक्त दोष मिटेगा.(९)पित्तज्वरके दाहपर—पत्तोंका रस फेनयुक्त करके शरीरपर लगानेसे दाह कम होता है. (१०) उष्णज्वरपर—नीमकी लकडी, कुटकी, और चिरायतेका काढा शहद मिलाकर देना (११) कावर रोगपर-अतरछालके रसमें शहद और थोडी सोंठ मिलाकर देना (१२) खुजली पर-पुराने नीमकी लकडी पानीमें पीसकर लगाना (१३) विषमज्वर और शीतज्वरपर—नीमकी छालके काढेमें घनिया और सोंठका चूर्ण मिलाकर देनेसे तुरत लाभ होता है बोधनेवाली औषधिमें यह दवा उत्तम और गुण करनेवाली है (१४) अर्श, कृमि और प्रमेहपर—नीमके कच्चे फल खाना चाहिए (१५) गुमडीपर—कडवे नीमके बीज पीसकर लगाना. जुएं मारनेकेलियेभी बीजोंको पीसकर सिरपर लगाना चाहिए. (१६) सुवारोग (प्रसूतिरोग) पर पुराने नीमकी अतरछाल लाकर उसके छोटे २ टुकडे करना उनको तीन हंडेमें पानी भरके डालना.ऊपरसे ढकन बंद करके चूल्हेपर चढाना और अदहन जैसा गरम पानी करना इसके उपरांत रोगी स्त्रीको खटियापर लिटा देना, सिरके नीचे उसमेंसे एक हडा खोलकर रख देना. जब उसकी भाफ कम हो जाय तब उसको कमरके नीचे हटा देना और उसकी जगह दूसरा हडा सिरके नीचे रख देना. जब उसकीभी भाफ कम हो जाय तो तीसरा हडा सिरके नीचे रख देना. दूसरा कमरके नीचे और पहला पैरोंके नीचे सरका देना चाहिए जब उसकीभी भाफ कम हो जाय तो उसको क्रम २ से कमर और पैरके नीचे सरका देना. इस तरह तीन दिनतक करनेसे शरीरका सारा रोग पसीना होकर निकल जायगा. (१७) अर्शपर—कडवे नीमके बीजोंको तेलमें तलकर उसीमें पीस डालना, और ऊपरसे नीले थोथे (तूतिये) को पानीमें मिलाकर डाल देना, इस मरहमके लगानेसे अर्शकी गांठ गलकर

गिर जाती है. (१८) सर्पविषका कभी असर न होनेकेलिये कडवे नीमके पत्ते नित्य प्रातःकाल चबानेकी आदत रखना चाहिए, जिससे सांपका विष नहीं चढता. (१९) अर्शपर—कडवे नीमके २१ पत्ते बारीक पीसकर विना छिलकेकी पिसी हुई मुंगकी दालमे मिलाना और गायके घीमें उसकी पूरीसी बनाकर तल लेना. २१ दिनतक उस वांको खानेसे अर्श गलकर गिर जाता है. पथ्य इतनाही रखना जरूरी है, कि समुद्रका नमक न खाना और थोडासा सेंधा नमक खाना चाहिए. (२०) स्त्रीको प्रसव होनेमें रुकावट होती हो तो-कडवे नीमकी जड कमरमें बांध देनी चाहिए. तुरंत बच्चा हो पडेगा. खबर! बच्चा होतेही उस जडको खोल फेंकनी चाहिए. (२१) सोमल (संखिया) के विष और कृमिपर-कडवे नीमके पत्तोंका रस देना. (२२) अफीमके विषपर कडवे नीमके पत्तोंका यन्त्रसे अर्क निकालकर देना. (२३) कुष्ट आदिपर पंचनिंबचूर्ण कडवे नीमकी जड, छाल, फल, पत्ते और फूल पाचों वस्तुका ६० तोला चूर्ण करना. उसमें लोहभस्म, छोटी हरड, पवाडके बीज, त्रिफला, वायविडंग, शक्कर, हलदी, पीपर, काली मिरच, सोंठ, गोखरू, मिलावे, आवंला और बावची तथा अमलतासकी फलीका गूदा ये पंद्रह दवाइयां चार चार तोला मिलाकर सबको बारीक पीस लेना. फिर उसमें भांगरेके रसका एक पुट देना. फिर उसमें खैरकी छालका अष्टमांश काढा करके पुट देना और सुखा लेना. नित्य एक तोला चूर्ण खैरकी छालके काढेमें, घीमें या गायके दूधमें लेना इससे एक महीनेमें कुष्ट दूर होता है. यह चूर्ण सब रोगोंको नष्ट करनेवाला है (२४) पित्तपर कडवे नीमकी लकडी, धनिया, सोंठ और मिश्रीका काढा देना. (२५) योनिशूलपर—कडवे नीमके फल (निंबोली) अथवा अडीका नीमके रसमे पीसकर गोली बनाना. यह गोली योनिमें रखनेसे या उसका लेप करनेसे शूल मिटता है. (२६) कृमिपर—कडवे नीमके पत्ते और हींग मिलाकर खाना चाहिए. (२७) शरीरपर पित्त उठना हो तो कडवे नीमके पत्ते भूनकर घी या आवलेके साथ खाना चाहिये. काली मिरच घीमें पीसकर शरीरपर लगाना

अथवा कडवे नीमकी अंतरछालका काढा पिलाना, इससे शीतपित्त, क्षत, कंडू (खाज), विस्फोट और रक्तपित्तका नाश होता है. (२८) स्थावर और जंगम सब विषोंपर सेंधानमक एक भाग, काली मिरच एक भाग और कडवे नीमके फल दो भाग पीसकर शहद या घीके साथ देना. (२९) सब प्रकारके व्रणोंपर-कडवे नीमके पत्ते, दारूहल्दी, मुलहठी और घी अथवा शहदका मरहम बनाकर लगाते रहना चाहिए. इससे घाव भीतरसे भर जाता है. (३०) प्रदरपर—कडवे नीमकी छालके रसमें जीरा डालकर सात दिनतक लेना. (३१) कांवरपर—कडवे नीमके पत्तोंको पानीमें पीसकर पावभर रस निकालना और उसमें मिश्री मिलाकर गरम करना चाहिए. जब ठंडा हो जाय तब पीलेना चाहिए. (३२) सिकता (वालू) प्रमेह और इक्षु प्रमेहपर—कडवे नीमकी लकडी या अतरछालका काढा देना चाहिए. (३३) कभी कोई रोग न होने देनेकेलिये—कडवे नीमके पत्ते १ तोला, कपूर १ रत्ती और हींग १ रत्तीको पीसकर गोली बनाना और ६ माशे गुडमें मिलाकर नित्य रातको सोनेसे पूर्व लेना चाहिए. गांवमें जबतक हैजा फैला रहे तबतक प्रत्येक मनुष्यको नित्य इसका सेवन करना चाहिए (३४) उलटी, उबकाई, कुष्ट, पित्त और कफसंबंधी अतुपर—कडवे नीमके पत्तोंको पानीमें पीस छानकर कल्क बनाना, और फिर पीना चाहिये. (३५) उष्ण कालमें शरीरका दाह शांत होने, ठंडक होने और जुलाब (दस्त) बंद होनेकेलिये—कडवे नीमके पत्ते पीस छानकर मिश्री मिलाकर पीना चाहिए. (३६) अर्शपर—कडवे नीमके पके हुए फलोंका गूदा तीन माशा लेकर ६ माशे गुडमें मिलाना और ७ दिनतक प्रातःकाल खाना चाहिये. (३७) नहरुआपर—कडवे नीमके पत्ते पीसकर लेप करना. (३८) ऊरूस्तंभपर—कडवे नीमकी जड पिसकर गरम २ लेप लगाना. (३९) प्रमेह, उपदंश, बद, चट्ट आदिपर-कडवे नीमकी पावभर छालको कांच या मट्टीके बरतनमें घरके ऊपरसे खोलता हुआ अदहन जैसा पानी सेरभर डालना और [illegible] क या

गिर पा दो वार नित्य चार चार तोला वह पानी लेना. इससे उपदंशसंबंधी रोग एकही दो सप्ताहमें अच्छे हो जायगे. घी, शाकर और रोटीके सिवाय कुछभी न खाना. (४०) विसहरीपर—कडवे नीमके पत्तोंको नमक डालकर पीसना और घीमें तलकर टिकिया बांधकर लेना चाहिए. (४१) विषमज्वरपर-कडवे नीमके पत्ते ४० तोले, सोंठ, मिरच, पीपर १२ तोले, त्रिफला १२ तोले, तीनों नमक (सेंधा, कच, बिड) १२ तोले, दोनों क्षार (जवखार, सज्जीखार) ८ तोले और अजवाइन २० तोलेका एकत्र चूर्ण करके नित्य शक्त्यनुसार प्रातःकाल देना. (४२) विषमज्वरपर धूप. कडवे नीमके पत्ते, वच, कोष्ट हरीतकी, शिरस (शिंमना), घी और गुग्गुलका धूप विषमज्वरकेलिये अच्छा है. (४३) आगंतुक व्रण, व्रण, फून्सीपर. तेलमें कडवे नीमके पत्ते तलकर उसीमें पीसकर मरहम बना लेना और लगाना. (४४) बिच्छूके डंकपर—कडवे नीमके पत्ते या फूल तमाकूकी तरह पीना. अथवा पत्तोंको चबाकर मुंहमेंसे भाफ न निकलने देना और जिस अंगमें बिच्छूने काटा हो उसके दूसरी ओरके भागके कानमें, फूंक मारना.

९. परवल (कडवा).

नाम—सं.पटोल कटु.-म. कडु पडवळी.

वर्णन—मीठे परवल जैसीही इसकीभी बेल होती है. बरसातके दिनोंमें इसकी बेल प्रायः सर्वत्र उगती है. फल इसके कंदूरी जैसे होते हैं. पत्ते और फल बहुत कडवे होते हैं कामर्में इसका पचांग काम आता है.

गुण—कडवा परवल-कडवा, सारक, उष्ण, तीखा, भेदक, पाचक, अग्निदीपक, और पित्त, कफ, कंडू, कुष्ट, रक्तविकार, ज्वर, दाह, तृषा, कोष्टरोग, तथा कृमिनाशक है. इसका फल—तीखा, कडवा, पाककालमें मीठा, लघु, दीपन, पाचन, वृष्य, मलानुलोमन, और वायु, पित्त, कफको यथास्थान करनेवाला, सारक, और श्वास, ज्वर, त्रिदोष तथा कृमि नाशक है. पत्ते—पित्तनाशक हैं. जड, बेल और तेल कफनाशक है.

खानेमें विष है. नेत्रकेलिये हितकर, हलका, और विष, विस्फोट, कुष्ठ, कृमि, खाज, व्रण, कफ, ज्वर, नेत्ररोगका नाश करनेवाला है. लाल कनेर—शोधक, तीखा, खानेमें कडवा, और लेप करनेसे कुष्टनाश क है. पीलापनलिये सुर्ख रंगका कनेर—मस्तकशूल, कफ और वायुका नाश करनेवाला है.

औषधिप्रयोग—(१) साप, विछु और कुत्तेके विषपर—सफेद कनेरकी घिसकर उसपर लेप करना अथवा जड पीसकर शक्तिके अनुसार पीना या पत्तोंका रस पीना. कदाचित् उसके पीनेसे ग्लानि हो तो घी पिलाना चाहिएँ (२) उपदंशपर—कनेरकी जड घिसकर लेप करनेसे असाध्य पिडाभी मिटती है. (३) विषमज्वरपर—सफेद कनेरकी जड रविवारके दिन कानपर बांधना. सब प्रकारके ज्वरोंपर यह योग चलता है. (४) अर्शपर—कनेरकी जडका लेप करना (५) विसर्पपर—लाल कनेरके फुल और चावल समभाग लेकर रातको ठंडे पानीमें भिगो देना और बरतन खुला छोड देना. सवेरे उसमें फुल और चावलोंको पिसकर लेप करना. (६) शिरोरोगपर—खरबरे पत्थरपर सफेद कनेरकी जड मूली घिसकर दर्दवाले भागपर मलना चाहिए (७) सापके विषपर—सफेद कनेरके मूले फूल और कडी तमाखू समभाग तथा थोडी इलायचीका चूर्ण कपडेसे छानकर तबाकूकी तरह सूंघना चाहिए

१२—कनक.

नाम—म कनक.

वर्णन—यह कद होता है. इसकी बेल अधिक लंबी और विस्तार वाली नहीं होती बेल बारीक और, पत्ते गोल, नोकदार तथा छोटे होवे हैं. आलू जैसे इसमें जमीनमें फल लगते हैं व शकरकंदसे मोटे और उननेही लंबे होते हैं. इसको मराठीमें 'कणगर' 'कणगी' और 'काटेकणग्या' भी कहते हैं. इनको भूनकर या उबालकर खाते हैं. फलाहारमें ये काम आते हैं. वादा व कोनसे यह मीठा, और पौष्टिक होता है.

औषधी प्रयोग—(१) अर्श और रक्तातिसारपर—इसको भूनकर घी शक्करके साथ सवेरे खिलाना

१४. कमल.

नाम–संस्कृत–कमल. म. कमळ.

वर्णन–कमलकी उत्पत्ति तलाव और तलाइयोंमें होती है. विना जलाशयके कमल उत्पन्न होताही नहीं है. इसमें गाठ होती है. गांठमेंसे नाल (डंडी) निकलती है, और नालपर फूल लगता है. नाल बहुत लंबी होती है. उसका भीतरी भाग जालीदार और बिलकुल पीला होता है. पान गोल होते हैं. कमलके कई प्रकार हैं–सफेद, लाल, गुलाबी, नीला, आदि. फूल बहुत सुंदर होता है. उसमें बहुतसी लंबी २ और ऊपर नीचे परवडिया होती हैं. जूदे २ प्रकारके कमलकी प्रकृतीभी छोटी, बडी, आदि जुदी २ ही होती है. किसी प्रकारके कमलमें गंध होता है और किसीमें नहीं होता. कल्हारभी कमलहीकी एक जात है. उसके पान कमल जैसे-ही परंतु कुछ छोटे होते है. इसके फूल कमलसे बिलकुलही जूदे प्रकारके होते हैं. फूल इसका सफेद, सुकुमार और छोटा होता है. सुगंधी इसमें बहुत होती है. इसमें बरसातमे बहुत फूल लगते हैं. कुमुदभी एक प्रकारका कमल होता है इसके पत्ते कमल जैसे परंतु फूल बारीक और सुकुमार होते है. जाडेमें इसमें फूलोंकी भरमार होती है. विशेष करके सफेद कमलको 'पुंडरीक'; लालको 'कोकनद' और निळेको 'इंदीवर' कहते है. सब प्रकारके कमलकी वेलको 'कमलिनी' कहते है. कमलाक्ष नामक कमलकी एक जात होती है. इस प्रकारके कमलकी नाल सफेद और कहीं २ पैरके अगूठे समान मोटी होती है. नालका जितना भाग कीचडमे होता है उसमें स्वाद अधिक रहता है. इस प्रकारके कमलका पत्ता बडा छाता जसा और भोजनमे उपयोगी होता है. फूल इसके लाल होते हैं. इसको 'पोयसर' भी कहते है. इसमें छोटे और चपटे फल लगते हैं. करोंदे-समान उसमें पाच छ छोटे २ बीज लगते है. उनको कमलाक्ष, कमल-काकडी और कमलगट्टा कहते हैं. बीजके भीतरका सफेद मगज (गूदा) खानेमें काम आता है. बनारसमें कमलाक्षके फूले बनाए जाती हैं. उस-को दूधमें डालकर खाते हैं. अथवा इसके आटेमे घी, शक्कर मिलाकर

लड्डू बनाए जाते हैं. कमलगट्टे बहुत पौष्टिक होते हैं. नालके छोटे २ टुकडे करके सुखा दिए जाते हैं. और फिर घी या तेलमें तलकर खाए जाते हैं.

गुण—कमल-ठंडा, स्वादिष्ट, सुगंधित, आतिहर्ता, तापनाशक, वर्णकर्त्ता, तृप्तिकर; और रक्तपित्त, श्रम, कफ, पित्त, तृषा, दाह, विस्फोट, रक्तदोष, विसर्प और विषका नाश करनेवाला है.

औषधिप्रयोग—(१) गुदभ्रंशपर—कमलके कोमल पत्ते शक्करके साथ खाना चाहिए. (२) शरीरमेंसे सब प्रकारकी गरमी हट जानेकेलिये, और धातुपातपर—सफेद कमलकी गांठमें लोआन पावभर लेकर सिरहटाकी अंतरछालका चूर्ण आधा तोला, और गायका दूध मिलाना और ऊपरसे जीरा और मिश्रीको पीसकर मिला देना. आराम होनेतक यह दवा बराबर देते रहना चाहिए. (३) पेशाबमें जलन होनेवाले प्रमेह और ठंडे प्रमेहपर-सफेद कमलकी गांठका चूर्ण आधा तोला, जीरेका चूर्ण तीन रत्ती, शक्कर छ मासे और घी एक तोला मिलाकर सबेरे शाम लेना चाहिए. (४) दाहमें—कमलपत्र और केलके पत्तेपर सोना चाहिए. (५) पित्तज्वर-पर—सफेद कमलकी पाखडीं, मुलहठी और मिश्रीका काढा ठंढा होनेपर देना चाहिए.

१५—छंकोब कपूरी.

नाम—सं. स्तफा. म. कपूरी मधूरी.

वर्णन—इसका पेड हाथभर ऊंचा और पत्ते तुलसीसमान तथा चमकीले सफेद होते हैं. तुलसीकी तरह इसमेंभी तुर्रे आते हैं. यह पेड, पूना और नासिक जिलेमें केलेके बागोंमें बहुत होता है.

गुण—यह तीखी, कडवी, कषैली, स्वादिष्ट, शीतल, वृष्य, सुगंधित और खांसी, तृषा, मेह, कडु, त्रिदोष, कुष्ट, विषदोष, ज्वर, कफ, स्वेद; दाह, रक्तदोष, दुर्गंधि, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र और शूलनाशक है. औषधिप्रयोग—(१) पू प्रमेहपर—इसके पत्तेका अंगरस ७ दिन देना. (२) मधुरा और विषमज्वरपर—इसके पत्तेका क्वाथ देना.

१६. कसुम (कुसुम).

नाम- स. कुसुम म. करडई.

वर्णन- इसका पेड गोट्ट या कमर जितना ऊचा होता है. पत्ते लंबे होते हैं. उसमें बारीक कंगूरे या दाते होते हैं. पीले रंगके फूल होते हैं. उसमें केशरके समान तंतुही होते हैं. फूलके पीछे सुपारीके बराबर नोकदार डोडी (फूल) होती है. उस डोडीमें कसूमके दाने होते हैं. पेड और डोडीपर कांटे होते हैं. कसूम देशमें बहुत पैदा होता है. इसकी दो जात होती हैं. कांटेदार और दूसरी बिनाकांटेकी. बिनाकांटेके कसूमके फूल सुखाकर-कसूम बना लिया जाता है. इसका रंग बनता है. बीजोंका तेल खाने और जलानेमें काम आता है. पेड गायोंको खिलानेमें काम आता है. नरम २ पत्तोंकी भाजी बनाई जाती है. कसूमका तेल बलकर्त्ता और वीर्यवर्द्धक होता है.

गुण- कसूम-वातुल (वायु करनेवाला), रूखा, विदाही, तीखा, और मूत्रकृच्छ्र, कफ और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है. कसूमके फूल-स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, भेदक, रूखे, उष्ण, पित्तकर, केशरंजनकारक, कफनाशक और हलके हैं. भाजी-मधुर, नेत्र (नेत्रोंको हितकर), उष्ण, तीखी, अग्निप्रदीपक, अति रुचिकर, रूखी, भारी, सारक (दस्तावर), पित्तकर, खट्टी, गुदरोगकारक और कफ, मेद, मल और मूत्रका नाश करनेवाली है. तेल-बलकर, खारा, कडवा, विदाही, अचक्षुष्य (नेत्रोंको हानिकर) भारी, उष्ण, मलावष्टंभक, रक्तपित्तकारक, खट्टा, त्रिदोषनाशक और कृमि तथा वायुका नाश करनेवाला है.

१७. करवळ.

नाम स. मध्य म. करवळ.

वर्णन- इसके पेड बडे२ और पत्ते सवा२ हाथ लंबे होते हैं. केवल तीनही पत्ते जोडनेसे बडी पत्तल बन जाती हैं. इससे इसका पत्तल बनानेहीमें उपयोग होता है. कोंकन प्रांतमें यह बहुत होता है.

औषधिप्रयोग-गर्भकी गरमीसे बच्चेके शरीरकी चमडी उड जाती है उसपर- इसकी छालका रस२ तोला, चमेलीके पत्तेका रस २तोला, सफेद कत्था २तोला, शाहजीरा १तोला सेंदूर६मासे, मुलहटीका सत६ मासे और

लड्डू बनाए जाते हैं. कमलगट्टे बहुत पौष्टिक होते है. नालके छोटे २ टुकडे करके सुखा दिए जाते हैं. और फिर घी या तेलमें तलकर खाए जाते हैं.

गुण—कमल-ठंडा, स्वादिष्ट, सुगंधित, भ्रांतिहर्ता, तापनाशक, वर्णकर्त्ता, तृप्तिकर; और रक्तपित्त, श्रम, कफ, पित्त, तृषा, दाह, विस्फोट, रक्तदोष, विसर्प और विषका नाश करनेवाला है.

औषधिप्रयोग—(१) गुदभ्रंशपर—कमलके कोमल पत्ते शक्करके साथ खाना चाहिए. (२) शरीरमेंसे सब प्रकारकी गरमी शांत जानेकेलिये, और धातुपातपर—सफेद कमलकी गांठमें लोआब पावभर लेकर सिरहटाकी अंतरछालका चूर्ण आधा तोला, और गायका दूध मिलाना और ऊपरसे जीरा और मिश्रीको पीसकर मिला देना. आराम होनेतक यह दवा बराबर देते रहना चाहिए. (३) पेशाबमें जलन होनेवाले प्रमेह और ठंडे प्रमेहपर-, सफेद कमलकी गांठका चूर्ण आधा तोला, जीरेका चूर्ण तीन रत्ती, शक्कर छ माशे और घी एक तोला मिलाकर सबेरे शाम लेना चाहिए. (४) दाहमें—कमलपत्र और केलाके पत्तेपर सोना चाहिए. (५) पित्तज्वर-पर—सफेद कमलकी पाखडी, मुलहठी और मिश्रीका काढा थंडा होने-पर देना चाहिए.

१५—लंकोब कपूरी.

नाम—सं. स्थला. म. कपूरी मधुरी

वर्णन—इसका पेड हाथभर ऊंचा और पत्ते तुलसीसमान तथा चमकीले सफेद होते हैं. तुलसीकी तरह इसमेंभी बुंदें आते हैं. यह पेड, पूना और नासिक जिलेमें केलेके बागोंमें बहुत होता है.

गुण—यह तीखी, कडवी, कषैली, स्वादिष्ट, शीतल, वृष्य, सुगंधित और खांसी, तृषा, मेह, कंडु, त्रिदोष, कुष्ट, विषदोष, ज्वर, कफ, रो- दाह, रक्तदोष, दुर्गंधि, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र और शूलनाशक है. औ- धिप्रयोग—(१) पु प्रमेहपर—इसके पत्तेका अंगरस ७ दिन देन (२) मधुरा और विषमज्वरपर—इसके पत्तेका क्वाथ देना.

१६. कसूम (कुसुम).

नाम- स. कुसुंभ. म. करडई.

वर्णन- इसका पेड घोटू या कमर जितना ऊंचा होता है. पत्ते लंबे होते हैं. उसमें बारीक कंगूरे या दाते होते हैं. पीले रंगके फूल होते हैं. उसमें केशरके समान तंतुही होतेहै. फूलके पीछे सुपारीके बराबर नोकदार डोडी (फूल)होती है. उस डोडीमें कसूमके दाने होते हैं. पेड और डोडीपर कांटे होते हैं. कसूम देशमें बहुत पैदा होता है. इसकी दो जात होती हैं. कांटेदार और दूसरी बिनाकांटेकी. बिनाकांटेके कसूमके फूल सुखाकर- कसूम बना लिया जाता है. इसका रंग बनता है. बीजोंका तैल खाने और जलानेमें काम आता है. पेड गायोंको खिलानेमें काम आता है. नरम २ पत्तोंकी भाजी बनाई जाती है. कसूमका तेल बलकर्त्ता और वीर्यवर्द्धक होता है.

गुण- कसूम-वातुल (वायु करनेवाला), रूखा, विदाही, तीखा, और मूत्रकृच्छ्र, कफ और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है. कसूमके फूल-स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, भेदक, रूखे, उष्ण, पित्तकर, केशरंजनकारक, कफनाशक और हलके हैं. भाजी-मधुर, नेत्र (नेत्रोंको हितकर), उष्ण, तीखी, अग्निसंदीपक, अति रुचिकर, रूखी, भारी, सारक(दस्तावर), पित्तकर, खट्टी, गुदरोगकारक और कफ, मेद, मल और मूत्रका नाश करनेवाली है. तेल-बलकर, खारा, कडवा, विदाही, अचक्षुष्य (नेत्रोंको हानिकर) भारी, उष्ण, मलावष्टंभक, रक्तपित्तकारक, खट्टा, त्रिदोषनाशक और कृमि तथा वायुका नाश करनेवाला है.

१७. करंवळ.

नाम-स. मध्प. म- करवळ.

वर्णन- इसके पेड बडेर और पत्ते सवा२ हाथ लंबे होते हैं. केवल तीनही पत्ते जोडनेसे बडी पत्तल बन जाती है. इससे, इसका पत्तल बनानेहीमें उपयोग होता है. कोंकन प्रांतमें यह बहुत होता है.

औषधिप्रयोग-गर्भकी गरमीसे बच्चेके शरीरकी चमडी उड जाती है उसपर- इसकी छालका रस२ तोला, चमेलीके पत्तेका रस २तोला, सफेद कत्था २तोला, शंखजीरा १तोला सेंदूर६माशे, मुलहटीका सत६ माशे और

गायका मक्खन ८ तोलेको मिलाकर पीस लेना और रुईसे फरहरीसे व चेचेके ऊपर लगाना. तीन दिनतक नित्य दो२ बार लगाकर चौथे दिन दूध तथा घी मिलाकर नचेके शरीरपर लगाना और स्नान करा डालना (२) पैर सुन्न जानेपर-इसकी छालके रसमें काली मिरच पीसकर पैरपर लेप करना और उपरसे इसीके पत्ते रखकर कपडा बांध देना. एकही दो बारमें गुण होता है. [३] अतिसारपर-इसकी छाल दहीमें पीसकर देना.

१८. करंजा.

नाम-सं करंज. म करंज हिंदी कंजा, कट करंजा
राजपूताना-कणगच

वर्णन—यह जंगली पेड है ये पेड छायाकेलिये सडकपर लगाए जाते हैं. इसकी छाया बडी ठंडी और प्रिय होती है और सघनभी होती है. इसके बीजोंका तेल जलानेमें काम आता है.

गुण—करंजा—खानेमें तीखा, नेत्र्य (नेत्रोंको हितकर), उष्ण, रसकालमे कडवा, और कसेला होता है उदावर्त, वायुदोष, योनिदोष, वातगुल्म, अर्श, व्रण, खुजली, कफ, विष, विचर्चिका, पित्त, कृमि, त्वचादोष, उदररोग, मेह और प्लीहाका नाश करनेवाला है.

फल—उष्ण, हलका, और मस्तकरोग, वायु, कफ, कृमि, कुष्ट, अर्श और प्रमेहका नाश करता है. तेल—वातनाशक, कृमिनाशक, अति चिकना, जलानेमें ठंडा, कडवा, उष्ण, व्रण भरनेवाला, और नेत्ररोग, विचर्चिका, वायु, कुष्ट, व्रण, खुजली, गुल्म, उदावर्त, योनिदोष, अर्श, और लेप करनेसे अनेक त्वचाके रोगोंको नष्ट करनेवाला है.

औषधिप्रयोग-(१) चूहे आदिके विषपर—छाल और बीजका लेप करना. (२) खुजलीपर—करंजाका तेल और कपूर अथवा नीबूका रस मिलाकर लगाना (३) अंडवृद्धि और कंठमालपर—चावलोंको धोए हुए पानीमें करंजाकी जड घिसकर लेप करना (४) झनझनाहट और सनसनाहटपर—करंजाके तेलमें कडवे सूरण (जमींकंद) की गांठ डालकर पकाना और वह तेल लगाना [illegible]

लिये—करंजाकी छाल या छालका रस देना. (६) व्रणसंबंधी कृमि दूर करनेकेलिये.—करंजा, नीम और निर्गुंडीके पानोंका लेप करना. (७) आंखकी फूली, धुंद, मांसवृद्धि आदिपर—करंजाके बीजोंके चूर्ण डालके पुष्पोंके रसका कई बार पुट लगाना और फिर उसको बारीक पीसकर बत्ती जैसी लंबी गोली बना लेना. इस गोलीको पानीमें घिस कर अंजन लगानेसे आंखके सब रोग ऐसे साफ होते हैं, मानो शस्त्रसे काटकर साफ किए गए हों. (८) आधाशीशीपर—करंजाके बीजको गरम पानीमें घिसना और फिर थोडा गुड डालकर गरमकर लेना चाहिए इसकी नास लेनेसे दर्द दूर होगा. (९) गंजेसिरपर—रीठा (अरीठा) के पत्तोंसे सिरको धोना और करंजाका तेल, नींबूका रस, और कडवे कैथके बीजका तेल मिलाकर लगाना. (१०) ऊरुस्तंभपर—करंजकी जड़ या छालको घिसकर गरम २ लेप करना. (११) उबकाईपर करंजाके बीजोंको कुछ भूनकर टुकडेकर रखना और बारंबार खाना चाहिए.

१९. ककोडा.

नाम—सं. कर्कोटी, कर्कोटकी. गु. कंटोलो. म. करटोल.

वर्णन—ककोडाकी बेल बरसातमें जंगलोंमें उगती है. इसकी बेल झाड या बाडके सहारे फैलती है, और पाच २ दस २ हाथ लंबी होती है. जमीनमें इसकी गांठ रहती है. बरसात होतेही उसमेंसे अंकुर निकलता है. और बेल चल निकलती है. आषाढहीके महीनेमें फल लगने लगते हैं. फलोंका रंग हरा और ऊपर कांटे होते हैं. इसकी तरकारी स्वादिष्ट और पथ्यकर है. जिस बेलमें केवल फूल लगते हैं, फल नहीं लगते, उसको ' बांझककोडा ' कहते हैं. इसकी बेल प्रायः पहाडी भूमिमें होती है.

गुण—ककोडा रुचिकर, तीखा, अग्निदीपक, कडवा, उष्ण; और वायु, कफ, विष और पित्तका नाश करनेवाला है. फल—मीठे, हलके, पाककालमें तीखे, अग्निदीपक, और गुल्म, शूल, पित्त, त्रिदोष, कफ,

पके काटनेपर कडवे करोंदेकी जड पानीमें घिसकर पिलाना चाहिए. (५) विषमज्वरपर—कडवे करोंदेकी जड पानीमें घिसकर शरीरपर लेप करना. (६)विसर्पपर—कडवे करोंदेकी जड गोमूत्रमें घिसकर पिलाना चाहिए.

२२. तरबूज.

नाम-स. कालिंगी. म कलिंगड. गु. तरबूज

वर्णन—इसकी खरबूजेसमान बेल होती है. इसकी दो जात हैं, एक काली और गोल तथा दूसरी सफेद और लंबी. सफेद जातका तरबू बडा और मीठा अधिक होता है. इसके पत्तेमें पांच नोकें और प्रत्येक नोकके पीछे १॥ अंगुल लांबा गढासा होता है. तरबूज, पेठा जैसा औ ठंडा होता है. कच्चे तरबूजका साग बनता है मारवाड, मथुरा औ द्वारिकामें तरबूज अच्छा होता है.

गुण—तरबूज-ठंडा, मीठा, बलकर, तृप्तिकर, गुरु, पुष्टिकर, मलस्तंभक, कफकर्त्ता; और दृष्टि, पित्त और शुक्रनाशक है. पकनेपर वह खारा और उष्ण होता है. और वायु तथा कफनाशक है. पत्ते—कडवे और रक्तवृद्धिकर होते हैं.

औषधिप्रयोग—(१) पुष्टिकेलिये—तरबूजके बीजकी मींगी आधा तोला और उतनीही मिश्री मिलाकर खाना. (२) दाहपर—तरबूज खाना. (३) मूत्रकृच्छ्रपर—तरबूजके गूदेका पानी पावसेर, जीरा और मिश्री मिलाकर पीना. (४) इंद्रीके चट्टेपर—तरबूजका एक चौकोना टुकडा काटकर पावभर शक्कर भरना और पीछा वह टुकडा चढाकर रातको ओसमें रख देना. सबेरे उसका पानी पिलाना. इससे इंद्रीके चट्टे, फुनसी और मूत्रसमयकी जलन दूर होती है.

२३. कलौंजी.

नाम—सं. उपकुंचिका, गु कलौंजी जीरुं. म. कलौंजी.

वर्णन—कलौंजी काली जीरेकेसमान होती है. इसभी वैसाही होता है. उत्तर भारतमें इसकी उत्पत्ति अधिक होती है. इसका पेड बागोंमें लगानेसे लगता है.

गुण—कलौंजी—कडवी, तीखी, उष्ण, अग्निदीपक, वृष्य (शुक्रवर्धक), अजीर्णनाशक, गर्भाशयको शुद्ध करनेवाली; और आध्मान, वायु, गुल्म, रक्तपित्त, कृमि, पित्त, आमदोष, वायु और शूलका नाश करनेवाली होती है.

औषधिप्रयोग—(१) अजीर्ण, अग्निमंद, आम और शूलपर—कलौंजीके काढेमें काला नमक डालकर पिलाना.

२४. कास.

नाम-स. काश. गु. कांसडो. म. कपई. कसाड. कालेगवत.

वर्णन—कास घास जैसा होता है और बासहीकी तरह इसमेंभी एकमेसे अनेक शाखें निकलती हैं. यह टट्टी और छप्पर बननेमें काम आता है. इसके बीज आकारमें कसूमबीज जैसे और सफेत तथा कडे होते है.

गुण—कास-तर्पण, गौल्य, ठंडा, रुचिकर, बलकर, मीठा, कडवा, पकनेपर मीठा, दस्तावर, चिकना; और पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, पथरी, रक्तदोष, रक्तपित्त, क्षतक्षय और पित्तका नाश करनेवाला है. औषधिप्रयोग—(१) मूत्रकृच्छ्र और पथरीपर—कासकी जडका काढा शहद मिलाकर देना.

२५. कैथ.

नाम.-स. कपित्थ गु. कोंठ म कवठ.

वर्णन—कैथका पेड दक्षिण देश और गुजरात प्रांतमें बहुत होताहै. वृक्ष बडा होता है. फलकोंभी कैथही कहते हैं. फल गोल और आम जैसे होते हैं. उसका छिलका कडा होताहै. पका फल ऐसेही अथवा गुड या शक्कर डालकर खाया जाता है और मुरब्बाभी बनताहै. कच्चे फलका गूदा, दालके बघारकेलिये और चटनी बनानेमें काम आता है. उसकी चटनीभी बनती है

गुण—कैथका वृक्ष—मीठा, खट्टा, कसेला, ग्राहक, ठंडा, वृष्य (धातुवर्धक), कडवा, और पित्त, वायु तथा व्रणका नाश करनेवाला है. कच्चे फल—ग्राही, उष्ण, रूखे, हलके, खट्टे, कसेले, लेखन और वायु, पित्त तथा जिव्हाजाड्य (जीभका मोटापन) करनेवाले, रुचिकर, तथा

विष, स्वर और कफका नाश करनेवाले होतेहैं. पके फल रुचिकर, ख
कसैले, ग्राहक, मीठे, कंठशुद्धि करनेवाले, ठंडे, भारी, वृष्य (धातुवर्धक
और दुर्जर (कठिनतासे पचनेवाले) होते हैं. तथा श्वास, क्षय, रक्तदो
वाति, वायु, श्रम, हिध्मा, विष, ग्लानि, तृषा, त्रिदोष, हिचक
और खांसीका नाश करनेवाले हैं. बीज–हृद्रोग, मस्तकशूल, वि
और विसर्पका नाश करते हैं. बीजका तेल–कसैला
ग्राहक और मीठा तथा पित्त, चूहेका विष, कफ, हिचकी, वातिका नाश
करता है. फल, विषनाशक और पत्ते वाति, अतिसार और हिचकीका
नाश करनेवाले होते हैं

औषधिप्रयोग–(१) पित्त शमन होनेकेलिये-कैथका गूदा, शक्कर मिलाकर
लेना. अथवा पत्तोंका रस दूधमें मिलाकर लेनेसे कैसाही प्रबल पित्त
क्यो नहीं? शमन होही जाता है (२) कावर(पीलिया)पर-इसके पत्तोका रस
और दूध मिलाकर पाच तोले गरम करके लेना (३) प्रदरपर कै-
थ और बासके समभाग पत्तोंको पीसकर उसका कल्प शहदके साथ लेना
(४) शरीरमेंसे गरमी निकालने और धातुपुष्ट करनेकेलिये–कैथके
पत्तोंका चूर्ण दूध और मिश्रीके साथ लेना. (५) चूहेके विषपर–कैथके
बीजका तेल लगाना. (६) शरीरपर पित्तकी गाठ उठी हो तो–कैथके
पत्तोंको पीसकर रस लगाना. अथवा पीसे हुए पत्तोंको दहीमें मिलाकर
लगाना. अथवा पत्तोंके रसमे मिश्री मिलाकर पिलाना इससे घंटेभरके
भीतर दर्द मिटता है. (७) शरीरसे फूट निकला हुआ रसायन निकालनेके
लिये–कैथके पत्ते, चौराईकी भाजी, और केलेके फूलके तंतू जो टूट २
कर गिर जाया करते हैं बराबर लेकर अष्टमाश काढा करना और १४
दिनतक दो बार नित्य लेना दोनों बार दवा ताजी लेनी चाहिए तेल,
खटाई, मीठा, तीखा पदार्थ न खाना और स्नान न करना पंद्रहवेंदिन ब-
करीकी लेंडी (विष्टा) गायके मूत्रमें पीसकर सारे शरीरमें लेप करना
और चार घडी पीछे स्नान करना. (८) हिचकी और श्वासपर–
कैथका भगरस, पीपर और शहद मिलाकर लेना. (९) अम्लपित्त

(अरुचि) पर–कैथके गूदेमें सोंठ, मिरच, पीपर, शहद और शक्कर मिलाकर रुचिकर बनाकर गोली मुंहमें रखना.

२६. बडी इंद्रायण.

नाम–सं. चित्रा. म. कवडळ.

वर्णन–इसकी बेलमें फल लगते हैं. फल पहले हरा और पकनेपर अच्छा लाल होता है. शोभाकेलिये फल लटका दिये जाते हैं. फल बहुत कडवे और इंद्रायण सदृश गुणवाले होते हैं.

औषधिप्रयोग– (१) कंठसर्प आदि कंठके रोगोंपर–इसकी छाल चिलममें रखकर २ दिन पीना. (२) कफ पतला करनेकेलिये–छाल चिलममें रखकर पीनेसे वमन होकर गला साफ हो जाता है. (३) अंढीटके ऊपर–इसकी और कडवीवृंदावनकी जडका पानीमें पीसकर बारंबार लेप करना. (४) प्रमेहपर–बडी इंद्रायण, त्रिफला और हलदीका काढा और निकाढा (परकाढा) शहद मिलाकर देना. (५) अंडवृद्धिपर–छोटी इंद्रायणकी जडका चूर्ण अंडी (एरंडी) के तेलमें पीसकर दिनभरमें २।३ बार लगाना. और वही चूर्ण दो माशाभार सबेरे-संध्या गायके दूधमें पीना. तीनही दिनमें गुण होता है. (६) स्तनरोगपर–उसकी जडका लेप करना. (७) खुजलीपर–सूखी हुई बडी इंद्रायणको जलाना और काली राख करके तिलके तेलमें लगाना.

२७. कवला.

नाम.–सं. कलाय. म. कवला.

वर्णन–कोंकनमें इसकी भाजी प्रसिद्ध है. इसका पेड जंगलोंमें अपने आप उगता है. उचाई इसकी लगभग एक बालिश्त होती है. श्रावणके सोमवारके दिन कितनेही आदमी इसकी भाजी अवश्य खाते हैं. प्याज डालकर बनानेसे इसकी भाजी बहुत बढिया बनती है.

गुण–इसकी भाजी भेदक, उष्ण, कडवी और त्रिदोषहर्ता होती है.

२८. कदंब.

नाम. स. कदंब. म. कळंब गु. कदंब.

वर्णन–कदंबका पेड बडा और सर्वत्र प्रसिद्ध है. इस पेडमें गोंदभी लगता है.

गुण–कदंब तीखा, कडवा, कसेला, खारा, शुक्रवर्द्धक, शीतल, भारी, विष्टंभकारक, रूखा, स्तन्यप्रद (दूध पैदा करनेवाला), ग्राहक, वर्णकर और रक्तरोग पित्त, कफ, व्रण, दाह, विष, मूत्रकृच्छ्र, और वायुका नाश करनेवाला है.

औषधिप्रयोग (१) छोटे बच्चोंकी तालू बिगडनी है, इस रोगकी पहचान यह है कि बच्चेको ज्वर आता है. कानकी जड और नाक नरम और ढीला (लवल्या) हो जाता है, मलद्वारसे-वारवार पानी पडता है, तृषा बहुत लगती है तालु उठता है. इस रोगमें कदंबकी छालका थोडा ठंडा पानी डालकर रस निकालना और मिश्री तथा जीरा मिलाकार देना. यही रस भेजेपर ५।६ बार मलना. तीन दिनतक इस तरह करके चौथे दिन बच्चेको स्नान कराना और भेजेकाले जीरेका तेल लगाना. कदंबकी छाल पानीमें घिसकरे उससे स्नानभी कराना. (२) आंख उठने (दुःखने) पर कदंबकी छालके रसमें अफीम और फिटकरी डालकर नीबूके रसमें घोटना और नरम करके आखपर लगाना. (३) मुखरोगपर कदंबकी छालके काढेसे कुल्ली करना.

२९. करिहारी.

नाम–सं. कलिकारी. म. कळलावी. गु. कळगारी.

वर्णन–करिहारीका पेड पहले मोटे घासकी तरह होता है और फिर बेलकी तरह फैलता है. पान इसके अदरखके पान जैसे होते हैं. पेड इसका प्रायः बाड या झाडीके सहारेसे लगता है. पुराने पेडकी मोटाई केलेके वृक्ष जैसी होती है. गरमीमें पेड सूख जाता है. फूलकी पखडी, लंबी और फूल गुडहरके फूल समान होता है. फूलोंका रंग लाल, पीला, गेरुआ और सफेद होता है. फूलोंसे वृक्ष बडा सुंदर दीखता है. इसकी गाठ विषैली होती है. मराठीमें इसको 'खड्या नाग' और 'वागचपका' तथा कोंकन प्रान्तमें 'कडई' और 'कळची' भी कहते हैं.

गुण–दस्तपर कडवा, तीखा, खारा, पित्तकर, तेज, गरम, कसेला और हलका तथा कफ, वायु, कृमि, पातिशूल, विष, कुष्ट, अर्श, खु-

जळी, व्रण, सूजन, शोप, शूल, शुष्कगर्भ और गर्भका नाश करनेवाला.

औषधिप्रयोग-(१) कक्षापिटिका और नहरूपर-करिहारीकी गाठका लेप करना. नहरू दीखतेही यह उपाय करना. (२) अपची (कंठमालका एक प्रकार) पर-इसकी गांठका कल्क करके उसमें चौगुना तेल और उतनाही निर्गुंडीका रस मिलाकर सिद्ध करना और उसकी नास लेना तथा लेप करना (३) व्रण, कंठमाल, अदी और बदपर-इसकी गाठका लेप करना. (४) सूजन, गाठ आदिपर इसकी गांठ पीसकर लगाना. (५) सुखसे प्रसव होनेकेलिये-इसकी गाठ पानीमे पीसकर अपने हाथपर लेप करना और जिस स्त्रीको प्रसव होनेमें कष्ट होता हो उसके हाथसे अपना हाथ स्पर्श करना अथवा गाठ में धागा पिरोकर हाथ पैरमें बांधना. (६) गायोका अंग बाहर निकलता है उसपर-करिहारीका रस हाथोंमें लगाकर दोनों हाथ गायके उस अंगके पास ले जाना. यदि इतनेपरभी अंग भीतर न जावे तो दोनों हाथ उस अंगपर लगा देने चाहिए फिर दोनो हाथ मुंहके पास लाकर दिखलाने चाहिए जिससे अंग भीतरका भीतरही रहेगा. बाहर नहीं निकलैगा (७) कावर (पीलिया) पर-इसके पत्तोंका चूर्ण छाछमें देना. (८) योनिशूल और पुष्पावरोधपर-करिहारि, औंगा (आधीझाडा) अथवा कड़वेवृदावनकी जड योनिमें रखनी (९) कानके कीड़ोंपर-करिहारिकी गाठका रस कानमें डालना. (१०) सर्पदंशपर-करिहारिकी गाठको पानीमें पीसकर नास लेना. (११) इसबरोगपर कड़वी और करिहारिकी गाठ घिसकर ४।५ दिन लगाना.

३० सीतलचीनी.

नाम स ककोल म ककोळ

वर्णन-इसको कपुरचिनी और कबाबचीनीभी कहते है. इसकी बेल हिमालय पर्वत और चीन देशमें होती है कबाब चीनी अर्थात् इसका फल काली मिरचके बराबर; सुगंधित और बहुत ठंडा होता है सुगंधि और दवामें इसका बड़ा उपयोग होता है.

गुण—कबाबचिनी तीखी, कडवी, गरम, दीपन, पाचन, रोचककर, हृद्य (हृदयको हितकर), सुगंधित, लघु, कफनाशक और मुखजाड्य (मुंहका मोटापन), वातरोग, हृदयके रोग, कृमि, अधापन, मुखकी दुर्गंधि, आम तथा, अग्निमांद्य नाशकहै.

औषधीप्रयोग—(१) मुखरोगपर—कबाबचिनी और मिश्री डाढके नीचे रखकर रस उतारना. (२) प्रमेहपर—इसका चूर्ण शक्कर मिलाकर खाना. (३) रक्तष्ठीवी सन्निपातपर अर्थात् जिसमें रक्तकी उलटी होती है उस सान्निपातपर—इसके चूर्णका नास लेना. (४) प्रमेह और आगंतुक ज्वरपर—कबाबचीनीको साधारण कूटकर अष्टमांश क्वाथ करना और उत्तम चंदनका तेल ६ से १२ बुंदतक डालकर ठंडा करके पीना. यह क्वाथ प्रात काल, मध्यान्हमें भोजन पीछे और सायंकाल ५ दिन लेना. मध्यमें गेहूंका फुलका और घी शक्कर खाना. इससे पेशाब साफ आता है और चंदनका तेल भीतरी घावोंको मिटा देता है. (५) संग्रहणीपर—सीतलचीनी १ तोला, बडी इलायची १ तोला और सोनागेरू १ तोला, कोकपासके पत्तेके रसमें पीसकर बोरके बराबर गोली बनाना और दिनमें दो बार लेना. (६) मुखमाधुर्यपर—कबाबचीनी, कापूर और काली मिरचको कुछ चबाकर डाढके नीचे रखना और पीक थुंकते जाना. (७) मूत्रकृच्छ्रपर—कबाबचीनीका क्वाथ पांच बुंदतक चंदनका तेल डालकर पीना.

३१. कांकड.

नाम—स कर्कटक म. कांकड.

वर्णन—इसका वृक्ष बडा होता है.पत्ते साधारण बडे और लंबे होते हैं फल आंवले जितना बडा होता है परन्तु उतनी बडी गुठली (ठलिया) नहीं निकलती. केवल दो तीन छोटे २ बीज निकलते हैं. फल जेठमासमें आते हैं. वे रुचिकर और पित्तशामक होते हैं. अचार इनका अच्छा बनता है परन्तु पुराने हो जानेसे फल कामके नहीं रहते.

गुण—छोटे कांकडके फल—कसेले, अग्निदीपक, भारी, ठंडे, हलके, गरम, आंखोंके लिये हितकर और रक्तपित्त तथा कफकर्ता और वात

नाशक है. पक जानेपर वेही ठंडे, रुचिकर, जड और पित्त, रक्तदोष तथा कफका नाश करनेवाले हो जाते हैं. छोटे कांकडके फल-ग्राहक, खट्टे, पित्तकर, अग्निदीपक, गरम और हलके होते हैं. पकनेपर वे मीठे, चिकने, कसैले, वातनाशक और कफ तथा पित्तकर होते हैं.

औपधिप्रयोग-(१) व्रणपर-वृक्षकी छाल पीसकर लगाना.(२) आंखकी फूली गिरानेकेलिये-वृक्षका हाथभर लंबा टुकडा तोडकर उसको मुंहमें रखकर फूंक मारना और जो रस निकले उसको तीन दिनतक आंखमें आंजना. (३) प्रमेहपर-पत्तोंका रस, जीरा और मिश्री मिलाकर खाना.

३२. ककडी.

नाम-सं. कर्कटी. म. कांकडी.

वर्णन-इसकी बेल होती है. वाळ, खीरा, ककडी आदि एकही प्रकारका फल है, केवल थोडा अन्तर है. इसका साग और चटनी होता है. ककडी छीलकर लंबे टुकडे करना और मिरच तथा नमक लगाकर रख देना. थोडी देरमें जब उसका पानी टपक जाय तब खाना. यह बहुत अच्छी लगती है. ककडी ठंडी होती है. अधिक खानेसे हानि पहुंचती है.ककडीमें एक बडा गुण यह है कि यदि उसका पानी भीगे हुए (माडे हुए) आटेमें डाल दिया जाय तो उसका चिकनापन जाता रहता है.

गुण-ककडी-मीठी, ठंडी, रुचिकर, हलकी, मूत्रल (मूत्र लानेवाली), छिलकेके पास तीखी, कडवी, पाचक, अग्निदीपक, अतृप्य, ग्राहिणी और मूत्ररोध, अश्मरी (पथरी), मूत्रकृच्छ्, उल्टी, दाह, श्रमको नाश करनेवाली है. पकनेपर वह रक्तदोपकर, गरम और बलकर होती है

औपधिप्रयोग-(१) मूत्राघातपर-एक तोला बीज पावभर पानीमें डालकर देना अथवा बीज, जीरा और शक्कर पानीमें डालकर देना.(२) गुडघी और जावके सूजनपर-ककडी गरम करके बांधना या ककडीके मेंठे२ छिलके बांधना. दो तीन दिनतक ऐसा करना.(३)शराबका नशा उतारनेके-

लिये—ककडी खाना. (४) अश्मरीपर—ककडीके बीजू और काले कबूतरकी विष्टा चांवलोंके धोवनमें पीसकर देनी. (५) गलगंडके ऊपर—पुराने ककडीके रसमें सैंधा और बिड नमक मिलाकर नास लेना. (६) सफेद प्रदरपर—ककडीके बीजोंकी मींगी एक तोला और सफेद कमलकी पखडी एक तोलाको पीसकर जीरा और मिश्री मिलाकर ७ दिनतक देना. (७) मूत्रकृच्छ्रपर—ककडी चीरकर उसमें नीबूका रस और मिश्री डालकर खाना. (८) मूत्रकृच्छ्रपर—ककडीके बीजोंकी मींगी, दारुहल्दी और मुलहठीका चूर्ण चांवलोंके धोवनके साथ देना. (९) मूत्र जुलाब—आधसेर दूधमें पानी मिलाकर ककडीके बीज पाव तोला और शोरा डेढ मासा डालकर खडे२एकसाथ पी जाना और इधर उधर फिरते रहना. इससे मूत्राशयकी गरमी झड़ जायगी और प्रमेह आदि विकार दूर होंगे. (१०) मूत्रकृच्छ्रपर—ककडीके बीज, गुलाबके फूल और सफेद कमलकी पखडीको पीस छान शक्कर मिलाकर पी जाना. (११) शीतज्वरपर—ककडी खाकर ऊपरसे खट्टी छाछ पीना और सेंक करना अथवा बिछौना बिछाकर धूपमें बैठना. इससे सारे शरीरमें पसीना आवेगा और शीतज्वर भाग जायगा.

३३. काकडाशिंगी.

नाम—सं. कर्कटशृंगी. गु. काकडाशिंगी म. काकडाशिंगी.

वर्णन—इसके वृक्ष हिमालयपर्वतपर होते हैं. इस वृक्षकी शाखाओंपर रस जम जाता है. उसीकी सूरत आगे जाकर गांठसी हो जाती है. उसको काकडाशिंगी कहते हैं.

गुण—काकडाशिंगी कडवी, गरम, कसेली, जड और वायु, हिचकी और अतिसारका नाश करनेवाली है. वह बालकके लिये हितकर है; और दमा, खांसी, रक्तदोष, पित्त, ज्वर, कफ, क्षय, वायु, हिध्मा, ऊर्ध्ववात, कृमि, तृष्णा, क्षतक्षय और अरुचिका नाश करनेवाली है.

औषधिप्रयोग—(१) शृंग्यादि चूर्ण—बालकोंकी खांसी, ज्वर और वांतिपर—काकडाशिंगी, नागरमोथा और अतीसका चूर्ण शहदमें मिला-

कर देना. (२) बालकोंकी खासीपर—काकडाशिंगी और मूलीके बीजका चूर्ण शहद और घीके साथ देना. (३) अतिसारपर—काकडाशिंगीका माशा या डेढ माशा चूर्ण शहतके साथ देना.

३४—कंगनी (कागनी).

नाम-स॰ कगु॰ म॰ काग॰ (अन्न).

वर्णन—यह धानकी जातकाही अन्न होता है परंतु उसमें और इसमें बहुत अंतर है. धानका छिलका पतला और पीले रंगका होता है परंतु कंगनीका छिलका मोटा और लाल, पीला और काला होता है. इसका भात आदिमी बनता है यदि फूलें या, आटा बनाना हो तो इसको छिलके सहितही भून लेना चाहिए. कगनीका पेड दो ढाई हाथ ऊचा होता है. इसपर जो भुट्टी लगती है वह बाजरेकी भुट्टी जैसी पतली और लबी होती है. धानमें और इसमे यही एक बडा अंतर है. पत्ते इसके कम चोडे होते हैं

गुण—कंगनी—ठंडी, वातकर्त्ता, रूखी, वृष्य (धातुवर्धक), कसेली, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ट, भारी, घोडेकेलिये हितकर और कफ तथा पित्तका नाश करनेवाली है. यह चार प्रकारकी होती है. (१) काली, (२) लाल, (३) पीली और (४) अच्छ तथा गुणमेंभी एकसे एक अधिक है.

औषधिप्रयोग— (१) अन्नद्रवशूलपर—कंगनीके चावलकी खीर खानी.

३५ — मकोय.

नाम– सं॰ काकांगी म कागोणी (कामोणी).

वर्णन — इसको चिरपीटनभी कहते हैं. इसका पेड बरसातमें उगता है और लगभग दो हाथ ऊंचा बढाता है.इसमें लाल रंगके चिरम बराबर फल लगते हैं जिनको बचे बडे शोकसे खाते हैं. इसके रससे कागजपर लिखा जाय तो मब्ज (हरी) स्याहीकेसे अक्षर मालूम होते हैं.

औषधिप्रयोग—(१) नलगुदपर — इसके पत्तेका रस लगानेसे सूजन मिट जाती है. (२) पित्तपर — इसके पत्तोंकी भाजी बनाकर

लाना. (३) अफीमपर—पत्तेका रस पिलाना. (४) कानमें की आदि घुस गया हो तो— पत्तेका रस टपकाना.

३६— काकजंघा.

नाम – सं. काकजंघा. म. कांग.

वर्णन—इसके पान ओंगा जैसे और पेडभी उतनाही ऊंचा अथ कमरतक होता है. पत्ते बहुत मीठे होते हैं. इसको कोंकनमें 'घावकाडी भी कहते हैं.

गुण—काकजंघा—कसेला, तीखा, गरम. कडवा, बलकर और कप व्रण, कृमि, बाधरता, विषमज्वर, अजीर्ण, रक्तपित्त, ज्वर, खुजली, कुष्ट विष और पित्तका नाश करनेवाला है.

औषधिप्रयोग— (१) व्रणपर—इसके पत्तोंको जलाकर घी य तेलमें पीसकर लगाना. (२) कानके कीडोंपर— इसका रस डालना (३) घोडेके मदूदेकपर घिसके जखम होती है उसपर—इसके पत्तोंको जलाकर तेलमें पीसकर पट्टी बांधना. (४) कर्णनाद और बहरेपनपर— इसका रस कानमें डालना (५)दाद, खुजली, दद्रुकेलिये—इसके पेडकी राख तेलमें मिलाकर लगाना. (६) निद्रा लानेकेलिये — इसकी जड सिर-पर रखना. (७) श्वेतप्रदरपर— इसकी जडका रस, लोधका चूर्ण और शहद मिलाकर देना.

३७—कचनार.

नाम--स. कांचनार. गु. कंचनार म कांचन.

वर्णन—इसका वृक्ष बहुत बडा होता है. वह सिरहटा (असिमिलों-रा) से बहुत कुछ मिलता हुआ होता है. पान इसके सिरहटा जैसेही होते हैं परंतु उनसे अधिक बडे और पतले होते हैं. सफेद, पीला और लाल रंगसे इसकी तीन जाते हैं. फूलमें साधारण सुगंध होती है. चिका-काई जैसी चमटी फली लगती है. लकडीका रंग लाल होता है और वह रंगके काममें आती है. लकडी इसकी बहुत चिमडी होती है इससे इ छडिया बनाई जाती हैं.

गुण—लाल कचनार-ठंडा, दस्तावर, अग्निदीपक, कसेला, ग्राहक और कफ, पित्त, व्रण, कृमि, कठमाल, रक्तपित्त, कुष्ट, वायु और गुद भ्रंशका नाश करनेवाला है. इसका फूल ठंडा, रूखा, कसेला, ग्राहक, मीठा, हलका और पित्तक्षय, प्रदर, खांसी और रक्तविकारका नाश करनेवाला है. सफेद कचनार-ग्राहक, कसेला, मीठा, रुचिकर, रूखा और खांसी, दमा, पित्त, रक्तविकार, क्षत और प्रदरका नाश करनेवाला है. पीला कचनार-ग्राहक, दीपन, व्रण, रोपण, कसेला और मूत्रकृच्छ्र, कफ तथा वायुनाशक है.

औषधिप्रयोग— (१) कंठमालपर—कचनारकी छाल चांवलोंके धोवनमें घिसकर २ से ४ तोलेतक पिलाना. अथवा छालके काढेमे सोंठका चूर्ण मिलाकर ४२ दिन देना. (२) कफसे होनेवाले नहरुएपर—कचनारकी छालका कल्क करके लेप करना. (३) दाहपर—कचनारकी छालका रस जीरा और कपूर डालकर देना. (४) कंठमाल फूटनेकेलिये—कचनारकी जड और चित्रकको अडूसेके रसमें पीसकर ७ दिन लेप करना. इससे किसीभी दोषसे होनेवाली कठमाल फूट जायगी. यह लेप फोडोंपरभी करना.

३८—कांजळ.

नाम—म कांजळ

वर्णन—यह पेढ खाडी और नदीनालोंके किनारेपर होता है और प्रायः इफळी जैसा होता है परंतु उतना चिमडा और मजबूत नहीं होता. यह केवळ जलानेके काममें आता है. इसमें मोरसली जैसा छोटा और सुगंधित फूल लगता है.

३९—काजू.

नाम—स. काजूतक आम्रिकृत, म. काजू.

वर्णन—इसका वृक्ष आम्रिका और भारतवर्षमें होता है. मलबार, गोमांतक और कर्नाटकमें इसकी अधिक उत्पत्ति है. ऊंचाई इसकी साधारण है. विशेषकर यह पेढ जंगल और पहाडमें होता है. इसकी छाल

और सफेद दो जात हैं. मुसाफिरोंको इस पेडसे दुगना लाभ होता है अर्थात् छाया मिलती है और वहींपर फल खानेको मिल जाते हैं. काजूका फल नरम होता है. उसके आगे बीज होता है. उसके छालकडी होती है. उसके भीतर भिलावां जैसा रस होता है. वे लग जानेसे शरीर सूज जाता है. छालके भीतर जो गोला होता है उसको 'काजूगोला' कहते हैं. वह गोला स्वादिष्ट होता है, परंतु अधिक खानेसे हानि करता है. जहां काजू नहीं पैदा होता वहां वह गोला बिकने जाता है. काजूके पके हुए फल खानेमें काम आते हैं. सूखे बीजोंको चाशनीमें डालकर हलवाई लोग मिठाई बनाते हैं. काजूके बीजका रस तलवारोंपर लगानेसे पानी असर नहीं कर सकता. पक्का फल इसका नलविकारको नाश कर देता है.

गुण—कसेला, मीठा, गरम, हलका, धातुवर्धक और वायु, कफ गुल्म (गोला), उदररोग, ज्वर, कृमि, व्रण, अग्निमांद्य, कुष्ट, श्वेतकुष्ट संग्रहणी, अर्श और आनाहका नाश करनेवाला है.

औषधिप्रयोग—(१) पैरोंमें होनेवाला सडनपर—काजूके बीजका लेप लगाना. (२) गायोंको एक प्रकारका रोग होता है जिससे पैर फूल जाते हैं और चला नहीं जाता उसपर—यही लेप लगाना. (३) मणियारी नाक—सर्पके विषपर—काजूकी छालका रस शक्तिके अनुसार पावसेरसे लेकर आधे सेरतक पिलाना और ऊपरसे दूर्वा (दोम) का रस पिलाना. इससे विष उतर जायगा. अधिक व्याकुलता होती हो तो वही रस भेजेपर डालना और जाबडा खोलकर पेटमें दवा पहुंचाना. (४) बद शीघ्र फोडनेकेलिये—काजूका कच्चा गूदा और निवराके फल ठंडे पानीमें घिसकर लेप करना. (५) नलविकारपर—नित्य प्रातःकाल काजूका ताजा पक्का फल बोंटके पाससे काटकर काली मिरच और नमक लगाकर तीन चार दिनतक खाना.

४०—कांडवेल.

नाम—सं. कांडवल्ली. म. कांडवेल.

वर्णन—कांडवेल कांटेदार तुमरके समान होती है परंतु उसमें बारीक बहुत होती है. इसकी बेल होती है. इसके छोटे २ पत्ते होते हैं.

त्रिधारी काडवेल और चौधारी काडवेलके नामसे इसकी दो जात होती हैं इसका बडा विस्तार फैलता है. त्रिधारी काडवेलको 'हडजोड' कहते हैं उसका वर्णन 'हडजोड' शीर्षकमें दिया जायगा।

गुण—काडवेल साधारण-तीखी, कडवी, गरम, दस्तावर, पित्तल और गुल्मलता, दुष्टव्रण, प्लीहा, उदर, अग्निमांद्य, शूल, वायु और मलस्तम्भका नाश करनेवाली होती है. चौधारी काडवेल—भूतोंके उपद्रव और शूलनाशक है तथा अति उष्ण, आध्मानवायु, तिमिर, वातरक्त, अपस्मार और वातरोगका नाश करती है.

औषधिप्रयोग—(१) देहमें निकी हुई तथा सर्व प्रकारकी गरमी-पर—काडवेलको गरम राखमें भूनकर दो तीन तोले रस निकाल लेना और उसमें उतनाही गायका घी मिलाकर सात दिनतक एक २ या दो २ बार लेना पथ्यमें नमक नहीं खाना इससे घाव, चट्टे, स्राव आदि सब जल्दी मिट जाते हैं (२) स्त्रियोंके रजसंबधी दोषोंपर—काडवेलको गरम राखमें भूनकर दो तोले रस निकालना और उसमें उतनाही घी तथा एक तोला गोपीचंदनका चूर्ण और एक तोला मिश्री मिलाकर पी जाना.

४१– काडोळ

नाम – म काडोळ, सारडोळ

वर्णन – वृक्ष इसका बडा और सफेद रंगका होता है पत्ते बडे होते हैं फूल लाल होते हैं आमके वृक्षकी तरह इस वृक्षमेंभी वसंतऋतुमें मोर आकर फल लगते हैं उस समय सब पुराने पत्ते गिर जाते हैं फलोंका आकार बादाम जैसा और पोचा होता है पक्का फल मीठा लगता है इससे कोई २ उसे खाते हैं जंगली आदमी इसके फलोंमेंसे निकलनेवाली अनारकी डाल बनाकर खाते हैं इसकी डाली मुगलाई एरंडकी तरह पोची होती है इसकी जड लाल और ठंडी होती है पेडमें एक सफेद रंगका दूध या चेप (गोंद) लगता है वह बडे कामका है उसको 'कथीरियागोंद' कहते हैं लकडी इसकी इमारतके काममें नहीं आती

छालपर मंत्र लिखकर अगर्पण (गुगलीकी एक जात है.) जानेकेलिये, गलेमें बांधा जाता है. डालीको तोडकर उसमे धागा निकाला जाता है.

औषधिप्रयोग – (१) छोटे बच्चे और बडे आदमियोंकोभी डब्बे-के रोग जैसा मुंवारकी रोग होता है उसपर – इसकी जड, फरहद (जैनीम) की जड, महेडाकी जड और गूलरकी जड घिसकर देना. (२) अतिसारपर – इसकी छाल घिसकर पिलाना. (३) प्रमे गरमी और धातुविकारपर – इसकी छालका पानी डालकर रस निक लना और शक्कर मिलाकर देना. अथवा, इसकी जड घिसकर मिश्री मिला कर देना. धातुविकारपर इसका गोंदभी देना. (४) गरमी, प्रमेह और ..दरपर – कथीरियागोंद रातको पानीमें भिगो देना और प्रात मिश्री मिलाकर देना. (५) क्षीणता और वायुपर–इसकी छाल डालकर उबाले हुए पानीसे स्नान कराना.

४२—सत्यानाशी.

नाम–सं. स्वर्णक्षीरी. म. कांटेघोत्रा.

वर्णन– मराठीमें इसे 'पिवळा घोत्रा', 'विलायती घोत्रा' और 'विलाय-त' भी कहते हैं. यह हाथ दो हाथ ऊंचा होता है. सारे पेडपर छोटे २ काटे होते हैं. इसके बीज बारूद जैसे काले होते हैं. वे कागजमें रखकर उडानेसे तडतड बजते हैं वीरान जमीनमें ये पेड बहुत होते हैं. बीजोंका तेल निकल-ता है. इसकी जडकोंभी पिसोराकी जडकी तरह 'चोक' कहते हैं. गुण इसमें पिसोरा समान होते हैं.

औषधिप्रयोग –(१) बीछूके विषपर – इसकी जडकी छाल बीडीमें खिलाना (२) साधारण विषपर – जडकी छाल खिलाना. (३) ..नपर–जडकी छाल बीडीमें खिलाना. (४) गरमीके चट्टे और मसेपर – इसका चेंप या जडको घिसकर लगाना. (५) आंखकी फूली और जालेपर – इसका चेंप (दूध) आजना (६) आंख दुखनेपर – इसके पत्ते या फूलका रस अथवा चेंप आंखमें लगाना. (७) दस्त होनेकेलिये – जडका चूर्ण शक्तिके अनुसार गरम पानीसे

देना. (८) प्रमेहपर — इसके पत्तेका रस दो तोलेतक उतनाही घी मिलाकर ९ दिनतक एक २ बार देना. (९) रक्तपित्तपर — इसके पत्तेका रस गायके दूधमें देना. ६ महीनेतक लेनेसे रोग जडसे नष्ट हो जाता है.(१०)खुजलीपर—इसके बीजोंकी राख तेलमें मिलाकर लगाना.

४३—कांटेरी डावा.

इसका पेड जंगलोंमें होता है. रंग इसका सफेद और ऊचाई लगभग दो हाथकी होती है. सारे पेडपर कांटे होते हैं. आयु इसकी ९।६ महीनेकी होती है. इसकी भाजी बनती है परतु स्वाद उसमें बहुतही कम होता है.

४४—सेवती.

नाम—स. भद्रतरुणी. म. कांटेशेवती.

वर्णन—मराठीमें इसको 'पाढरी शेवती' 'गुलाबशेवती' और 'शेवती-गुलाब'भी कहते हैं. गुलाबकी तरह इसकाभी पेड कांटेदार और पत्ते नोकीले होते हैं. गुलाबकेसेही आकारके इसमे सफेद फूल लगते है. बागोंमें यह लगाया जाता है इसके फूलोंका पाक और गुलकंद बनता है. वह पित्त और दाहनाशक है

गुण—सफेद सेवती सारक, शीतल, हृद्य, शुक्रकर, लघु, कषैला, स्वादिष्ट, सुरभि, ग्राहक, वर्ण्य, तीखी, कडवी, रुचिकर, अग्निदीपक और त्रिदोष, मुलपाक, रक्तपित्त, कफ/पित्त, रक्तविकार तथा दाहनाशक है. इसका फूल—शीतल, वर्णकर और वात, पित्त, दाहनाशक है. लाल सेवती—रक्तविकृति,बीछूका विष और त्रिदोषनाशक है बाकी सब गुण सफेद सेवती सदृश है

४५—कातरवेल.

मराठीमें इसको 'कातरी' भी कहते हैं. इसकी बेल होती है इसके पत्ते निर्गुंडीके पत्ते जैसे होते हैं परतु इनमे वैसी उग्र गंध नहीं होती. यह बेल झाडियोंपर बहुत होती है. गुणमें यह बहुत ठंडी होती है

औषधिप्रयोग— (१) गरमीपर—इसकी जडका चूर्ण ६ माशे पुराने गुडके साथ ७ दिनतक दो बार नित्य देना.

४६—प्याज (कांदा).

नाम-स.पलांडु, कंदक गु.डुगरी. म.कांदा.

वर्णन—यह सर्वत्र प्रसिद्ध है. इसका पौधा हाथ सवा हाथ ऊंचा और सीधा तथा पत्ते नली जैसे होते है. बीज इसके काले बारुद जैसे होते हैं. इसकी नरम डंडीकी तरकारी बनती है. प्याज लाल और सफेद दो जातका होता है. सफेद प्याज दवामें अधिक काम आता है. वह बडा पौष्टिक है. यहांतककी कहावत प्रसिद्ध है कि 'कांदा और मर्दोंका बावा.' सब प्रकारकी तरकारियोंमें प्याज डालनेसे स्वाद अधिक आ जाता है.

गुण—सफेद प्याज —बलकर, तीखा, वृष्य, गुरु, मधुर, रुचिकर, स्निग्ध, कफकर, धातुवर्धक, निद्राप्रद, दीपक तथा क्षय, हृद्रोग, वांति, अरुचि, रक्तपित्त, वात, पित्त, कफार्श, वातार्श, पसीना, सूजन और रक्तदोषनाशक है. हरा प्याज (हरित् पलाडु) के गुण सफेद प्याज सदृश हैं. लाल प्याज—शीतल, वृष्य, स्निग्ध, अग्निदीपन, गुरु, तीखा, मधुर, कुछ गरम, पित्तकर, बलकारक और कफ, वायु, सूजन, अर्श और कृमिनाशक है. प्याजके बीज—वृष्य और दांतके कीडे तथा प्रमेहनाशक है.

औषधिप्रयोग (१) बच्चोंकी आकडीपर — सफेद प्याज काटकर सूंघना (२) उन्मादपर—सफेद प्याजेको रस आंजना. (३) गरमीसे माथा दुखता हो तो—प्याज काटकर सूंघना और चंदन, कपूर पीसकर लेप करना. (४) नाकमेंसे रक्त गिरता हो तो — प्याजका रस नाकमें डालना. (५) महामारीपर (कॉलरा)—दो दो घंटेमें प्याजका रस पीना. (६) हैजेका रोग न होनेकेलिये—रातको भोजन किये पीछे प्याजके रसमें थोडासा हींग, सौंफ १ मासा और धनिया, १ मासा, मिलाकर खाना. (७) बच्चोंके पेटमें दर्द हो और अपचन हो जानेपर—प्याजका रस पिलाना. (८) बीछूके डंकपर—प्याजका दो टुकडे करके लगाना. (९) आगकी ज्वाला या लून लगनेकेलिये—एक प्याज

पास रखना.–(१०) तंबाकू लग गई होतो–प्याजका रस देना. (११) उष्णतापर–भुना हुआ सफेद प्याज, जीरा, मिश्री और गायका घी दो तोला मिलाकर देना. (१२) आम्लपित्तसे गलेमें जलना होतो–सफेद प्याजके बारीक २ टुकडे करके आधपाव मीठे दहींमें मिलाना और शक्कर डालकर देना. (१३) वीर्यवृद्धिपर–प्याजका रस शहद मिलाकर देना. (१४) डांसके काटनेपर–प्याजका रस लगाना. (१५) बच्चा जल्दी बढनेकेलिये–प्याज और गुड खिलाते रहना. (१६) आमरक्त पर–प्याजको बारीक काटकर ४।५ बार धो डालना और अच्छे दहींके साथ खाना. (१७) अतिसारपर–प्याजके रसमें अफीम मिलाकर देना. (१८) मुत्रकृच्छ्रपर–प्याज काटकर धोना और दहींके साथ खाना. साथमें प्याज काटकर या भूनकर पीसना और घीमें गोली बनाकर नाभीपर बांधना. केवल प्याज खानाभी अच्छा है. (१९) आंखके गरमीपर–प्याजके रसमें मिश्री मिलाकर रातको आंखमें लगाना और लाल चंदन घिसकर आंखपर लगाना. (२०) पुरुषत्व नष्ट होगया होतो—सफेद प्याजका रस, अदरखका रस, शहद और घी मिलाकर सवेरे देना. इससे २१ दिनमें पुरुषत्व आ जाता है. (२१) घावमें दर्द होता होतो–प्याज चीरकर घीमें तलना और घावपर बांधना. (२२)- वीर्यवृद्धिकेलिये और उरःक्षतपर–प्याजका रस ६ माशा, घी ३ माशे, शहद ३ माशे मिलाकर दोनों बार लेना और रातको आधासेर गरम दूध शक्कर डालकर महीने दो महीनेतक पीना. (२३) अपस्मारपर–सफेद प्याजका रस नाकमें डालना. (२४) कांवरपर–सफेद प्याज गुड और पीडी हलदी डालकर सुबह शाम लेना. (२५) बलगमपर–सफेद प्याज काटकर दोनों नथनोंसे सूंघना. (२६) बच्चोंको प्यासका रोग होनेपर–सफेद प्याज भूनकर महीन पीसना. उसमें घी डालकर गोली बनाना और मेजेपर लगाना. ऊपरसे एरंडका गीला पत्ता रखकर कपडा बांध देना. नित्य संध्या समय वह गोली निकाल फेंकना और सिरको अच्छी तरह धोकर तालूपर गायका घी लगा देना. साथमें सफेद प्याजका रस थोडा जीरा मिश्री मिलाकर पीना. (२७) आगकी ज्वाला या लू लग गई होतो—सफेद प्याज

एक भुना हुआ और एक कच्चा लेकर पीसना। और जीरा दो माशे त
था मिश्री दो तोले मिलाकर खिलाना. (२८)वद,गाठ आदि पकानेकेलि-
ये-भुना हुआ प्याज पीसकर घी हलदी मिलाना और फिर गरम करके
बाध देना.यह सौम्य और उत्तम पुल्टिस है. (२९)श्वास उठनेपर-प्याजका
रस आखमें डालना. (३०)गायोंके नाकसे श्लेष्म गिरनेका रोग होतो
सफेद प्याज७और गुड पावसेर तीन दिनतक सबेरे देना.साथमें पुरानी बिना
बिनौलेकी रूईकी एक मोठी बत्ती बनाना और उसका एक सिरा जला
कर धुआं गायके नाकमें आने देना. तीन दिनतक ऐसा करनेसे गुण हो-
ता है. (३१)अर्शपर-प्याजको बारीक काटकर धूपमें सुखाना. उसमेंसे
एक तोला सूखा प्याज घीमें तलना और तिल १ माशा तथा शकर
२ तोले मिलाकर नित्य मीठे सेवन करना. (३२) पित्तविकारपर-सफेद
प्याज काटकर मीठे दहींमें मिलाना और शक्कर डालकर खाना (३३)
दाढ दूखती होतो-प्याजके बीज चिलममें रखकर पीना अथवा दाढके
नीचे रखना. (३४)अर्शपर-प्याजका रस घी शकर मिलाकर खाना

१७. कपास.

नाम-स कार्पासी म कापशी. गु कपास

वर्णन-कपास दो प्रकारका होता है. (१) बाग या घरमें लगनेवाला
और (२)खेतोंमें होनेवाला पहली जातके कपासका पेड कई वर्षतक ठहरता
है और दूसरी जातका अर्थात् खेतमें लगनेवाला सिर्फ एकही वर्षमें हो चु
कता है पहली जातके कपासका पेड ४ से ६ हाथतक ऊंचा होता है.
उसकेभी दो तीन जात हैं एकका बीज खेतके कपास जैसा होता है.
दूसरेका बीज लंबा और काला होता है. खेतवाले कपासका पेड केवल
२।३ हाथ ऊचा होता है इन पेडोंमें कपास आता है जिसके वस्त्र बनते
और हमारे शरीरकी रक्षा होती हैं. हमारे भारतवर्षमें अनाप शनाप
कपास उत्पन्न होता है तबभी हमको कपडोंकेलिये विलायतका मुह
ताकना पडता है यह कितनी दु खकी बात है! कपासके बीज अर्थात् बि
नौलेका तेल निकलता है.

गुण-कपासका पेड-मीठा, ठंडा, दूधवर्धक, कुछ गरम, बलकर, कसेला, हलका और कफ, पित्त,तृषा,दाह,भ्रम, श्रम,वांति और मूर्च्छाका, नाश करता है. कपासका डींडू अर्थात् फल-मूत्रवर्धक और वायु,रक्तविकार, कानका फोडा, कर्णनाद और पूतिकर्मका नाश करनेवाला है. बिनौला- दुधवर्धक, भारी, वृष्य, कफकर्त्ता और चिकना होता है. कपास कुछ गरम, वातनाशक, हलका और मीठा होता है.

औषधिप्रयोग-(१)प्रदरपर-कपासके पत्तोंका रस अथवा जडके चावलोंके धोवनमें घिसकर दोनों वार पिलाना.(२)अजीर्णपर-बागमें होनेवाले कपासके कोमल डेंडू अर्थात् फल खाने चाहिये. जिससे दोही तीन दिनमें रोग दूर होता है.(३)सर्पदंशपर-बागके कपासके पत्तोंका रस ४।५ तोले पिलाना, दंशपर लगाना और बन सके तो पिचकारीद्वारा भीतर पहुंचाना. (४)कंठमालपर-कपासकी जडका चूर्ण चावलोंके आटेमें मिलाकर रोग मिटनेतक उसकी रोटी खाना. (५) स्तनोंमें दूध लानेकेलिये-कपासकी जड और ईखकी जडको चावलोंके माड (कांजीमें) पीसकर देना. (६) स्तनरोगपर-कपासकी और मीठी तुंबीको गेहूंकी कांजीमें पीसकर लेप करना (७) इंगळीके दंशपर-कपासके पत्ते, बचनाग और राईका लेप करना. अथवा बागके कपासकी जडको मनुष्यके मूत्रमें घिसकर लेप करना अथवा कपासकी लकडीको घिसकर लेप करना. (८) ज्वरसे देहमें खुजली आती हो उसपर-बागके कपासके पानोंके रसमें काली जीरी पीसकर देहमें मालिश करना और चार घडी पीछे स्नान करना. (९) घाव भरनेकेलिये पाढ़ीके पत्तोंके रसमें बागके कपासकी जड घिसकर लेप करना अथवा बागके कपासका फल और पाढ़ीके पत्ते बारीककर गोली बनाना और उस गोलीको घावपर जमा देना. इससे जल्दी घाव मिट जाता है (१०)बीछूके डंकपर-कपासके पान और राई एकत्र पीसकर लेप करना अथवा कपासकी जड रविवारको खोदकर निकालकर सो उसे चबानेसे विष उतर जायगा. (११) अफीम उतारनेकेलिये-बिनौले और फटकिरीका चूर्ण खाना.(१२)मूत्रके साथ धातु गिरता हो उसपर-बागके

कपासके दो पत्ते तीन और मिश्री मिलाकर सवेरे खाना.(१३)नाक और मुंहमेंसे रक्त पडता होतो–पुराने कपासका धुवा नाकमें छोडना और दो तोले कपासके पत्तोंके रसमें एक तोला मिश्री मिलाकर पिलाना. (१४) अफीमपर–बागके कपासके पत्तोंका रस पिलाना. (१५) स्त्रियोंके नष्ट पुष्प पर और ठीक समयपर रजस्वला न होनेपर–बिनौलेके तेलमें एक २ माशा इलायची, जीरा, हलदी और सिंधवकी गोली बनकर महीन कपडेमें बांधना और चौथे दिनसे योनिमें वह पुटरिया रखना.(१६) कावरपर–बागके कपासके डेंडूका रस नाकमें डालना.(१७) लूताके विषपर-बिनौले और कपासके फूलोंका काढा देना. (१८)बालकोंके अतिसारपर-बागके गीले फूलों (डेंडू) को गरम राखमें भूनकर रस निकालना और वह बच्चेको पिलाना. अथवा उन फूलोंको माता मुंहमें चबाकर बच्चेके मुंहमें डालना (१९)मस्तिष्क शांत होने और मस्तकशूल दूर होनेकेलिये-बिनौले तेल ३या४ दिनतक सिरमें लगाना. (२०)अर्शपर-बागके कपासके पत्तोंका रस गायके दूधमें मिलाकर तीन तोलेतक देना. (२१) आगंतुक ज्वरपर–बागके कपासके पत्ते गायके दूधमें पीस गरम करके अंगमें लगाना

४८. कपूरबेल

वर्णन—इस पेडका बेल यह संज्ञा है,परंतु इसका पेड होता है.इसका पेड तीन हाथ ऊंचा होता है इसके पत्ते लंबे और कम चौडे होते हैं.देखनेमें वह खरदरा होता है परंतु हाथ लगानेपर बडा नरम जान पडता है. इसमें कपूरकीसी गंध होती है इसीसे इसका नाम कपूरबेल रखवा गया है.कोई इसको कापुर चिनईभी कहते हैं. सफेद रंगके इसमें तुरें लगते हैं उनमेंभी पत्तोंकी तरह कुछ २ कपूरकीसी गंध आती है. येतुरेंही इसके फूल हैं ये तुरें या इसके पत्ते दूसरे फूलोंके गुच्छेमें रख देनेसे उनमें तरहरकी गंध आने लगती है

औषधिप्रयोग–(१)पेट दुखनेपर इसके पत्तोका रस देना.

४९. कपूरभोंडी.

वर्णन–इसका पेड पहाडी प्रदेशमें होता है. ऊंचाई इसकी ६।७हाथ और पत्ते बागमें लगनेवाली रूई (नानण नग) जैसे होते हैं.फूल इसके सफेद

और जड सुगंधित होती है.यह बहुत रोगोंपर काम आती है और पहाडों-की तराई (तउहटी)में ऊची नीची जमीनमें इसकी उत्पत्ति हे अनेक रोगों पर यह काम आती है

औषधिप्रयोग-(१)सर्पदंशपर-इसकी जड ४माशा घिसकर पिलाना (२)आगंतुक घावपर—इसकी जड घिसकर लगानेसे घाव साफ होता और जल्दी भरता है. (३) भगंदरपर—इसकी जड घिसकर दिनमें ३।४ बार लगाना और एकबार पीना. (४)व्रणपर—जड ठंडे पानीमें घिसकर ६ माशे दोनों बार पीना और लेप करना,तथा जडकी छाल चिलममें रखकर पीना (५)रक्तपित्तपर—इसकी जड १ तोला ठंडे पानीमें घिसकर नित्य दोनों बार १ महीनेतक पीना. (६)गंडमाला और ग्रंथिरोगपर—इसकी जड ठंडे पानीमें घिसकर नित्य लेप करना.

९०. कॉफी. (कहवा.)

वर्णन—अरब, हिंदुस्थान, हिंदमहासागरके टापू और वेस्ट इंडीजके टापूमें काफी बहुत होती है.इसका पेड तीन चार हाथ ऊंचा होता है इससे अधिक बढनेपर छाट दिया जाता है. इसका रंग बहुत हरा और फूल सफेद चमेली जैसे होते हैं. सुगंधभी उनमें अच्छी आती है परंतु यह अधिक समयतक ठहरती नहीं है. फुल आनेसे आठ महीने पीछे इसके फल पककर तैयार होते हैं.फल कुछ लंबे और पकनेपर लाल होते हैं.फल पकनेपर काफी निकालकर सुखाई जाती है. एक एक फलमें प्रायः दो दो काफी और एक एक झाडपर सेरसेर आधा २ सेर काफी निकलती है अरब और मुगल लोगोंमें काफी पीनेकी बडी चाल है. इसको पहले दूधमें भूनकर कूटते हैं और पीछे चायकी तरह बनाकर दूध शक्कर मिलाकर पीते हैं इसके पीनेसे शरीरकी सुस्ती और आलस्य मिटता है तथा रक्तवृद्धि होती है. रातको यदि जागरण हुआ हो तबभी काफीकी सहायतासे अन्न पच जाता है और कुछ उपद्रव नहीं होता. आजकल हिंदुस्थानियोंमे काफी पीनेकी बहुत चाल हो गई है परतु काफी और चाय दोनों गरम हैं इसलिये यहाकी गरम हवामें नित्य चाय और काफी पीना हम लोगोंकेलिये कभी हितकर नहीं हो सकता. आवश्यकता पडनेपर गरम२ काफी कभी २ पीलेना. परतु नित्यकी आदत अच्छी नहीं.

५१. करेला.

नाम—सं कारवेल्ल. गु. कारेली. म कारली, कारेटी

वर्णन—इसकी बेल होती है. करेले कडवे होते हैं परंतु इसके सा लोग प्रीतिपूर्वक खाते हैं. यह प्राय. एक बालिश्त ऊंचा होता है. इसर हरी और सफेद दो जात होती हैं. इसकी भाजी, तरकारी, छीकियां सा और चटनी आदि बनती है.

गुण—छोटे करेले–बहुत कडवे, अग्निदीपक, लघु, उष्ण, शीत भेदक, स्वाद, पथ्यकर और अरुचि, कफ, वायु, रक्तदोष, ज्वर, कृमि पित्त, पाडु और कुष्टनाशक हैं. बडे करेले–तीखे, कडवे, अग्निदीपक अवृष्य, भेदक, रुचिकर, खारे, लघु, वातल, पित्तनाशक और रक्त दोष, पाडु, अरुचि, कफ, श्वास, व्रण, कास, कृमि, कोठरोग, कुष्ठ प्रमेह, ज्वर, आध्मान और कावरनाशक हैं.

औषधिप्रयोग— (१) पित्तविकारपर–करेलेके पत्तोंका रस देना. इससे वमन होकर पित्त गिरैगा और वमन न होगी तो एक दो दस्त अवश्य होंगे. उतारनेकेलिये घी चांवल खिलाना. (२) शीतपूर्वक कफ, पित्त, ज्वरपर–करेलेके पत्तोंका रस जीरा मिलाकर देना. (३) रतोंधेपर–पत्तोंके रसमें काली मिरच घिसकर आजनेसे तीन दिनमें गुण होता है. (४) देहमें पारा फूट निकला होतो–करेलेकी जड पानीमें घिसकर पिलाना. (५) बच्चोंको पेटमें दर्द होता है उसपर–करेलेके पत्तोंका रस एक पैसेभर थोडी हल्दी डालकर पीना. इससे वमन और दस्त होकर पेट साफ हो जायगा. (६) विषूची (अजीर्ण) पर–करेलेका रस मीठा तेल मिलाकर देना. (७) रक्तार्शपर–करेलेके पत्ते या फलका रस छोटी चमचीभर शक्करके साथ देना. (८) मूत्राघातपर–करेलेके पत्तोंके रसमें नवाश हींग डालकर देना. (९) बच्चोंके पेटके डब्बा आदि रोगोंपर–करेलेके पत्ते, अडूसेके पत्ते, पके नागरबेलके (खानेके) पान और जामुनकी छालका इकट्ठा रस निकालकर उसमें वच घिसकर ७ दिनतक पिलाना और पथ्य रखना. (१०) मेदुवर–करेलेके पान या फलका रस देना.

९२. करील.

नाम—सं. करीर. म. कारवी.

वर्णन—कोंकनमें यह वृक्ष सब जगह प्रसिद्ध है. करील, सीधा ५ । ६ हाथ उंचा बढता है. टट्टी और बाड आदि बनानेमें यह काम आता है इसके फूलोंमें मकरंद बहुत होता है. उसको लेजाकर मक्खियां शहद बनाती हैं.

औषधिप्रयोग—सुआ (प्रसुत) रोगपर—करीलके बीज बकरीके मूत्रमें ७ दिन देना.

९३. कारिंदा.

वर्णन-इसकी बेल होती है. मराठीवाले इसको 'करादा' भी कहते हैं. इसके पत्ते कुछ गोल होते हैं. इसकी बेल छोटे पौधेके बराबर ऊंची होती है और बढतीभी इतनी जल्दी है कि एकही दिनमें १-१॥ हाथ ऊंची हो जाती है. बेलमे डेढ २ बालिश्तकी दूरीपर गाठ होती है और वहांपर पत्ते लगते है. गाठमेंसे अंकुर निकलकर शाखें फैलती हैं और गाठके नीचेके भागमें फोम लगकर छोटे २ फल लगते हैं जो बढकर आमके बराबर हो जाते हैं. बेल सूख जानेपर उसको जडतक जमीनमेंसे खोदकर निकाल लेते हैं. इसमें मीठी और कडवी दो जात हैं. मीठीजातकी छाल काली और कडवीकी छाल नरम होनेपर सफेद होती है परंतु पुरानी पडनेपर दोनोमे कुछ अंतर नहीं दीखता. कडवी जात कोंकनके जंगलोंमें बरसातके दिनोंमें अपने आप ऊग उठती है. मीठीजातके फल भूनकर या डाल बनवाकर खाए जाते हैं. फलाहारमें इनका उपयोग होता है. इसकी खीर बनती है, कपतले और चकतिया बनती हैं. इसमे रुचि अच्छी होती है. कडवी जातके फल खानेसे चक्कर, वमन आदि उपद्रव होते हैं तबभी गरीब आदमी उन्हें खाते हैं. परंतु उनसे होनेवाले उपद्रवोको रोकनेकेलिये वे लोग पहले उनको छीलकर पतले २ टुकडे करते हैं और राख लगाकर पानीमें उबालते हैं; फिर साफ पानीसे धोकर उनको सुखा लेते और तब तेलमें तलकर खाते हैं.

औषधिप्रयोग--(१) मुखपकनेपर--इसके सूखे पत्ते और पेठे सूखे छिलकेको चिलममें रखकर धूम्रपान करना. (२) अर्शपर इसके फलको भूनकर छिलका निकाल डालना और गूदेसे दुगन मिश्री और घी गायका मिलाकर छोटे आमके बराबर गोली बनाक खाना. बराबर ऐसा करते रहनेसे रोग नष्ट होता और धातुवृद्धि तथ पुष्टता होती है. (३) उपदंशपर--कडवी जातका फल पाच वर्षसेभं अधिक समयका हो सो जमीनमेंसे खोदकर निकालना और उसपरसे पत्ते तथा काली छाल छील डालना. फिर उसको कीसकर छायामें सुखाना और चूर्ण करके रख देना. यह चूर्ण ४ माशे गायके कच्चे दूधमें पावसेर डालकर ४ रत्ती जीरा और २ तोले मिश्रीसहित दोनों बार लेना. (४) पेट दुखने और अतिसारपर ऊपर नं. ३ में लिखा हुआ चूर्ण घीमें गोली करके खाना. (५) रक्तातिसारपर-कडवी जातका फल भून छीलकर बारीक पीसना और जीरा, घी तथा शक्कर मिलाकर लेना.

९४. लघुब्राह्मी.

नाम—स लघुब्राह्मी म कारिवणा

वर्णन—इसका पेड बेल जैसा होता है गंदी, जमीनमें यह पेड बारहों महीने रहता है और बागोंमें तथा घरके कुंडोंमेंभी लगाया जाता है इसके पत्ते चूहेके कान जैसे और दो अंगुल चौडे होते हैं. इसका बडा विस्तार फैलता है पत्तेकी चटनीभी बनती है.

औषधिप्रयोग-(१) आखोंके आगे चक्कर आते होतो ब्राह्मीके पानका रस सिरमें लगाना. (२) छोटे बच्चोंका शब्दोच्चार स्पष्ट होनेके लिये-नित्य प्रात इसके गीले पत्ते खिलाना इससे जीभका मोटा और कडापन दूर होता है. (३) पित्तजन्य अपस्मारपर-ब्राह्मीके पत्तेका रस और घी मिलाकर पकाना और घी सिद्ध होजाय तब सेवन करना. (४) उष्णता और मुत्रकृच्छ्रपर-ब्राह्मीके पत्तोंका रस जीरा और मिश्री मिलाकर देना. रसमें भिगोकर कपडा नाभीपर रखना. आखोंमें गरमी होतो यह रस सिरपर लगाना. (५)गरमीसे बच्चेके शरीरमें गाठ होजाती है

टीका- रस और कदंबकी छालका रस तथा शंखजीरा और गायका घी मिलाकर शरीरमें मालिश करना. (६) सूजनपर—ब्राह्मीके पत्तोंका लेप करना. (७) बच्चोंके अतिसारपर—पत्तेका रस देना. (८) बच्चोंको प्यासका रोग होतो—पत्तेके रसमें जीरा और शक्कर मिलाकर देना. (९) उन्माद, चित्तभ्रम, अपस्मारपर—ब्राह्मीके पत्तेका रस १ तोला, कुलींजन, अथवा अकलकरहका चूर्ण ३ मासे और उतनाही शहद मिलाकर दोनों बार देना. इस रोगपर—ब्राह्मी अकसीर दवा है. (१०) सीतलाके रोगपर—ब्राह्मीका रस अथवा बधुआका रस शहदमें देना. (११) ब्राह्मीघृत—ब्राह्मीका रस ४ सेर, घी ४ सेर, बच, कूट और शंखाहुलीका चूर्ण आधासेर इकट्ठा करके घृत सिद्ध करना. इसके सेवनसे उपदंशसे होनेवाला सन्निपात, विस्फोटक, ग्रंथि आदिरोग, वातरक्त, उन्माद और अपस्मार दूर होता है. ऊपर लिखे रोगोंपरभी इसका ऊपर लेप करनेसे कुष्ट आदिरोग दूर होते हैं और मस्तिष्क शांत होता है. (१२) स्वरभंगपर सारस्वत चूर्ण—ब्राह्मी, बच, हरडा, अडूसा और पीपरका चूर्ण शहदमें देना.

९५. काले तिल.

नाम-सं. कृष्णतिल म. काळें, सुपसनी.

वर्णन—यह धान्य पश्चिमी घाटपर बहुत होता है. तिलका पेड लगभग डेढ दो हाथ ऊंचा होता है. पीले रंगकेइसमें फूल लगते हैं. जब इसमें फूल लगते हैं तब इसका खेत दूरसे बडा सुंदर लगता है. इसका रंग काला होता है. तिलका तेल निकाला जाता है और खाने तथा जलानेमें काम आता है. तिलके पेड गायोंको चराए जाते हैं.

औषधिप्रयोग—(१) नेत्ररोगपर—नित्य सोतेसमय काली तिली (तिल) का ताजा तेल आंखमें डालना.

९६. सफेद काकमाची.

नाम—सं. काकमाची. म.कावळी पांढरी.

वर्णन—इसकी बेल होती है. पान त्रिदल अर्थात् तीन२ का गुच्छाला और नोकदार होता है. बेलका रंग पहले तांबेकासा लाल और पीछे

सफेद होता है. बहुतसे प्रांतोंमें यह बेल, बाड और झाडियोंपर लगती है.

गुण—यह रसकालमें उष्ण, कडवी, तीखी, रसायन, वृष्य, स्निग्ध, स्पर्श, हृद्य, धातुवर्द्धक, नेत्र्य, रुचिकर, सारक, लघु और कफ, शूल, अर्श, सूजन, त्रिदोष, कुष्ठ, कंडू, कर्णकीट, अतिसार, हिचकी, वाति (वमन) खांसी, दमा, ज्वर, हृद्रोग और मेहनाशक है.

औषधिप्रयोग—(१) सुखसे प्रसव होनेकेलिये—इसकी जड कमरसे बांधना. (२) मद्यपर—इसकी जड चावलोंके धोवनमें पीसकर देना. (३) आवाज खुलनेकेलिये—इसके और सफेद चिरमके पान, बच और कूट समभागको सुखाकर चूर्ण करना. इसमें पीपरका चूर्ण मिलाकर शहदमें चिकनी सुपारीके बराबर गोली बांधना और गोली मुंहमें रखकर रस उतारना. (४) उलटीपर—इसकी जड और हींग मिलाकर देना. (५) निद्रानाश दूर होनेकेलिये—इसकी जड चोटीमें बांधना. इससे नींद आवेगी. (६) अम्लपित्तपर—इसकी जडका क्वाथ या स्वरस थोडी भुनी हींग मिलाकर देना. (७) धातुस्थानमें कडक पडनी होतो—इसकी जड ठंडे पानी या गायके कच्चे दूधमें पीसकर मिश्री मिलाकर शक्तिके अनुसार देना. (८) भूतज्वरपर—पुष्य संक्रांतिमें सफेद काकमाचीकी जड लाना और लाल सूतसे बांहपर, अथवा गले या सिरमें बांधना.

५७. कावळें.

वर्णन—गोमांतक देशकी तरफ और वसईप्रांतमें होता है इसीसे यह नाम मराठी भाषाका है. इसका ४।६ हाथ ऊंचा वृक्ष होता है. उसमें पान इमली जैसे और हरे मटरके बराबर जामुनकेसे रंगके गोल फल लगते हैं जिनको बच्चे खाया करते हैं.

५८. कसौंदी.

नाम—सं. कासमर्द. गु. कासुंदरो. म. कासविंदा.

वर्णन—यह पेड कमर बराबर ऊंचा होता है, फूल पीला लगता है, और फली मूंग जैसी मोटी और लंबी होती है. पेड इसका बाडके पास बहुत होता है.

गुण—तीखी, कडवी, मधुर, उष्ण, रुचिकर, पाचक, दीपक, कंठ-

शुद्धकर, ग्राही, लघु, रुक्ष और कफ, अजीर्ण, वायु, कास, पित्त, विष, कृमि तथा विषूचिकानाशक है. पान म्लान पाककालमें तीखे, उष्ण, लघु और दमा, खांसी तथा अरुचिनाशक है. फूल कास, श्वास और ऊर्ध्ववातनाशक है.

औषधिप्रयोग— (१) दादपर–जड घिसकर लगाना अथवा पत्तेका रस नीबूके रसमें मिलाकर लगाना. (२) हिचकी और श्वास पर—इसके पत्तोंका काढा देना. (३) सूजनपर—बकरीके दूधमें इसके पत्ते पीसकर लगाना. (४) पारा उतारनेकेलिये–इसके पत्तोंका रस पिलाना. (५) शीघ्र प्रसूत होनेकेलिये–इसके पत्तोंका रस पेटमें पहुंचाना. (६) कानमें डांस या मच्छर आदि घुस गया होतो—इसके पत्तोंका रस कानमें डालना. (७) दाद, कुष्ट, किटिभ आदिपर—इसके पत्ते कांजीमें पीसकर लेप करना (८) भिलावेके विषपर—इसके पत्ते पीसकर लेप करना.

९९. कासालू.

नाम–सं. गु. कासालू. म. कांसालूं; कांसालवत.

वर्णन—इसकी काली और सफेद दो जात हैं. इसके पान और डंडी, काले अलूके पत्ते और डंडीसे बडी होती है.

गुण —कासालू मीठा, पथ्यकारक, दीपक, रुचिप्रद और कफ-वातनाशक है.

औषधिप्रयोग–(१) अलजी नामक गांठको-झाडपरके कासालूकी गांठ पानीमें घिसकर लेप करना. नमकीन वस्तु न खाना.(२)गठिया वायुपर–काले कासालूकी गांठ और बंदरीकी बेलकी गांठके बारीक २ टुकडे करके चार पुटरिया बनाना और गरम तवेपर तयारकर सेंक करना. (३) संधिवातपर–काले कासालूकी डंडीको मंदाग्निमें भूनकर १ माशे रस निकालना और गायके दहीमें गरम करके ७ दिनतक देना. इससे कफ और ज्वर गिरेगी. उतार–घी,चावल. (४) बद जल्दी फूटनेकेलिये–जंगली कासालूकी गांठ ठंडे पानीमें घिसकर बूंदें (टिपकिया) लगाना. जब सूख जायतो उन्हीके ऊपर फिर बूंदे लगाना. इस तरह ३।४ बार लगानेसे

छिद्र होकर रोग बह जायगा. (५) उदररोगपर—काले कासालूकी गांठके एक तोला बारीक २ टुकडोंको नारियलके रस और थोडे चावलमें मिलाना और पकाकर खीर बनाना. उसमें गुड डालकर एक या दो दिन पिलाना. इससे मलद्वारसे रोग निकल जाता है उतार-चांवलोंके माडमें घी डालकर देना. मुंहमें खुजली आने लगे तो कोकम अथवा इमलीके पानीका चुल्लू भरके डालना (६) भ्रम और पित्त-विकारपर—काले कासालूकी डंडीको गरम राखमें भूनकर रस निकालना. उसमें पाच सेरतक नारियलका रस और आधासेरतक माल-कांगनीके पिसे हुए बीज मिलाकर मंदाग्निपर पका देना जबतक पानी न जल जाय तबतक उसे आगपर रखना और ऊपरसे तेलका अंश नि-कालते रहना. यह तेल आंखसे लेकर गरदनतकके भागमें दिनभरमें दो बार मालिश करके जज्ब कर देना (सुखादेना). (७) पाडु रोगपर—जडसहित कासालूका चूर्ण ६ माशे दूधके साथ देना. (८) जलोदरपर—कासालूकी गांठ एक तोला छाछमें पीसकर देना. (९) कंठजिव्हा बढनेपर-कासालूकी डंडीकी राख लगानेसे वह ठीक हटता है. (१०) अनंतवात और शिरोरोगपर—काले कासालूकी गांठके बारीक २ टुकडोंकी पुटरिया बनाना और गरम तवेपर रखकर सेंक करना और थोडी देर पीछे उसे मस्तकपर बांध देना. (११) सर्व प्रकारके वातविकारोंपर—कासालूकी गांठका रस, नारियलका रस और दूधकी खीर बनाकर खाना.(१२) जंतुपर—कासालूकी गांठकी राख २।४ रत्ती शहद या पानीके साथ देना.

६०. कृष्ण खर्जूरिका.

वर्णन—यह कडवे नीमकी जातका वृक्ष—महाद्रि पर्वतपर होता है. इसके पत्ते एक फुट लंबे और दो हिस्सोंमें बंटे हुए होते हैं. फूल सफेद और ग्रम गंधवाले होते हैं. फल खजूर जैसे परंतु बहुत कडवे होते हैं.

औषधिप्रयोग—(१) पित्त गिरानेकेलिये—इसको पीसकर चटाना. (२)

ज्वरसे जीभ खरदरी होगई हो उसपर और मुख पकनेपर—इसको पीसकर लगाना (३) कनखेंजूरेके डंकपर—इसको तेलमें पीसकर लेप करना. (४) पेटशूलपर—इसको घिसकर देना.

६१. कालीवेल.

वर्णन—यह वेल प्रायः झाडियों और बाडोंपर होती है, इसके पत्तोंका आकार कुछ २ एरंडके पत्तोंसे मिलता है परंतु लंबाई उनसे अधिक होती है.

औषधिप्रयोग—(१) कर्णमूल, स्तनरोग, विसर्प, मस्तकके ऊपरकी और शरीर ऊपरकी फून्सीपर—इसकी जड थंडे पानीमें पीसकर लेप करना (२) एक जातिके सर्पकेविषपर—इसके नरम पत्ते और कायफलका रस शक्तिके अनुसार तीन दिनतक देना. दोनो बार उतार—काली तुलसी अथवा लाल अगास्तिएका रस देना. विषकी गाठ पड गई होतो उसपर—इसकी जड बांधना. (३) जुएं मारनेकेलिये—इसके पत्तेका रस, कपूर और थोडा पानी घोटकर रातको बालोंमें लगा देना और ऊपरसे इसीके पत्ते बांधकर कपडा लपेट देना. सबेरेही सब जुए मर जायगीं.

६२. किंजल्क.

वर्णन—इसका वृक्ष बडा और पत्ते लंबे होते हैं. लकडी इमारतके काममें अच्छी होती है. जादू टोनेसे बचनेकेलिये कितनेही लोग इसकी लकडी सदा अपने पास रखते है इसको मराठीमें 'किंदळ' भी कहते हैं.

औषधिप्रयोग—(१) अफीमपर—इसके पत्तेका रस देना. (२) विषूचिकापर—इसके पत्तोंका रस पावसेरतक दे देना (३) कर्णमूलपर—इसके पत्तेके रसमे भैंसका घी और सेंधा नमक डालकर दिनभरमें ४।५ बार काममें डालना. (४) कान बहनेपर—इसके कोमल फलका और छालका रस मिलाकर डालना (५) विसर्प और विस्फोटकपर—इसकी छालके रसमें कोमल दूर्वा और चावल पीसकर लेप करना.

६३. कटभी.

नाम – स. कटभी. म. किन्हई.

वर्णन–इसका वृक्ष बडा, पत्ते लंबे–वर्तुल और फलिया चपटी हो हैं. पेडका रंग कुछ सफेद होता है.

गुण–बडा सफेद कटभी–तीखी, उष्ण, कषैली, कडवी और नाडी व्रण, रक्तदोष, प्रमेह, विष, कृमि, श्वेतकुष्ट, कफ, त्रिदोष, व्रण शिरोरोग और अजीर्णनाशक है. इसका फल–धातु और कफवर्द्धक है. गोंद–गुरु, वृष्य, बल्य और वातनाशक है. छोटी सफेद कटभी उष्ण, तीखी और कुष्ट, कफ, रक्तदोष, मेदरोग, नाडीव्रण, विष,मेह कृमिनाशक है. काली कटभी–उष्ण, तीखी, और गुल्म तथा आध्मान शूलनाशक है. बाकी सब गुण सफेद जैसे हैं.

औषधिप्रयोग–(१) कंडू और दादपर—इसके पत्ते पीसकर लगाना

६४. किरमानी अजवाईन.

नाम–सं चौर. म किरमाणी ओंवा

वर्णन–मराठीमें इसको 'चोर ओंवा' भी कहते हैं. इसकी उत्पत्ति का स्थान परशिया है. परशिया और अफगानिस्थानसेही इसका बीज हमारे यहां आता है. स्वाद–इसका कुछ कडवा होता है. इसके सत्वको अंग्रेजीमें 'सँटोनाइन' कहते हैं सन् १८३० में एक रशियन वैद्यने यह सत्व शोधकर निकाला था. कृमिपर वे इसकी १।२।३ रत्तीतककी मात्रा रातको शक्करके साथ देते और सबेरे सोंठका काथ या एरंड(रेंडी) का तेल देते हैं. सोंठका काथ लियेबिना इस दवाका कुछभी असर नहीं होता. इससे यह दवा लंगडी समझी जाती है. आजकल हमारे भारतवर्षमें इस दवाका बहुतही प्रचार होगया है परंतु शोध करनेसे मालूम होता है, कि इसके मुहपर थप्पड मारनेवाली हमारे यहा अनेक दवाइया है. साष्टिमानमें जिसको 'मारबेटी' अथवा 'सुरनंद' कहते हैं वह पेड इसी जातका है जिसका वर्णन आगे होगा.

गुण–यह कडवा, उष्ण, तीखा, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, वृष्य, लघु

और त्रिदोष, अजीर्ण, कृमि, शूल और आमनाशक है. बाकीके गुण अजवायन समान हैं.

औषधिप्रयोग—(१) कृमिरोगपर—सवेरेही इसे ठंडे पानीमें लेना अथवा बीडीमें चुरटकी तरह पीना.

१९. चिरायता. (चिरैता.)

नाम-सं. किराततिक्त, भूनिंब. म. किराईत. गु. करियातुं.

वर्णन—इसकी दो जात हैं.(१) सांव्या जिसमें पत्ते और लंबे रतिनखेसे होते हैं और (२) गाव्या जिसमें गाठें होती हैं. इसका पेड छोटा हाथ डेढ हाथ ऊचा और पत्ते छोटे २ तथा लंबे होते हैं. सांव्या चिरायता इस देशमें बागोंमें होता है परंतु गाव्या नेपालसे आता है. यह बहुत कडवा होता है.

गुण—चिरैतासाव्या—वातल, कडवा, व्रण, रोपक, सारक, शीत, पथ्यकर, लघु, रूक्ष और तृषा, कफ, पित्त, कुष्ट, कंडु, सूजन, कृमि, सन्निपातज्वर, दाह, शूल, मेह, व्रण, श्वास, कास, प्रदर, शोष, अर्श और अरुचिनाशक है. चिरायतागाव्या—कुछ उष्ण, योगवाहक, लघु, कडवा और पित्त, कफ, शोथ, रक्तरोग, तृषा और ज्वरनाशक है. बाकी सब गुण पहलेकेसे है.

औषधिप्रयोग— (१) आम, वात, जीर्णज्वर और सब प्रकारके गरमीके रोगोंपर—रातको तीन माशे चिरैता २ तोले पानीमें भिगो देना. सवेरे उसको छानकर २ रत्ती कपूर, २ रत्ती शिलाजीत और आधा तोला शहद मिलाकर पीनेसे ७ दिनमें गुण हुएविना नहीं रहता और रोग मुक्त होकर शक्ति आती है. यह अनुभवसिद्ध है. (२) साधारण सर्वज्वरपर—चिरैता, सोंठ, डिकामालीका अष्टमाश क्वाथ करके रख छोडना और दिनमें तीन बार लेना. (३) नलविकार और पेट दुखनेपर—चिरैताके गीले पत्तोंको पीसकर रस निकालना और काली मिरच, हींग और सेंधा या काला या बडनमक डालकर देना.इससे अजीर्णभी मिटता है. (४) कपकपीपर (दिनमें १०१९ बार स्वतः कपकपी आती होवो

उसका-कारण अस्थिगत जीर्णज्वर समझना.)- गाठचा, चिरैता सोंठ, कुटकी,छहारा और कुरैयाकी जडकी छालका क्वाथ शहद मिलाकर देना (५) आम्लपित्तपर-चिरैते और भंगके-काथमें शहद मिलाकर देना (६) हरतालके विषपर-चिरैताका क्वाथ देना.

६६. कोरैया.

नाम-स कुटज गु कडो. म कुडा

वर्णन--इसको कुरैया और कुडाभी कहते है यह जंगली वृक्ष है. इसकी ऊंचाई ६।७ हाथसे अधिक नहीं होती. पत्ते इसके बदामकी तरह लंबे होते है कोंकनप्रातमे, इसके पत्ते बहु काम आते हैं. इसके फूलोंकी तरकारी बनती है फल इसकी पतली आर लंबी होती है और उसका अचार तथा साग बनता है. फलोंमेंसे जौ जैसे लंबे बीज निकलते हैं. उनको 'इंद्रजौ' कहते है बीज और जड इसकी कडवी होती है. जडका पाक बनता है उसको 'कुडापाक' कहते हैं इसकी सफेद और काली दो जात होती है.

गुण-सफेद कोरैया-कडवा, तीखा, गरम, अग्निदीपक, पाचक, कसेला, रूक्ष, ग्राहक और रक्तदोष, कुष्ट, अतिसार, पित्तार्श, कफ, तृष, कृमि, ज्वर आव और दाहनाशक है काला कोरैया-रक्तदोष, अर्श त्वग्दोष और पित्तनाशक है बाकी सब गुण सफेद कोरैया जैसे होते हैं.

औषधिप्रयोग -(१) कृमिपर-कोरैयाकी जड घिसकर वैसीही अथवा वायविडंगका चूर्ण मिलाकर देना (२) अतिसारपर-इसकी छालका स्वरस देना अथवा छालका पुटपाक अर्थात् कपडमट्टीसे रस निकालकर शहदके साथ देना (३) मूत्रकृच्छ्रपर-इंद्रजौ और निसोथचूर्ण दूधमें या चावलोंके धोवनमें देना (४)फुरशा जातीके सर्पके विषपर-काले कोरैयाकी जडको घिसकर उसमे आधा मासा इंद्रजौका चूर्ण मिलाकर देना, अथवा छालका रस निकालकर देना (५)माथेके फुनसीपर-कोरैयाकी छाल और सैंधा नमक गोमूत्रमें पीसकर लेप करना.(६) ज्वर और अर्श प्र

कारक विषपर—काळ कोरैयाके अंकुरका रस चार पैसेभार ३ दिनतक देना. पथ्यमें घी—चावळ खाना, नमक नहीं खाना. (७) नल फूलने-पर—भूंने हुए इंद्रनौका चूर्ण पैसाभार, और घी पैसाभार मिलाकर ७ दिनतक देना. (८) जीर्णज्वरपर—कोरैयाकी जडकी छाल और गि-लोयका काथ देना. अथवा रातको छाल भिगोकर सवेरे वह पानी पि-लाना. (९) कान बहनेपर—कोरैयाकी छालका चूर्ण कपडेसे छानकर कानमें डालना और ऊपरसे 'मखमली' वनस्पतीके पत्तोंका रस निचोडना. (१०) मूत्रकृच्छ्रपर—कोरैयाकी छाल गायके दूधमे पीसकर देनेसे कठिन मूत्रकृ-च्छ्रकाभी नाश होगा. (११) परिणामशूलपर—इंद्रनौका चूर्ण गरम दूधके साथ देना (१२)बालकके अपचनकी अतिसारपर—कोरैयाकी जड छाछके पा-नीमें घिसकर थोडी हींग मिलाकर देना.(१३)बालकके भयकर अतिसारपर-कोरैयाकी जड और मुगलाई अरंड (रतनजोत) की जड छाछके पानीमें घिसकर थोडी हींग मिलाकर देना (१४) वातशूलपर—इन्द्रजाके काढेमें काला नमक और भूनी हींग मिलाकर देना. (१५) गायोंके कुंद्रोगपर अर्थात् गाएं सूखा लेड (गोबर ?) करती हैं उसपर—कोरैयाके कोमल अग्रको कूटकर पावसेर रस निकालना; और उसमें उतनाही नारियल-का रस तथा आधपाव गुड मिलाकर दिनमें दो बार सात दिनतक देना. (१६) सब प्रकारके अतिसार, संग्रहणी, पाडु और जीर्णज्वरपर—कोरैयापाक—कोरैयाकी जडको धोकर छाल निकालना और पानी डाल-कर उसका रस निकालना. रसको आगपर रखकर गरम करना जब वह साधारण गाढा हो जाय तब उसमें अनुमानसे सोंठ, मिरच, पीपर, जाय-फल, माजूफल, जायपत्री, लौंग, बायविडंग, मरोडाफली, कोमळ बेलफल और नागकेशरका चूर्ण मिलाकर चने बराबर गोली कर लेना. अति-सार और संग्रहणीपर यह गोली छाछके पानीमें हींग मिलाकर देना अथवा मीठे दहींमे सोंठके काथमें या घीमें देना. छोटे बच्चोंकेलियेभी यह दवा बडे कामकी है. पाडुरोगमे यह गोली गोमूत्रके साथ देना.

(१७)वातज्वरपर—कोरैयाकी जडकी छाल १ तोला बारीक पीसकर पानीमें डालकर छान लेना फिर थोडा अजवाईन पीसकर उसमें डालना और एक दहकता हुआ अंगीरा (कोयला) उस पानीमें डालकर बुझा लेना. य पानी देनेसे वातज्वर मिटता है. (१८) विसर्पपर—साप रहता है उस जमीं परकी कोरैयाकी जड गरम पानीमें घिसकर नित्य दो बार १४ या २१ दि देना. (१९)सर्वातिसारपर—कोरैयाकी छालका क्वाथ, अष्टमांश करके उसं अतीस मिलाना और वह पिलाना अथवा कोरैयाकी जडकी छाल औ अतीसका चूर्ण शहदके साथ देना. (२०) मूत्रकृच्छ्रपर—कोरैयाकी छा दहीमें पीसकर पिलाना. (२१) कुटजाष्टकावलेह—कोरैयाकी जडकं छाल गीली पाच सेरका १६ सेर पानीमें क्वाथ बनाना. जब आठवा हिस्स रह जाय तब छानकर फिर उसको आगपर चढाना. जब वह गाढा होजाय तब उसमें पाठ अर्थात् पाढ (पाडा) सेमरका गोंद, धायके फूल, नागरमोथा, अतीस, लजवंती और कोमळवेलका चार चार तोला चूर्ण डा- लकर अवलेह बनाना इसको पानी, गायके दूध, बकरीके दूध अथवा चावलोंके माडके साथ देनेसे अतिसार, संग्रहणी, रक्तप्रदर, रक्तपि त्त, और अर्शका रक्त बंद होता है. (२२) वातगुल्म, वायु, क्षय, कं दू (खुजली) और ज्वरपर – कोरैयाकी जडकी छालका पुटपाक (काढा) से रस निकालकर देना.

(६७ कुंद

इसकी बेल चमेलीकी बेल जैसी होती है आश्विन-कार्तिकमें इसमें फूल आने लगते हैं इसके फूल बेला जैसे होते हैं, परंतु कुछ ऊंचे होते हैं सुगंधिभी बहुत तेज होती है, परंतु उग्र होती है चैत्र-वैशाखमें इसकी कलमभी होती है

६८ कायफल

नाम ७ कुमी, कुमुदिका गु कायफल म कुमा

वर्णन—कायफलका पेड कोंकन प्रांतमें बहुत प्रसिद्ध है इसके पत्ते

छव और पत्तोंके कामके होते हैं. फल बेल (बिल्वफल) जैसा गोल होता है. लाल और सफेद दो इसकी जात हैं. इसकी छालका बंद अच्छा होता है. सफेद कायफल दवामें अधिक काम आता है. इस वृक्षकी छालको कायफल कहते हैं.

गुण—कायफल-तीखा, उष्ण, कसेला, ग्राहक; और वात, पित्त, ज्वर, दाह, कफ, रक्तातिसार, योनिदोष, विष और कृमिनाशक हैं.

औषधिप्रयोग—(१) फुरशा(एक जातका सर्प) के विषपर—छाल कायफलकी छालका रस पावसेर और थोडा कालीबेलका रस पानीमें मिलाकर काली मिरचका चूर्ण डालकर पिलाना. उतार—काली तुलसीका रस पिलाना. (२) खांसीपर—कायफलकी छालका रस शहद मिलाकर ७ दिन पिलाना. (३) मूत्रकृच्छ्रपर—छालका रस शक्कर मिलाकर देना. (४) दमापर—छालके रसमें राई पीसकर देना. (५) धातुप्रमेहपर—छालका और नारियलका रस मिलाकर ७ दिन देना. (६) अंग जल जानेपर—छाल कायफलकी छालका रस लगाना. (७) अपचनपर—कायफल घिसकर देना. (८) अतिसारपर—छालका काथ देना. (९) मस्तकशूलपर—कायफलका चूर्ण सूंघना. (१०) व्रणशुद्धिकेलिये—छालके काथसे व्रणको धोना. (११) दंतरोगपर—छालके काथसे कुल्ली करना. इससे दांतका रोग मिटता है, और दांत दृढ होते हैं.

६९. कुरकुला. (यह नाम मराठी है.)

यह कीचड और सर्द जमीनमें होनेवाला पौधा है. इसकी आकृति अळव जैसी और ऊंचाई बालिश्त भरसे अधिक नहीं होती. पत्ते कारिंदाके पत्ते जैसे और चौडे तथा बहुत ऊंचे होते हैं. इसका एकभी पत्ता ज्योंही ऊंचा आता है त्योंही डंडीसहित तोड लिया जाता है. इसकी भाजी अळव जैसी परंतु फीकी होती है. इसमें दाल डालनेकी आवश्यकता होती है.

७०. शिरियारी.

नाम—सं. सुरंडी. म. कुरडू. राजपूतानी—उकीरडा.

वर्णन—इसको सिलवारीभी कहते हैं. इसकी भाजी—सफेद माठ जैसी

होती है; परंतु यह जंगली भाजी होनेके कारण कोई खाता नहीं है. बरसातमें यह अपने आप उगती है. ऊंचाई इसकी लगभग दो हाथ होती है. पत्ते-पतले और बीज बहुत लगते हैं.-चोटीपर सफेद रंगका गुच्छा लगता है, उसीमें बीज होते हैं. बीज ठंडे होते हैं. लाल फूलवाली शिरियारीको 'देव शिरियारी' कहते हैं.

गुण—यह कपेली, ग्राहक, उष्ण, रसायन, मेधा; और रुचिकर, शीत रूक्ष, अग्निदीपक, अविदाही, लघु, स्वादिष्ट, हृद्य, वृष्य; और त्रिदोषज्वर, मेह, श्वास, दाह, मेद, कुष्ट, भ्रम, और अरुचिनाशक हैं.

औषधिप्रयोग—(१) मूत्राघातपर—इसके बीज और मिश्री एक एक माशा देना. दो तीन बार लेनेसे मूत्र उतरने लगेगा. (२) भंग और गांजेपर उतार—इसकी जड ठंडे पानीमें घिसकर शक्ति अनुसार देना. (३) कफ मूत्रकृच्छ्रपर—छांछमें पीसकर इसके बीज पिलाना.

७१. कुलथी.

नाम-मराठी—कुलित्थ, हुलगे. राजपूताना—कुळथ.

वर्णन — तृण धान्यमें कोंदो जैसे गरीब अन्न है वैसेही द्विदल धान्योंमें कुलथी है. यह अन्न सब जगह होता है. इसका पेड केवल हाथभर ऊंचा होता है. इसके पेड और पत्तोंकी आकृति उरदसे मिलती हुई होती है. फली इसकी कुछ टेढी और चपटी होती है. कुलथीका रंग लालसा होता है; कहीं काले और सफेद रंगकीभी कुलथी होती है. यह अन्न घोडे और गाय आदिको खिलानेमें काम आता है. इसको उबालकर ऊपरका पानी निकालकर सार बनाया जाता है. उसको काट कहते हैं. इस प्रकारके सारमें रोगियोंको प्रायः भात खिलाया जाता है.

गुण—कुलथी—मीठी, तीक्ष्ण, रक्तपित्तकारक, पसीनाको शोषण करनेवाली, गरम, पाककालमें खट्टी, तीखी, विदाही, कसेली, रूखी, पित्तल हलकी; और हिचकी, कफ, श्वास, कास, वात, पथरी, दृष्टिरोग, पीनस, आनाह, शुक्र, गुल्म, अर्श, ज्वर, मद, कृमि, और सूजननाशक हैं.

आमायिकप्रयोग—(१) वायुका विकार न होने देनेकेलिये कुलथीका क्वाथ देना चाहिये; तो रोगीके वायुविकार न होगा. (२) गंडमालापर-कुलथी और काली मिरचका क्वाथ देना. (३) अतिसारपर—कुलथीके पेडका रस १ तोला और कत्था (खैर) पाव तोला मिलाकर दिनमें तीन बार देना. (४) पसीना बंद करनेकेलिये—भूने हुये कुलथका आटा देहमें मलना. (५) पेट और छातीमेंसे रक्त गिरता होतो—पावसेर कुलथीको उबाल उसमें पाच भिलावें काटकर डालना और वह पानी नित्य पिलाना. (६) शूलपर—कुलथीके क्वाथमें हींग, बिडनोन और सोंठका चूर्ण डालकर पिलाना. (७) अश्मरीपर—कुलथीके क्वाथमें सेंधा-नमक दो माशे और सरफोंका चूर्ण मिलाकर देना.

७२. कुवा. (यह नाम मराठी है.)

इसको नागिनीका वृक्षभी कहते है. यह वृक्ष सह्याद्रिपर्वतके नीचे बहुत होता है. ऊंचाई इसकी ५०।६० हाथ और मोटाई २।२॥ हाथ होती है; और ऊपर जाकरभी इसका अधिक विस्तार नहीं फैलता; इससे इसकी छाया बहुतही कम पडती है. लकडी इसकी सीधी और कडी होती है; इसलिये उसकी डोली (पालकी) उठानेकी लकडी बनाई जाती है. इसमें सापके फनसमान लाल फल लगते हैं; इसीसे इसको नागिनीका वृक्ष कहते है. फल तोडनेसे एक विचित्र प्रकारकी गंध और दो काले बीज निकलते हैं. बीजकी मींगी बच्चे शौकसे खाते हैं. लकडी इसकी बहुतसे कामोंमें आती है.

७३. बेल.

नाम-सं. माधवी, वासंती. म. कुसर.

वर्णन—इस बेलको मस्तूरी, मोतिया, मधुमालतीभी कहते हैं. पत्ते-बडे और फूल सफेद उज्वल तथा जुहीके फूलसे बडे होते हैं. यह जंगलमें बहुत होता है. फूलोंकी वसंतऋतुमें बडी बहार रहती है. फूल फूलनेपर चारों ओर मीठी सुगंध फैल जाती है.

गुण—बेल—तीखा, कडवा, कषैला, मदगंधि, मधुर, शीतल. लघु और पित्त, कास, व्रण, दाह, शोष, और त्रिदोषनाशक है.

औषधिप्रयोग—(१) अंत्रविकारपर–इसके पत्तेका रस २ तो। उतनाही घी मिलाकर ३ दिन देना (२) कफविकारसे बच्चोंके पेट वायु होगया होतो–बेलके पत्ते ७, काली मिरच ७, लहसनकी कली सहजनेकी छाल ४ माशे, और लाल हसानीकी छाल ४ माशे यह सब पानीमें पीसकर १ तोला रस निकालना, और शक्तिके अनुसार देना। इससे दस्त और वमन होकर विकार शमन होता है (३) बच्चोंके कफविकारपर–बेलका पत्ता आधा और अगस्तिएके पत्ते ४ तथा काली मिरच २ को पीसकर रस निकालना, और उडदकी दालके बराबर सोहागा तथा रसके बराबर शहद मिलाकर चटाना

७४ कुहिरी.

नाम–स. मर्कटी म कुहिरी गु. कौचा

वर्णन—मृगशिर नक्षत्रकी वर्षा होतेही जगलोंमें इसका पौधा चारों ओर ऊग उठता है, और फिर बेल बनकर झाडियों और बाडोंपर फैलने लगता है पत्तेकी बगलमें शाखा फूटकर उसमे तुर्रा लगता है एक तुर्रेमें २०।२५ फूल होते हैं फलमे एक अगुल लंबी और उतनीही मोटी २ फलियोंके गुच्छे लगते हैं, और एव २ गुच्छेमें पाच २ दस २ फलिया होती हैं फलीपरका बारीक काटा देहमें लगनेसे बहुत जलन और सूजन होती है फोडनेके काममें इसका उपयोग होता है फलीमेंसे बीज निकलते हैं उनको 'कौंचके बीज' कहते हैं. इसकी दो जात हैं (१) रेडेकुहिरी और (२) मेढेकुहिरी दूसरे नंबरकी जातकी फली कुछ बडी और नाजुक होती है, और काटेभी अधिक तेज नहीं होते इन काटोंको चाकूसे छीलकर तरकारी बनाई जाती है जिसका स्वाद कच्चे केलेकी तरकारीका होता है

गुण—यह मधुर, वृष्य, शीतल, धातुवर्धक, बलकर, गुरु, कटु, और क्षय, वायु, शीत, पित्त, रक्तदोष, व्रण, कफ, और रक्तपित्तनाशक हैं बीज–धातुवर्धक, वृष्य, शीतल, स्वादिष्ट, गुरु, और वात, दुष्टव्रण और रक्तपित्तनाशक हैं बाकी सब गुण उडदके समान हैं

औषधिप्रयोग–(१) जंतुपर–इसकी फलीपरके थोडेसे कांटे दूध या गुडमें मिलाकर बच्चोंको देना. इससे जंतुओंका उपद्रव शीघ्र शांत होता है. यह रामबाण औषधि है; परंतु स्मरण रखना चाहिये कि दवा अधिक न दी जाय. (२) कुहिरीके विषपर–घी, शक्कर, और शहद मिलाकर देना. (३) छोटे बछडोंके पेटमें जंतु पडगये होतो–इसकी जड पानीमें घिसकर अथवा इसके अंकुर छाछमे पिलाना. (४) गर्भ-धारण होनेकेलिये–मीठी कौंचकी जड और कैथका गूदा दूधमें पीसकर देना. (५) धातुपुष्टकेलिये–कौंचके बीज और तालमखानेका चूर्ण शक्करके साथ लेना और ऊपरसे स्तनोष्ण दूध पीना. (६) सोमल (संखियाः) के विषपर–खाजकुहिरीकी छाल और सफेद, कत्था इकठ्ठा करके पानीमें पीसना, और थोडा २ पानी पिलाते जाना. (७) मूर्च्छा दूर होनेकेलिये–कौचके अंकूर शरीरमें लगाना. (८) श्वासपर–कौंचबीजका चूर्ण सबेरे शहद और घीमें चाटना.(९) गाठ, बद, आदिपर–कौंचबीजका दिनमें २।३ बार लेप करना.

७५. कुळई. (यह नाम मराठी है.)

नाम–सं. सुपवी, पुष्पा. म. कुळई.

वर्णन–जेठके अंतमें बरसात होतेही यह भाजी जंगलमें जहां तहां विशेष करके लाल मट्टी और पहाडी भूमिमें ऊग उठती है. इस भाजीका सफेद कंद जमीनमें होता है. पत्ते घास जैसे और नरम रहनेतक भाजी बनानेके कामके होते हैं. पत्तोंको योंही काटकर अथवा नमक लगाकर पानी निकालकर छोंक देते हैं. इसमें छोटे सफेद फूल लगते हैं.

गुण–यह शीतल, स्वादु, वात, और कफकर्त्ता तथा गुरु है.

७६. केवडा.

नाम–सं. केतकी म. केवडा.

वर्णन—इसका पेड ६ से ८ हाथ ऊंचा होता है. यह वृक्ष बहुत स्थानोंमें होता है पान इसके कांटेदार होते हैं, और इसका वन सघन होता है. सफेद और पीली इसकी दो जात हैं सफेदको केवडा और पीलेको केतकी कहते हैं. केतकीमें सुगंधि बहुत, और पत्ते अति सुकुमार

होते हैं. श्रावणमें केवडेका और माघ–फाल्गुनमें केतकीका भराव होता है. सफेद केवडा बारहों महीना रहता है. केवडेके वनमें सर्प अवश्य रहता है. कर्नाटकमें इसके पत्तोंसे छाते और चटाइयां बनाई जाती है. पत्ते मरादियोंके बडे कामके होते हैं. केवडेका बडा सुगंधित तेल निकलता है. इसके पानमें जो कत्थेकी गोलियां बनाई जाती हैं, वे बडी सुगंधित होती हैं. केवडाके भीतर जो सरा होता है, उसकी भाजी बनती है.

गुण—सफेद केवडा—तीखा, मीठा, कडवा, हलका; और विष तथा कफनाशक है. इसके फूल–हलके, तीखे, कडवे, कांतिवर्धक, गरम; और वायु, कफ तथा वाठोंकी दुर्गावनाशक हैं. इसकी केशर-शिखाके नाशक और कुछ गरम है. इसका फल–मीठा और वायु, प्रमेह तथा कफनाशक है. सुवर्ण (पीला) केवडा—कडवा नेत्रोंको हितकर, गरम, हलका, तीखा, मीठा और विषदोष तथा कफनाशक हैं. इसका फूल–सुखकर, कोमादीपन, कुछ गरम, कडवा, तीखा, नेत्रको हितकर और सुगंधित है. इसके ऊपरसे लटकनेवाले तंतु–बडे ठंडे, देहको दृढ करनेवाले, तीखे, बलकर, रसायन; और पित्त तथा कफनाशक हैं. इसके फल और केशरका गुण सफेद केवडेके फल और केशरके समान है.

औषधिप्रयोग—(१) रक्तप्रदरपर—केवडेकी जड पानीमें घिसकर मिश्रीमें मिलाकर देना. (२) अपस्मार (मृगी) पर—केवडेकी बाल (सरा) का चूरा तंबाकूकी तरह सूंघना. (३) गरमीसे माथा दुखता होतो–केवडाका पानी और सफेद चंदन घिसकर काचकी शिशीमें भरकर बारीक कपडेसे मुंह बांधना और उसको बारबार हिलाकर सूंघना. (४) प्रमेहपर–केवडेकी जडको उबालकर निकाला हुआ रस दो तोले और उतनेही शक्कर मिलाकर देना. (५) सब प्रकारकी गरमीपर–के

बडेके पत्तेका रस, जीरा और शक्कर मिलाकर ७ दिन पिलाना. पथ्य-छाछ भात, नमक नहीं. (६) कंठरोगपर-केरडेकी बाडके भीतरी फूलको तंबाकूकी तरह पीना.

७७. मरोडफली.

नाम-सं. ऋद्धि. म. केवण, मुरुडशिंगी.

वर्णन-इसका वृक्ष लगभग ४ हाथ ऊंचा और पत्ते बहुत बडे नहीं होते. इसकी कलियां मरोडदार, अर्थात् रस्सीकी तरह बलदार होती हैं इसीसे इसका नाम 'मरोडफली' पडा है.

गुण-मरोडफली-मधुर, स्निग्ध, मेधाकर, शीतल, कफकर, शुक्रवर्धक, प्राणधारक, ऐश्वर्यकर, बलप्रद, रक्तशुद्धिकर, भारी; और कुष्ट, कृमि, मूर्च्छा, रक्तपित्त, तृषा, क्षय, पित्त, वातरक्त, और उदरनाशक है.

औषधिप्रयोग-(१) छोटे बच्चोंके पेटमें मरोडा, आदि न होनेके-लिये-बालघूंटी अर्थात् जन्मघूंटीमें मरोडफली घिसकर देना. (२) कानमें कनखजूरा घुस गया होतो-रेंडीके तेलमें मरोडफलीकी जड घिसकर १०।१५ बार कानमें डालना. इससे शीघ्र मरकर फूल जाता और ऊपर आता है (३) मरोडे चलते होंतो-छाछमें इसकी जड पीसकर देना. (४) फोडे और घाव आदिपर-मरोडफलीकी जड पीसकर लगाना.

७८. केकती

वर्णन-घासपानके पत्ते जैसे इसके भी पत्ते होते हैं परन्तु ये चौडे कुछ कम होते हैं. पत्तोंके अंतमें भारी ऐसे कांटे होते हैं यह वृक्ष सर्वत्र होता है. इसके पत्ते भिगोकर उनकी रस्सी बनाई जाती है जो बडी मजबूत होती है पत्तोंमें एक सीधी और खडी लकडी निकलती है जो छातेकी डंडी बनानेमें काम आती है. इसको मराठीमें कोई 'वायाळ' भी कहते हैं.

औषधिप्रयोग-(१) कडू (खुजली) पर-इसके पत्तोंका रस शरीरमें मालिश करना. इससे जलन होती है यदि जलन अधिक होतो गोबर लगाकर ठंडे पानीसे स्नानकर डालना.

७९. केशर.

नाम-सं. म. केशर. गु. केसर.

वर्णन-केशर नेपाल और इंग्लंडमें होती है. इसका पेड छोटा होता है. इसकी जड दो दो हाथ अंतरसे कतारमें लगाई जाती है. लगानेसे दो तीन महीने बाद इसका पेड बडा होकर फूल लगने लगते हैं. फूलोंमें तीन २ पखडियां और भीतर तंतु होता है. यह तंतुही केशर है. केशरका रंग लाल और तंतु जितना लंबा उतनीही केशर बढिया समझी जाती है. सालभर रहनेसे केशर बिगड जाती है. केशरमें गंध अच्छी होती है. रंग और दवामें यह काम आती है.

गुण-केशर-सुगंधित, कडवी, तीखी, रुचिकर, आनंदकारक, गरम, कान्तिकर, कसेली. चिकनी; और कंठरोग, वायु, कफ, खासी, मस्तकशूल, विष, वांति, व्रण, व्यंग, कृमि, हिचकी, त्रिदोष तथा कुष्टनाशक है.

औषधिप्रयोग-(१) रक्तपित्तपर-बकरीके दूधमें केशर उबालकर देना और दूध भात खिलाना (२) शरीरमेंसे रक्त जाता होतो-शहदके साथ केशर देना. (३) पीनसरोगपर-घीमें केशर घिसकर नास लेना (४) आधाशीशीपर-घी और केशर पीसकर नास लेना. (५) अजीर्णपर-नीबूके रसमें केशर देना. (६) मृत्तिकाजन्य पांडुरोगपर-केशर, मुलहठी, पीपर, और निसोथके कायका मट्टीमें ४ पुट लगाना और वह मट्टी खिलाना. इससे खाई हुई मट्टी निकल जाती है. (७) मस्तकरोगपर-केशर और बदामको गायके दूधमे पीसकर नास लेना. (८) आंखोंके जलनपर-शहदमें केशर घोटकर आंजना. (९) मूत्राघातपर-रातको केशर भिगो देना; और सवेरे शहद मिलाकर पिलाना. (१०) मूत्रम रक्त जाती है उसपर-पुराने घीमें केशर पीसकर तीन दिनतक खाना. (११)कामिनीपर-केशर और कपूर दूधके साथ देना. (१२) गर्भिणीके रक्तस्राव, और पेट दुखनेपर-पानीका जल निकले हुये गायके १ तोला मक्खनमें २ मासे केशर मिलाकर देना.

८०. केला.

नाम—सं. कदली. गु. केर. म. केळ.

वर्णन—यह वृक्ष प्रायः सब जगह होता है. जडमेंसे जो अंकुर निकलता उसीको अन्यत्र लगा देनेसे पेड लगा जाता है. केल लगभग २० जातिकी होती है. गोमांतक, कर्नाटक और बसई (बंबई) प्रांतमें इसकी अधिक उत्पत्ति है. बसई प्रांतके आगाशी गांवमें लोग केलोंको सुखा लेते हैं और फिर बेचनेको अन्यत्र भेजते हैं. बरसातके दिनमें जो केल अपनेआप लगती है उसको वनकेल कहते हैं. कच्चे केलेकी, केलके फूलकी और केलके भीतरी मुलाइम हिस्से (गाभे)की तरकारी बनती है. छिलकेकी राख रंगनेमें बहुत काम आती है. रंगरेज और जुलाहे सूत रंगनेमें इसका बहुत उपयोग करते हैं. पक्के केलेकी चटनी बनती है. शस्त्रोंपर पानी चढानेमेंभी केल बडा काम देती है. पत्तोंके डंठल जलाकर क्षार बनाया जाता है. कोंकनवाले उस क्षारको साबुनके बदलेमें काम लेते हैं. दिहातोंमें जहा वैसे नहीं होता वहा लोग केलके भीतरका चेंप घावोंपर लगाते हैं और उससे घाव भर जाते हैं. पक्के केलेका खानेमें उपयोग होता है. वनकेल खानेमें काम नहीं आती. उसके तो केवल कच्चे फल, फूल और भीतरी गाभेकी तरकारी बनती है तथा पत्ते पत्तलके काममें आते हैं. गरीब लोग उसकी गाठ जमीनसे निकालकर सुखा लेते और पीसकर उसके आटेसे रोटी बनाते हैं.

गुण—केला–ठंडा, भारी, वृष्य, चिकना, मीठा; और पित्त, रक्तविकार, योनिदोष, पथरी, और रक्तपित्तनाशक है. पक्के फल–बल्कार, कसैले, मीठे, भारी, ठंडे, वृष्य, शुक्रवर्धक, संतर्पण; और मांस, कान्ति, रुचि बढानेवाले, दुष्पच, कफकारक तथा तृषा, ग्लानि, पित्त, रक्तविकार प्रमेह, क्षुधा और नेत्ररोगका नाश करनेवाले हैं. मंदाग्निवाला मनुष्य केला खा लेतो उसको विकार होजाता है. फूल–मधुर, गुरु, स्निग्ध, कसैला, ग्राहक, कडवा, अग्निदीपक, वातनाशक, कुछ उष्णवीर्य; और रक्तपित्त, क्षय, कृमि और कफनाशक है. केलेका सार-

ग्राहक, अग्निप्रद, गुरु, शीत; और तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, अतिसार, सोमरोग, अस्थिस्राव, रक्तपित्त और विस्फोटकनाशक है. केलेका कंद (गांठ)—रूक्ष, बातल, गुरु, शीत, मलकर, कसेला, मधुर, केश्य, रुच्य, अग्निमांद्यकर; और कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रक्तदोष, सोमरोग, रजोदोष, कृमि और कुष्ठनाशक है. केलेका पानी—शीतल, ग्राहक; और मूत्रकृच्छ्र, मेह, तृषा, कर्णरोग, अतिसार, अस्थिस्राव, रक्तपित्त, विस्फोट, रक्तदोष, योनिदोष और दाहनाशक है. बनकेला—शीतल, मधुर, बलवर्धक, वीर्यवर्धक, रुच्य, दुष्पच, जड, और तृषा, दाह, शोष, पित्तनाशक है. इसका फल—कसेला, मधुर, और गुरु होता है.

औषधिप्रयोग-(१) पेटमें विष पहुंच गया होतो-केलेके वृक्षके भीतरी भाग (गाभा) का रस पिलाना. (२) पागल कुत्तेके विषपर-पक्के बनकेलेके बीज खिलाना और पीसकर लेप करना. (३) श्वासपर-केलेके भीतरका रेशेवाला भाग कुरेदकर उसमें काली मिरचका चूर्ण भर देना और रात्रीभर वैसाही रख छोडना. प्रातःकाल उसको मंद अग्नीपर भूनकर खाजाना. इससे श्वासरोग तुरंत मिटता है. (४) सुखसे प्रसूति होनेकेलिये-केलेकी गांठ कमरमें बांधना और प्रसूत होजानेपर खोल फेंकना. (५) हिचकीपर-बनकेलेके पत्तेकी राख १ माशा शहद १ तोलामें मिलाकर चटाना. (६) सूजनपर-गेहूंका आटा और पक्का केला पानीमें मिलाकर गरम २ लेप करना. (७) सोमल (संखिया) के विषपर-छिलकेका पावसेर रस पिलाना. (८) जीभपर-फुन्सी आती है उसपर-गायके दहीके साथ सूर्योदयके पूर्व पक्का केला खाना. (९) कामरपर-शहदमें मिलाकर पक्का केला खाना. (१०) भस्मकरोगपर घीमें केलेका श्रीखंड बनाकर खाना; अथवा केलेके वृक्षके स्तंभकाका पानी निकालकर पीना. (११) प्रदररोगपर और सोमरोग (मूत्रातिसारके समान एक रोग) पर-पक्का केला, आंवलेका रस और दुगनी शक्कर मिलाकर देना. (१२) मूत्रकृच्छ्रपर--गायके मूत्रमें केलेकी गांठका रस मिलाकर देना. (१३) दाह शमन करनेकेलिये-केले और कमलके पत्तोंपर सु-

खाना. (१४) बच्चोंके दंतोद्भव रोगपर—केलेके फूलोंमेसे जो बारीक तंतु गिरकर पड़ा करते हैं, उनके रसमें जीरा और मिश्रीका चूर्ण मिलाकर बच्चेकी शक्तिके अनुसार ४ से ६ माशेतक नित्य एकबार ७ दिनतक खिलाना; और केवल यही रस दम बीसबार मसूडोंपर लगाना. इससे ज्वर आदि शमन होता है. (१५) सीतल (चेचक) का जोर कम होनेके-लिये बनकेलके बीज भैंसके दूधमें पीस छानकर पिलाना. (१६) मु-त्राघात अर्थात् मूत्र बंद होनेपर—केलेके वृक्षकी छालका रस ३।४ तोला लेना और १।२ तोला घी मिलाकर पिलाना. यह रसमें मिला हु-आ घी पेटमें पहुँचतेही निकलनेका यत्न करता है. इससे मूत्रमार्ग तुरंत खुल जाता है. पुरुषोंसेभी स्त्रियोंको बहुत शीघ्र लाभ होता है. (१७) प्रदर और धातुविकारपर—इक २ पक्का केला नित्य सायं प्रातः आधा तोला घीके साथ खाना चाहिये. आठही दिनमें फायदा होता है. जो किसीके इस दवासे सरदी होने लगे तो साथमें चार बूंद शहद और मि-श्री लेना (१८) गाय सोमल खागई होतो—केलेके १ सेर रसमें १० तोला फटकिरी और १ तोला सफेद कत्था मिलाकर देना. (१९) पित्तरोगपर—पक्के केले और घी देना. (२०) गायके मूत्रावरोधपर के-लेके वृक्षकी छालका १ सेर रस, गेरू १ तोला और ४ रत्ती काली मिरच तथा थोड़ा खोरा मिलाकर पिलाना. (२१) केला खानेसे अजीर्ण हुआ होतो—इलायची खाना. (२२) केला जल्दी पकानेकेलिये-केलेके फलोंके गुच्छमें ४।६ अंगुल डंडी रखकर शेष भागको काट डा-लना; और उसमें सीकसे छेद करके इलायचीका चूर्ण भर देना. बहुतसे केलोंपर यदि थोडासा इलायचीका चूर्ण डाल दिया जायतो केले सड जाते हैं. (२३) प्रदररोगपर—केलेके पत्ते बारीक पीसकर दूधमें खीर बनाकर दो तीन दिन खाना. (२४) उबकाईपर—केलेकी गाठका रस शहदके साथ देना. (२५) शरीरम फूट निकली हुई गरमी और प्रमेहपर—केलेके वृक्षका भीतरी नरम भाग (गाभा) छायामें सुखाकर चूर्ण करना और शक्कर तथा पानीके साथ खाना.

८१. कोठिंबर. (यह नाम मराठी है.)

यह कारिटाकी जात है परंतु वह बहुत कडवा होता है; इससे इसको मीठा कारिट करें तो कुछ चिंता नहीं. गुजराथमें यह बहुत होता है. इसकी भाजी बनती है और सुखाकर भोजनके साथभी खाया जाता है. इसमेंभी कडवी और मीठी दो जात हैं.

८२. धनिया.

नाम. सं. कुस्तुंबरी म. कोथिंबीर.

वर्णन—यह सर्वत्र प्रसिद्ध है. भोजन बनानेमें इसकी नित्यही अवश्यकता पडती है. इसके पौधेमें जो बीज लगते हैं; वेही धनिया कहलाते हैं. धनिया मसालेमें डाला जाता है. यह स्वादिष्ट, ठंडा और पित्तनाशक होता है. धनिया फोडकर कूंडीमें लगा देनेसे थोडे दिनोंमें ऊग उठता है. हरे धनियेकी चटनी होती है.

गुण—धनिया—मधुर, हृद्य, कषैला, दीपन, स्निग्ध, कडवा, कुछ उष्ण, अवृष्य, मूत्रल, हलका, पाचक, ग्राहक, रुचिकर; और तृषा, दाह, अतिसार, खासी, पित्त, ज्वर, वांति, कफ, दमा, त्रिदोष, अर्श, कृमि, और विशेषकर पित्तका नाश करनेवाला है.

औषधिप्रयोग—(१) नाभी उथलनेपर—हरी धनिया पीसकर लगाना. (२) शरीरमेंसे सीतलाकी गरमी निकालनेकेलिये—सीतला अच्छी तरह निकल जानेपर धनिया और जीरा रातको चौगुने पानीमें भिगो देना और सबेरे पीस छान मिश्री मिलाकर देना. ४।५ दिनतक ऐसा करना. (३) आमपर—धनिये और सोंठके क्वाथमें एरंड (रेंडी) की जडका चूर्ण डालकर देना. (४) अरुचिपर—धनिया, इलायची और काली मिरचका चूर्ण घी शक्करमें देना. (५) दाह और तृषापर—धनिया, अडूसा, आंवला, काली दाख, और पित्तपापडा साधारण कूटकर मट्टीके कोरे पात्रमें रखना और पानी डालकर रातभर रख छोडना. सबेरे यह पानी पिलाना. (६) धनियेका चूर्ण—अग्निमंद, श्वास, विषमज्वर, और अजीर्णपर—धनिया, लोंग, निसोथ और सोंठका चूर्ण गरम पानीमें

देना. (७) ज्वरपर पाचन—धनिया, देवदार, सोंठ, कटैया (कटेळी), और बडी कटैयाका क्वाथ देना. (८) पित्तज्वर और अंतर्दाहपर—धनिया, और खानेके पान रातको पानीमें भिगो देना; और सवेरे उसको पकाकर गाढा पीने योग्य करके ठंडा होनेपर पी लेना. (९) दाहपर—रातको धनिया पानीमें भिगो देना; और सवेरे उसे छानकर १ तोला मिश्री मिलाकर वह पानी पिलाना. (१०) मूत्राघातपर—धनिया और गोखरूका क्वाथ घी डालकर देना. (११) जमालगोटाके विषपर—धनिया, शक्कर और दहीं मिलाकर देना. (१२) गर्भिणीकी उबकाई—पर—धनियाका चूर्ण ३ माशे और शक्कर १ तोला चांवलोंके धोवनमें देना, अथवा धनियाका कल्क चांवलोंके धोवनमें शक्कर डालकर देना. (१३) रक्तपित्तपर—धनिया, किशीमश और बेदानाका क्वाथ देना. (१४) बालकके शूल, आम और अजीर्णपर—धनिया और सोंठका क्वाथ देना. (१५) बालकोंकी, आख उठनेपर—धनियाकी पुटरिया पानीमें भिगोकर वारवार लगाना.(१६) लू और आगकी गरमी न लगनेकेलिये—धनिया पानीमें मीसकर मिश्री मिलाकर पिलाना. (१७) बालकोंकी खासी और दमापर—धनिया और मिश्री चांवलोंके धोवनमें पीस छानकर देना. (१८) तृष्णारोगपर—धनिया पानीमें पीस छान शहद, शक्कर मिलाकर रख लेना और वारंवार देना.

८३. गोभी.

नाम—सं. पेली म. कोबी.

वर्णन—इसको कोबीभी कहते हैं. यह तरकारी अंग्रेजोंकी विलायतसे आई है. अंग्रेजोंके आने पूर्व यहावाले इसको जानतेभी नहीं थे. यह तीन चार प्रकारकी होती है, जिसमें गट्टावाली अच्छी होती है. यह तरकारी अच्छी पौष्टिक है.

गुण — कंदवाली कोबी — मीठी, रूखी, स्वच्छ, शीतल, भेदक, ग्राहक, रुचिकर, भारी; और पित्त, कफ तथा वायुनाशक है. इसके कंदमेंभी येही गुण हैं. गाठ गोभी (जिसमें पत्तोंकी एक तहदार गांठ

होती है) मधुर, वृष्य, पाककालमें – तीखी, कडवी, ग्राहक, शीतल, लघु, पाचक, अग्निदीपक, हृद्य, वातकर, और कफ, पित्त, ज्वर, प्रमेह, कुष्ट, खांसी, रक्तदोप और पित्तजन्य भ्रमनाशक है.

८४. पीला कचनार

नाम – स. कोविदार. म कोरला.

वर्णन – यह कचनारकी जात३। एक जंगली वृक्ष है इसके पत्ते कचनार जैसेही होते है जेठ–आपाढमे इसमें नये पत्ते लगते है जिनकी भाजी निर्मल और रुचिकर होती है.

गुण – यह दीपन, कषैला, व्रण रोपण, संग्राहक, सारक, स्वादिष्ट; और मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोप, शोप, दाह, कफ और वायुनाशक है. पत्ते भाजीकेलिये अच्छे हैं. फूलमें लाल कचनार जैसे गुण है.

८५. कट शरैणा.

नाम-स कुरटक म कोराटी गु कांटा अशेरियो.

वर्णन- यह पुष्पवृक्ष ३।४ हाथ ऊंचा और कांटेदार होता है. इसकी सफेद, पीली, लाल, और नीली चार जात हैं फूल इसका बिना सुगंध-का होता है

गुण–सफेद कट शरैणा–कडवा, केश्य, स्निग्ध, मधुर, तीखा, गरम, दांतोको हितकर, और कुष्ट, वात, रक्तदोप, कफ, कंडू, विष, और बालपकने झुर्रियां आदि वृद्धापेकेल क्षणोंका नाश करनेवाला है. लाल कट शरैणा–कडवा, वर्णकारक, उष्ण, तीखा, और शोथ, ज्वर, वात, रोग, कफ, रक्तविकार, पित्त, आध्मान, शूल, दमा, और खांसीनाशक है. पीला कट शरैणा–उष्ण, कडवा, कषैला, अग्निदीपक, और वायु, कफ, कंडू, सूजन, रक्तविकार और त्वचादोपनाशक है पीला कट शरैणा–कडवा, तीखा और वात, कफ, सूजन, कंडू, शूल, दुष्ट, व्रण, और त्वचादोपनाशक है

ओषधिप्रयोग–(१) बच्चोंके दुराम सामीपर–इसके पत्तेका रस शहदमें मिलाकर देना. (२) धातुपातपर–सफेद कट शरैणाके पत्तोंका रस जीरा डालकर ७ दिन देना. (३) पित्तपर–कट शरैणा, साठी

तुल्सी और मांगरेके पत्ते पीसकर घीमें देना. (४) डाढ दूखनेपर-पीले कट शैरणाके पत्ते और अक्कलकरा कूटकर डाढके नीचे रखना. (५) मुंह आया होतो- पीले कट शैरणाके पत्ते जामुनकी छाल और आंवलेके काथसे कुल्ली करना. (६) गर्भाधारणकेलिये- कट शैरणाकी जड गायके घीमें मिलाकर ऋतुकालमें देना. (७) दांतोंमेंसे रक्त आता होतो-- इसका रस और शहद दांतोंमें लगाना. (८) दांतके कीडे-पर-- इसके पत्ते चबाकर दांतके नीचे रखना. (९) वातरोगपर - पीला कट शैरणा, देवदार, सोंठका क्वाथ, रेंडीका तेल मिलाकर देना. इससे शरीर वायुसे अटकगी गया होतो अच्छा होजायगा. (१०) सूजनपर--कट शैरणाके पत्तेका रस विषम (दूसरी) ओरके कानमें टपकाना. (११) सुआरोग (प्रमूतरोग) पर--कट शैरणाका क्वाथ पीपरका चूर्ण डालकर देना. अथवा इसकी जड चबाकर खाना. अथवा कट शैरणाका क्वाथ रातभर रखकर सबेरे देना.

८१. कुलींजन.

नाम- सं. कुलिंजन म. कुलिंजन.

वर्णन -आंबा हल्दीकासा इसकाभी पेढ जंगलमें होता है, परंतु उससे यह कुछ बडा होता है. इसके पत्तोंकी सुगंधि मधुर और अग्रका रंग सफेद और तीखा होता है मलबार और गोमांतक प्रांतमें यह पेढ बहुत होता है. इसकी गाठको सुखा लेते हैं. वही कुलींजन होता है. कुलींजनकी गाठके टुकडे करके अचार बनाया जाता है. कुलींजन कुछ तीखा लगता है. उसको ' कोष्ठ कुलींजन ' भी कहते हैं.

गुण-- कुलींजन-- तीखा, कडवा, उष्ण, अग्निदीपक, रुचिकर, स्वर्य, हृद्य, और मुखकंठ शुद्ध करनेवाला, मुखदोष, कफ, खासी और वायुनाशक है. बडा कुलींजन कम गुणकारी होता है.

औषाधिप्रयोग- (१) एक जातकी खासीपर-- अग्रकी कढी बनाकर देना अथवा उसका रस देना. (२) मस्तकपीडापर-- कुलींजनका चूर्ण सूंघना. इससे छींकें आकर मस्तक हलका होगा. (३) वायुसे शरीर अटक गया होतो कुलींजनका चूर्ण अंगमें मलना. (४) स्वरभेदपर--कुलींजन मुंहमें रखकर उसका रस उतारना. (५) अपच-

नपर—कुलींजन और सेंधा नमक कोशमके तेलमें मिलाकर कुछ गरम करना और देहपर मलना. इससे हाथ, पैर, पेट, गरदन, आदिका शूल दूर होता है. (६) उबकाईपर — कुलींजनका रस १ तोला, नीबूका रस १, तोला, अदरखका रस १ तोला और मिश्री १॥ तोला आगपर पकाकर रख छोडना इसमेंसे तीन दिनतक नित्य दो बार आधा २ तोला देना (७) बहुमूत्रपर — कुलींजनका, अष्टमाश काथ दिनमें दो बार देना. (८) बच्चोंके अतिसारपर — कुलींजनको छाछमें घिसना और थोडी हींग डालकर कढी बनाकर देना. (९) स्वरभंगपर मुहमें कुलींजन रख कर उसका रस लेना. (१०) मुखकी दुर्गंधि दूर करनेकेलिये कुलीं जनका चूर्ण शहदमें मिलाकर दांतोंपर लगते रहना. (११) दांतके रोगोंपर कुलींजनका चूर्ण शहदमें मिलाकर दांतोंपर घिसना.

८७ कोशम

नाम — स कोशाम्र म. कार्शीव.

वर्णन— इसके वृक्ष बडे २ होते हैं. पहाडी प्रदेशोंमें इसकी उत्पत्ति होती है कोंकन प्रांतमें यह बहुत होता है. लकडी इसकी चिम्मट होती है इसकी भीतरी लकडी लालसे रंगकी होती है. बीजका तेल निकलता है.

गुण— कोशम — खट्टा, गुरु, शोफकर, पित्तल, कफकर, कोष्ठशो धक और वायु, कुष्ट, अर्श, सूजन, पित्तव्रण, रक्तपित्त, तथा रक्तरोग-नाशक है. पक्के फल—लघु, अग्निदीपक, रुचिकर, स्निग्ध, उष्ण, मधुर, मलकर, हृद्य, वृष्य, और कफ—वातनाशक है. बीजका तेल—कडवा, मधुर, बल्य, पथ्य, रुचिकर, पाचक, दस्तावर और कृमि, कुष्ट, व्रण-नाशक है.

औषधिप्रयोग — (१) जुलाब — कोशमका तेल गरम पानीके साथ लेना (२) खुजली, व्रण और कुष्टपर — इसका तेल लगाना

८८. कूट.

नाम — स गु. कुठ म कोष्ठ

वर्णन — उसकी उत्पत्ति कश्मीरमें होती है पोखरमूल नामकी जो औषधि है वह इसीकी एक जात है

गुण – कूट – उष्ण, तीखा, कडवा, मीठा, वृष्य, शुक्रल, रसायन, कांतिवर्धक, लघु, वात–कफनाशक और कुष्ट, विष, विसर्प, कंडू, दाद, त्रिदोष, पामा, रक्तदोष, खांसी, वांति और तृषानाशक है. लेप करनेमें यह वातव्याधिनाशक है.

औषधिप्रयोग – (१) मस्तकपीडापर – कूट और अरंडकी जड़ कांजीमें पीसकर लेप करना. (२) गुल्मपर– कूट, सज्जी और केतकीका क्षार तेलमें मिलाकर देना. (३) वातव्याधिपर–कूट घिसकर लेप करना.

८९. पेठा.

नाम- सं- कूष्मांड- म कोहोळा.

वर्णन– इसकी बेल गिरा जैसी होती है. फल छोटे कोहडे जैसा होता है. कोई २ पेठा तो हाथ डेढ हाथ लंबा होता है. भूमि अच्छी होतो एक बेलमें ९०।६० पेठे लगते हैं. इसका पाक बड़ा पौष्टिक होता है. इसकी तरकारी बनती है. पेठा बहुत ठंडा होता है. पुराना बैंगन और नया पेठा खाना नहीं चाहिये. क्योंकि वे विष जैसे हानिकर होते हैं. इसका प्रमाण यह है – ' वृंताक बहुबीजाना कूष्मांडं कोमलं विषम् ' । पेठा एक वर्षतक ठहरता है.

गुण पेठा -वृष्य, पुष्टिकर, धातुवर्धक, बस्तिशुद्धिकारक, बलकर, अतिमीठा, शीतल, गुरु, रूक्ष, सारक, हृद्य, कफकर, और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, अरुचि, वातपित्त, रक्तविकार, वायु और रेतोविकारनाशक हैं. कोमल पेठा–अतिशीत, दोषकर और पित्तहर है. पुराना पेठा-कफकारक होता है. पक्का पेठा–कुछ ठंडा, दीपक, लघु, स्वाद, खारा, बस्तिशुद्धिकारक, सर्वदोषनाशक और पथ्य है. पेठेका गूदा- मीठा, बस्तिशुद्धिकारक, वृष्य और पित्तनाशक है.

औषधिप्रयोग-(१) स्थावर और जंगम विषपर– पेठेका रस पिलाना या टुकडा खिलाना. (२) मद्य और कोद्रूके विषपर– इसका रस

गुड मिलाकर पिलाना. (३) अपस्मारपर–इसके गूदेके र
में मुलहटी मिलाकर देना. (४) उन्मादपर–पेठेके रसमें कोष्ठ कुलींज
का चूर्ण और शहद मिलाकर देना. (५) कांवरपर-पेठेके पत्ते पीस
हलदी मिलाना और दहीके साथ ७ दिनतक देना.(६)अम्लपित्तपर- र
शक्कर मिलाकर देना. (७) रक्तशूलपर–पेठेके गूदेके रसमें दो तोले र
खका चूर्ण मिलाकर देना. (८)श्वासकासपर– पेठेकी जडका चूर्ण गु
गुने पानीके साथ देना. (९) शूलपर- पेठेको छीलकर टुकडे करना अ
उनको धुप सुखाकर बरतनमें डालकर चूल्हेपर चढाना. ऊपरसे बरतन
मुंह ढांककर नीचेसे आग लगाना. जब टुकडे जलकर कोयले होंगा
परंतु राख न होने पावें तब पानी डालकर बुझा देना. ठंडा होनेपर उसव
चूर्ण २ माशा, और सोंठका चूर्ण २माशा मिलाकर गरम पानीके सा
नित्य खिलाना. इससे असाध्य शूलभी नाश होजायगा.(१०) पथर
और शर्करारोगपर-पेठेके रसमें हींग और जौखार मिलाकर देना

९० तालमखाना.

नाम – सं. कोकिलाक्ष. गु. एखरो. म. कोळसुंदा.

वर्णन – तालमखाना कोंकन प्रांत और अन्य स्थानोंमें खेतोंकी मेंड
और नालोंके किनारेपर होता है. वहांपर इसको गायेंभी नहीं खातीं. पेड
इसका २।२॥ हाथ ऊंचा होता है. नरम पत्तोंकी भाजी बनती है. पत्ता
इसका लंबा और पत्ते २ के नीचे एक २ कांटा होता है. मराठीमें इसको
कोळसा, विखारा और कोलिस्तापी कहते हैं. इसी पेडके बीज 'तालमखाना'
कहलाते हैं. पानी लगनेसे ये बीज चिकने हो जाते हैं.

औषधिप्रयोग – (१) अतिसारपर – दहीमें पीसकर तालमखा-
ना देना. (२) क्षतकासपर – तालमखानेका चूर्ण शहद और ताजा
घीके साथ देना. (३) धातुपुष्टकेलिये – तालमखानेका चूर्ण शक्करके
साथ खाना और ऊपरसे स्तनोष्ण दूध पीना अथवा तालमखाना, मूसली
और गोखरूका चूर्ण गायके दूधमें शक्कर डालकर लेना. (४) प्रमेह-
पर – दूधमें पकाकर तालमखाने खिलाना. (५) योनिसंकोच करनेके-

क्रिये—तालमखानेके काथमें उसीका चूर्ण डालकर भीतर लेप करना. (६) पुष्टिकारक पाक— तालमखाना, गोखरू, कौंचके बीज, बलबीज, काली मुसली, शतावरी, सालिममिश्री, पंजाबी मिश्री और सफेद गुलबासकी जड अथवा चोपचीनीका चूर्ण घीमें साधारण तल लेना और शक्करकी चासनी तथा दूधका खोया मिलाकर एक जीवकर लेना. फिर उसमें बादाम, चिरोंजी, पिस्ता, किशमिश, अखरोट, इलायची, केशर, लौंग, जायफल, जायपत्री, दालचीनी, गिलोयका सत्त्व, आदि डालकर रख देना. इसमेसे नित्य २ तोले खाकर ऊपरसे गायका कच्चा दूध पीना.

९१. खजूर. (पिंड खजूर.)

नाम— स. खर्जूर. गु खजारिओ. म. खजूर

वर्णन — ताड और नारियलकी तरह खजूरका पेडभी ऊचा होता है. हमारे देशमें खजूरके वृक्ष बहुत हैं परतु उनमें फल लगता नहीं और लगता है वहभी अच्छी तरह नहीं पकता.क्यों कि एक तो यहाकी वायु उसके अनुकूल नहीं होती और दूसरे यहावालोंको पकानेकी क्रियाभी मालूम नहीं है. अरबस्थान और इरानमें इसकी उत्पत्ति बहुत होती है. जो फल अध पकेही सूख जाते हैं वे खारक (छुहारे) होजाते हैं. अरबके लोग खजूर खाकरही कई दिन निकाल देते हैं. खजूर पाचक और पौष्टिक है.इसके बीजोंका तेल जलाने और दवाके काममें आता है और खली गायोंको दी जाती है. खजूरके पेडके पत्तोंकी चटाई और झाडू बनती हैं लकडी इसकी घरके कामोंमे आती है. गरमीके दिनोंमें खजूरका शरबत पिया जाता है. पानी मिलनेसे वह समशीतोष्ण होजाता है. छुहारेका बीज बच्चोंको बालघूटीमें घिसकर दिया जाता है.

गुण पिंडखजूर—वृष्य, स्वादिष्ट, शीत, गुरु और अग्निमांद्य, कृमि, धातुवृद्धि, तृप्ति और पुष्टिकर्ता तथा हृद्य, बल्य, दुष्पच और स्निग्ध है. पाककाल और रसकालमें वह मिष्ट और रक्तपित्त, पित्त, दाह, श्वास, कफ, श्रम, क्षतक्षय, विष, तृषा, शोष और आम्लपित्तनाशक है. सुलेमानी छुहारा- भ्रांति, श्रम, मूर्च्छा, रक्तपित्त और दाहनाशक है.

औषधिप्रयोग-(१)दस्तोंकेलिये- रातको खजूर भिगो देना और सवेरे उसको निचोडकर फेंक देना और पानी पिलाना इससे दस्त आवेंगे (२) अर्शपर- छुआरेके बीज बारीक पीसकर धूनी लेना. (३) अग्निपीडिका (जो मस्तकमें होती है।) छुहारेके बीजोंकी राख और कपूरको घीमें मिलाकर लेप करना (४) सिर दुखनेपर—छुहारेके बीज घिसकर माथेपर लेप करना (५)घोडेको सरदी होगई होतो छुआरेके बीजोंका चर्ण आटेमें मिलाकर देना (६) आमवातपर पावसेर खजूर निचोडकर पिलाना. (७) धातुपुष्ट करने और पित्त शमन करनेकेलिये-खजूरके बीज निकालकर छुहारोंको साधारण कूटना और बादाम, बेदाणा, पिस्ता, चिरोंजी, मिश्रीका चूर्ण आदि मसाला मिलाकर भीगने योग्य पिघले हुए घीमें भिगो देना. पूरे ८ दिन पीछे नित्य प्रातःकाल २तोला उसमेंसे लेकर खाना. (८) शीतज्वरपर छुहारेके बीज और ओंगाकी जड ठंडे पानीमें चंदनकी तरह घिसकर खानेके पानमें चूनेकी तरह ४ रत्ती लगाना, और लौंग, सुपारी, इलायची, कत्था आदि लगाकर तीन पान तैयार करना. ज्वर आनेके समयसे पूर्व एक२घडीके अंतरसे तीनों पान खा लेना. तीन दिनतक इस तरह करनेसे एकांतर आदि ज्वर मिटता है (९)जीर्णज्वरपर छुहारा,दाख, सोंठ,शक्कर और घी दूधमें डालना और उबालकर पीना (१०)दाह होता होतो आधपाव खजूर पानीमें पीसकर पी जाना. (११) चैतन्य प्राप्त होनेकेलिये—मक्खन और छुहारा खाते रहना (१२) धनुर्वात और रक्तपित्तपर—छुहारेके रस (लुआब)में अडीका तेल मिलाकर पीना. (१३) बच्चोंकेलिये शक्तिवर्धक भक्ष्य बच्चेकी शक्तिके अनुसार ६ माशेसे लेकर ३ तोलेतक उत्तम खजूर लेकर पानीसे धोकर पोंछ डालना. और बीज निकालकर दूधमें भिगो देना थोडी देरमें अच्छी तरह पीसकर कपडेमें छान लेना और दिनमें तीन बार वह रस पिलाना. स्मरण रहे कि एकमहीनेसे कम उमरके बालकको यह रस न देना. और प्रतिवार ताजा रस निकालकर देना (१४) ठंडी हवा हो, अथवा बच्चेके सरदीका विकार होतो अच्छा छुहारा लेकर गीले कपडेसे पोंछ डालना

और बीज निकालकर दूधमें घिसकर चटाना अथवा पतला करके पिलाना. यह दवा छोटे बच्चेको न देना.मोटको देना चाहिये. छोटे बच्चेको देनेसे पेटमें जाला बंध जाता है और गरमी होती है. (१५) मद्यको उतार—खजूरको भिगोकर मलना और छानकर पिलाना. (१६) मदरपर— बीज निकले हुए छुहारेको कूटकर घीमें तलना और गोपीचंदनका चूर्ण डालकर खिलाना. (१७) रक्तपित्तपर—खजूर शाहदके साथ खाना.

९२. खरखटी. (यह नाम मराठी है.)

वर्णन—इसका पेड १० । १२ हाथ ऊंचा बढता है. इसके पत्ते धामिनके पत्ते जैसे और उनसे बारीक होते हैं. इसमें चार २ पांच २ फूलोंका एक २ गुच्छा लगता है. इसके फल खानेमें कुछ मीठे लगते हैं.

औषधिप्रयोग— (१) पुष्टाईकेलिये- इसकी जड दूधमें पीसकर देना. (२) आमरक्त पडता होतो- इसकी जड दूधमें पानी पीसकर देना. (३) वातरक्तपर-- रोगीको इसकी जड अपने बिलकुल पास और इसकी लकडी हाथमें रखना चाहिये. सूजनपर और गांठपर इसकी जड घिसकर लगाना और दोनों बार ,४२ दिनतक गायके पावसेर दूधमें इसकी जड ३ माशे सफेद गुलबासकी जड २ तोले और गंगेरनकी जड ६ माशे घिसकर पिलाना. (४) अतिसारपर- इसकी जड छाछमें पीसकर देना.

९३. खरबूजा.

नाम-सं मधुपाका. मधुफला म. खरबूज.

वर्णन--तरबूज कीसीही इसकीभी बेल होती है. खरबूजा गोल और बाहरसे लाल रंगका होता है. यह खानेमें अच्छा लगता है. तरकारीभी इसकी अच्छी बनती है. जो खरबूजा भीतरसे नीला होता है वह खानेमें बहुत अच्छा होता है. खरबूजा अधिक खानेसे गरमीका उपद्रव होने लगता है.

औषधिप्रयोग—(१) आगकी ज्वाला (लुक्क) लग गई होतो-खरबूजेके बीज पीसकर माथेपर लगाना और उसका रस शरीरपर मलना.

९४. मेढाशिंगी.

नाम-- सं. मेषशृंगी. म. सरशिंग.

वर्णन—इसका वृक्ष बडा और कोंकन प्रांतमें बहुत होता है. इसके प नीम जैसे और उसके लंबे होते हैं. इसमें चपटी एक अंगुल मोटी औ लगभग पौन हाथ लंबी फालियां लगती हैं. यह फली और वृक्ष पंचाग कडवा होता है. लकडी इसकी साधारण काममें आती और तबले तथा मृदंग उसकी अच्छी होती है.

गुण—मेढाशिंगी—कडवी, वातहर्ता और कृमि, कुष्ट तथा वायु नाशक है.

औषधिप्रयोग—(१) नल फूलने और पेटशूलपर- इसके पत्ते या छालका रस पिलाना (२) कृमिपर पत्ते या छालका रस देना अथवा छालका क्वाथ देना. (३) खुजली और खरूजपर- इसकी लकडीका पातालयंत्रसे तेल निकालकर लगाना.

९५ खरशिंगी. (यह नाम मराठी है.)

नाम-स. खरशृंगिका.

वर्णन—पेड इसका बडा होता है पत्ते इसके सोनापाठा (अरलू) जैसे होते हैं हाथ डेढ हाथ लंबी और अंगूठे जैसी मोटी इसमें फलियां लगती हैं. इनको मराठीमें 'खरशिंगा' कहते हैं. उसमें उग्र गंध होती है. फलीके टुकडे करके तरकारी बनाई जाती है और अचारभी होता है.

औषधिप्रयोग—(१) खुजलीपर— इसके पेडकी छालका पाताल-यंत्रसे तेल निकालकर लगाना.

९६. बिछवा.

नाम- सं. धूम्रपुष्पा. म. खाजकोल्ती.

वर्णन--इसका पेड छोटा और बरसातमें उगनेवाला होता है. पत्ते इसके बडे और देहमें लगनेसे जलन पैदा करनेवाले होते हैं. पत्तोंका रंग कालासा और उनपर बारीक रोएँ होते हैं.

औषधिप्रयोग--(१)गोदिडके विषपर-बिछवाकी जड गरम पानीमें घिसकर देना. (२)नहरुएपर- इसकी जड गरम पानीमें घिसकर लेप करना. नहरुआ जब बाहर निकलने लगे तब उसको चिपडेकी पत्तोंपर लपेटते जाना. दूसरे दिन जितना तंतु (नहरुआ) बाहर निकले उसपर ४।२ बार बिछवा लगा देना. नहरुएके तंतुपर चीतूका- डेक लगा देनेसे तुरंत बाहर निकल आता है. (३)दादपर- बिछवाकी जड तुलसीके रसमें पीसकर लगाना.

९७. खिरनी.

नाम- सं. क्षीरिका. गु. रायणी. म. खिरणी, रांजणी. राजपूताना- रैण.

वर्णन—यह पेड बडा और गुजरात प्रांतमें अधिकतासे होता है. पान इसके मौलसरी (बोरसिली) के बराबर होते हैं और फल नीमकी निबोली सदृश्य होते हैं. फलोंमें चेंप होता है. लकडी इसकी कडी और चिम्मड होती है, इसलिये रंगरेज लोग कपडा कूटनेकेलिये इसीका सोंट (,घोटा,) बनाते हैं.

गुण- खिरनी-मधुर, गुरु, तर्पण, वृष्य, स्थूलताकारक, हृद्य, शीतल, ग्राहक, स्वाद, कषेली, पाचन होनेपर खट्टी, धातुवर्धक, मलस्तंभक, रुचिकर, पौष्टिक और त्रिदोष, कृमि, मूर्च्छा,मोह, मद, तृषा, मेह, क्षतक्षय, रक्तपित्त, दाह और पित्तनाशक है. इसका फल- कषेला, स्निग्ध, वृष्य, गुरु, स्वाद, बलकर, शीत और तृषा, मूर्च्छा, मद, भ्रांति, क्षय, त्रिदोष और रक्तपित्तनाशक है.

औषधिप्रयोग—(१)वातपित्तप्रदर और रक्तपित्तपर-खिरनी और कैथके पत्तोंको घीमें तलकर कल्क देना.(२)ऋतु प्राप्तिकेलिये- खिरनीके बीजोंकी मींगीकी पुटरिया बनाकर धारण करना.

९८. खिळखिळा.(यह नाम मराठी है.)

वर्णन इसका वृक्ष लगभग चार हाथ ऊंचा होता है. पत्ते इसके कडवे नीम जैसे होते हैं और रंग उनका गहरा सब्ज (हरा) होता है. इसका पेड प्रायः पहाडी भूमिमें होता है. कोंकनप्रांतमे इसकी बडी अधिकता है.

औषधिप्रयोग—महारोग और भूतव्याधिपर-इसके पत्तोंकी धूनी देना.

९९. पटसन.

नाम-स शणपुष्पिका म खुळखुळा

वर्णन—सन कासाही इसकाभी पेड होता है. इसकी छोटी और बडी दो जात हैं. इसका पेड ४हाथ ऊंचा होता है सन जैसेही इसमें फल होते हैं. सूखनेपर इसके फल खन २वनते हैं. कहीं काला पटसनभी होता है

गुण— पटसन— कटु, वातिकारक, रसवंचक और अपस्मार, मूत्रबाधा, कंठरोग, हिचकी, श्वासनाशक है

औषधिप्रयोग– (१) अपस्मारपर— पटसनके फलोंका काथ या धूनी देना. (२) घाटसर्पके विषपर— पटसनके फल चिलममें रखकर तंबाकूकी तरह पीना. इससे तुरंत गलेमें भरा हुआ कफ ढीला होता है. यदि पीनेकी शक्ति न होतो कोई दूसरा आदमी चिलम पीकर उसकी धुआं रोगीके मुंह और नाकमें छोडे. (३) भूतबाधापर— पटसनके फलोंकी धूनी देना. (४) नाकके पीनस या व्रणपर— पटसनके पत्तोंका रस नाकमें डालना.

१००. खदिर

नाम—स खदिर गु खेर म. खैर.

वर्णन – इसका दूसरा नाम खेरभी है यह बनका वृक्ष है. सह्याद्रीके नीचेवाले प्रदेशमें इसके बनके बनखडे हैं. इसपर छोटे परंतु कडे कांटे होते हैं. पान इसका शमीके पान जैसे होते हैं.मकान बनानेकेलिये इसकी लकडी टिकाऊ समझी जाती है. रेतमें चाहे जितने वर्ष पडी रहे परंतु लकडी सडती नहीं है. लकडीसेही कत्था पैदा होता है. उड डेरोंकी

मेंखें आदि चीजें इसीकी लकडीसे बनाई जाती हैं. लकडीका भीतरी भाग औरभी अधिक मजबूत होता है इससे लोहार और बढई लोग अपने औजारोंमें इसीके दस्ते (मूँठे) लगाते हैं. ईखका रस निकालनेकेलिये, इसीकी लाठ बनाई जाती है. इस पेडपरसे कत्था बनानेकी विधि यह हैः— प्रथम पुराना देखकर वृक्ष लिया जाता है. ऊपरसे उसकी छाल निकालकर भीतरी लकडीके छोटे २ टुकडे किये जाते और एक मट्टीके बडे पानीके बरतनमें भरकर भट्टीपर चढा दिये जाते हैं. जब गाढी लेही-सी बन जाती है तब उसकी गोलिया या टिकिया बना ली जाती हैं. बस वही कत्था है.चूनेमें कत्थेका पानी या इसकी गीली लकडीको उबालकर निकाला हुआ पानी डालकर मकान बनाया जाय तो दीवारें ऐसी मजबूत हो जाती हैं कि सहसा तोपका गोलाभी उसपर नहीं असर कर सकता.

गुण— खैर — पाचक, शीत, रसकालमें कडवा, कषेला, रक्तशोधक, दातोंको हितकर और कफ, पित्त, कृमि, व्रण, कुष्ट, खुजली, ज्वर, शोथ, खासी, मेद, प्रमेह, आम, अरोचक, पाडु और रक्तदोषनाशक है. गोंद — मधुर, बलकर और धातुवर्धक है. खैरसार — व्रणघ्न, विशद और रक्तदोष, कफ और मुखरोगनाशक है.

औषधिप्रयोग— (१) उपदंशपर— खैर और असनका क्वाथ त्रिफलाका चूर्ण मिलाकर देना. इससे सब प्रकारका उपदंश मिटता है. (२) कुष्टरोगपर— खैरके पंचाग (मूल, फूल, फल, छाल और पान) का क्वाथ करके रख छोडना. उससे स्नान, पान, भोजन, उद्वर्तन और लेप करना. कुष्टपर-कत्था घिसकर लगाना. (३) भगंदरपर— खैरकी छाल और त्रिफलाके क्वाथमें भैंसका घी और बायविडंगका चूर्ण डालकर देना. (४) सोमलके विषपर— गायके दूधमें कत्था घिसकर देना. (५) बच्चोंके मुखारकी रोगपर— इस रोगकी पहचान यह है कि अजीर्णसे पेटके मलकी गाठ बंधकर पेट फूल जाता है, पसली दुखती है, गालोंपर शोथ आता है, मूत्र पीला होता है और शक्ति क्षीण होती

जाती है. इस रोगपर खैरकी अंतरछाल ३ माशे और गोरोचन आधे उडदके बराबर गायके दूधमें घिसकर प्रात काल नित्य ३ दिनतक दे (६) जलन होनेवाले प्रमेहपर– खैर, बबूल और शमीके कोमल अ एक २ तोला गायके कच्चे दूधमें पीसकर ५ तोला अर्क निकाल उसमें जीरा ४ रत्ती और मिश्री आधा तोला मिलाकर ७ दिनतक- दो बार नित्य लेना. (७) खराब घोडा ठिकानेपर लानेकेलिये नित्य ५ तोला कत्था देना. (८) मनुष्य क्षीण हुआ होय तो– खैर छालके रसमें हींग मिलाकर देना (९) प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रपर खैरके अकुर ४ पैसे भर और जीरा १ पैसे भर गायके दूधमें पी छान मिश्री मिलाकर दोनों बार पिलाना. (१०) खांसीपर– खैरक अंतरछाल ४ भाग, बेहेडा २ भाग और लौंग १ भागका चूर्ण शहदमें देना (११) बहरेपनपर– सफेद कत्थेको कपडे छानकर गरम पानीमें मिलाना और पिचकारीकी तरह कानमें डालना पीछे कानके साफ धो डालना (१२)पित्तविकारपर- खैरके कोमल फल १तोला और सोंठ ३ माशेको पीस गोली बनाना. और प्रात काल गाय- के दूधमें ३दिनतक लेना (१३) कुष्टपर- खैरकी छाल और आवलेका क्वाथ बावचीका चूर्ण मिलाकर देना. इससे श्वेतकुष्ट दूर होता है.

१०१. खोकली. (यह नाम मराठी है.)

वर्णन– यह पेड बहुत बडा होता है सह्याद्रि पर्वतपर इसकी अधिकता है पत्ते इसके हरडेके पत्ते समान और छाल तेजबलकी छाल जैसी मोटी तथा पीले रंगकी होती है. चने बराबर इसमें फल लगता है. छाल और फल इसके बहुत तीखे होते हैं सेमर जैसे इसमें कांटेभी होते हैं.

औषधिप्रयोग– (१) खांसीपर– इसका आधा फल या थोडी छाल पीसकर शहदके साथ खाने अथवा छालका क्वाथ पीनेसे थोडेही दिनमें खांसी, दमा और वायुविकार दूर हो जाता है.

१०२. खीरेली.(यह नाम मराठी है.)

नाम- सं. फल्गु. म. खीरेली.

वर्णन-मराठीमें इसके 'खर-त' भी कहते हैं.यह पेड बहुत जगह होता है. इसके पत्तोंपर आरी केसे दांते होते हैं. कोंकनमें बढाई लग इसके पत्तोंसे लकडी साफ करनेका काम लेते हैं जिससे लकडी चिकनी हो जाती है कटूमरके पत्ते और फल जैसेही इसकेभी पान और फल होते हैं.

औषधिप्रयोग—नलगुदपर—इसकी छालका रस४ पैसे भर गायके दूधमें दिन ३ तक देना अथवा गोमूत्रमें पीसकर छाल देना.(२)बच्चोंके पेटके दर्द होता है उसपर-इसकी जड गोमूत्रमें घिसकर देना जुलाब होगा तो उतार-घी, चावल अथवा इसके फलका चूर्ण नारियलके रसमें देना.(३) बच्चोंके पेटके डब्बे आदि रोगोंपर इसकी छाल, चित्रककी जड और ओंघाकी जड गोमूत्रमें घिसकर देना दस्त होनेपर उतार- दही भात.(४) डब्बा और प्लिहापर- इसकी छाल,पानी सोक और नारियलकी नरेटी बराबर लेकर गोमूत्रमें पीस २१दिनतक नित्य दो बार देना. (५)गरदनके ऊपरी व्रणपर-इसकी छालके रसमें चोहरा कपडा भिगोकर भेजेपर रखना और कपडा सारे सिरपर रखकर उसको बराबर तर रखना. ७दिनतक ऐसा करना और पथ्य रखना.(६)डब्बारोग न होनेकेलिये-महीनेमें दो बार इसकी छाल गोमूत्रमें घिसकर देते रहना.(७)गुल्मरोगपर-आधा तोला इसके मूले फल या छाल और नारियलकी नरेटी५तोले गोमूत्रमें पीसकर देना.(८)हिलते हुए दात और दंतशूलपर-इसकी लकडीसे दतुअन करना. इससे तीन दिनमें दात दृढ हो जाते हैं और दर्द बंद होता है.(९)स्त्रीको रज आनेकेलिये- इसके फलोंका चूर्ण नारियलके अंगरसमें३या४दिन देना.

१०३. भगावती.

नाम.—स. म भगावती.

वर्णन—कोंकन प्रांतवाले इसके मराठीमें 'भावुरडी' और 'भावरूड' भी कहते हैं. इसकी छोटी और बडी दो जात हैं. बडी जात इसकी हाथ दो हाथ ऊंची होती है. पत्ते इसके बडे होते हैं और उनपर छोटे, २ रोए होते हैं. यह पेड खेती जमी-

नमें होता है. यह गांवोंमेंमी गीली जमीनमें होता है. छोटी भात इस कुएं और नालोंके पास होती है. बहुतसे प्रांतमें यह पेड होता है. ६ रंगके इसमें 'बारीक फूल' लगते हैं. इसमें तेज गंध होती है. मराठ इसको 'बनबावरी' भी कहते हैं.

गुण—गंगावती—तीखी, उष्ण, वातनाशक और व्रणरोपण है.

औषधिप्रयोग—(१) आगंतुक घावपर—गंगावतीका पत्ता हाथ लगाकर घावपर जमा देना. इससे तुरंत रक्त बंद होकर घाव शीघ्र भर ता है. (२) पिस्सू भगानेकेलिये- जिस जगह पिस्सू हों उस जगह गंगावतीका गीला झाड झाकर डाल देना. इसकी उग्र गंधसे पिस्सू भाग जायंगे. (३) अर्शपर— गंगावतीका रस १ तोला और घी १ तोला मिलाकर देना. (४) आधाशीशीपर— गंगावतीका रस मार्थेपर लगाकर धूपमें बैठना. १ । २ बार ऐसा करनेसे दर्द तुरंत मिटता है.

१०४. हरी चाय.

नाम- सं. सुगंधि. म. गवती चहा

वर्णन—दर्भके पेडकी तरह इसके पेडभी बडे २ होते है. इसको मराठीमें 'पातीचा चहा' भी कहते हैं. बागोंमें यह लगाई जाती है. ऊंचाई इसकी १।।। हाथ होती है. इसके पत्ते कढीमेंमी डाले जाते हैं. इसका तेलभी दवामें काम आता है.

औषधिप्रयोग—(१) ज्वरमें पसीना लानेकेलिये— इसकी चाय करके पिलानेसे पसीना आता है और ज्वर उतर जाता है. (२) पेट दूखनेपर—इसका तेल देना विशूचिकापरभी यह गुणकारी है. (३) सरदी, शीतज्वर, आगंतुकज्वर और मलस्त्रपर—इसका सोंठका और मिश्रीका अष्टमाश चाय गरम २ पिलाना और ओढाकर सुला देना. इससे पसीना आकर सरदी निकल जाती है और देहमें होशियारी आती है. यह चाय गरम है. समपात करनेकेलिये कितनेही इसमें दूध मिला लेते हैं. (४) पसीना लानेकेलिये बफारा—बडे बरतनमें इसे डालकर पानी भरना और मुंह बंद करके खूब उबालना. फिर रोगीको

खटियापर छिटाकर इसका बफारा देना. (९) सर्दीपर— इसका पोदीने या दालचीनीका और अदरसका क्वाथ सोतेसमय गुड डालकर पिलाना और गरम कपडे ओढाकर सुला देना. ३ दिनतक इसी तरह करना.

१०५. गरवेल.

नाम— सं. मराठी गरवेल.

वर्णन—ऊंचाई इसकी लगभग दो हाथ होती है. पेड इसका सुगंधित सबजा जैसा और माहुली किलेपर बहुत होता है. पत्ते और जड इसकी अति कडवी होती है.

औषधिप्रयोग—(१) विशुचिकापर—इसकी जड ३ माशा और मोडसकंद ३ माशा पानीमें पीसकर देनेसे तुरंत आराम होता है.

१०६. प्रियंगू.

नाम— सं. प्रद्य. म. गहुला.

वर्णन—इसका पेड अधिक बडा नहीं होता. उत्पत्ति इसकी उत्तर हिंदुस्थानमें अधिक होती है.

गुण—प्रियंगू—कषेला, कडवा, वृष्य, शीतल, बालोंको हितकर और वांति, भ्रांति, दाह, पित्त, रक्तरोग, ज्वर, मोह, घर्म, कुष्ट, मुख-जाड्य, तृषा, वातगुल्म, विष, मेद, मेह और रक्तपित्तनाशक है. इसके बीज- कषेले, मधुर, शीतल, रूक्ष, ग्राहक, मलस्तंभक, बल्य, पित्तनाशक, कफनाशक और आध्मानवायुकारक हैं. सुगंधित प्रियंगू—शीतल, सुगंधित और कुष्ट, दाह, ज्वर तथा रक्तविकारनाशक है.

औषधिप्रयोग—(१) गर्भिणीके रक्तस्रावपर—प्रियंगू, कमलकंद और कोमल गूलरको दूधमें पकाकर देना और चीनी मिलाकर लाल चांवलोंका भात खाना. (२) आम्लपित्तपर— प्रियंगूका चूर्ण शक्करके साथ लेना.

१०७. गेहूं.

नाम— सं. गोधूम. म. गहूं.

वर्णन—सब अन्नमें गेहूं श्रेष्ठ है. इसीसे इसको 'अन्नराज' कहते हैं.

गेहूं हिंदुस्थानभरमें और अन्य देशोंमेंभी होता है. इसका पेड दो हा ऊंचा होता है. काली जमीनमें गेहूं अच्छा होता है. उत्तर हिंदुस्थानमें गेहूं अधिक होते हैं. इसीसे वहांवाले इसीको खाते हैं. अच्छी तर रखनेसे गेहू ४ । ५ बरसतक ठहर सकता है. गेहूं उत्तम प्रकारक अन्न है इससे इसके पदार्थ मनुष्य प्रकृतिकेलिये अनुकूल होते हैं. औ अन्नोंकी अपेक्षा गेहूमें पौष्टिक शक्ति अधिक है पीले, सफेद, लाल तुसिया, काले आदि इसकी कई जाते हैं जिनमें लाल सबसे बढिय और तुसिया सबसे घटिया जात है. कोमल और कच्चे गेहूंभी भूनकर खाए जाते हैं. गेहूंके जितने पदार्थ बनते हैं उतने किसी दूसरे अन्नके नहीं बनते. इसके घेवर, जलेबी, लड्डू, रोटी आदि अनेक पदार्थ बनते हैं. ५ । ६ दिनतक गेहूको भिगोकर उनके सत्वसे ' बादामी हलवा ' नामक पदार्थ बनता है वह बडा पौष्टिक है. गेहूंके सत्वसे खीर बनाई जाती है वह अशक्तोंको शक्ति देनेवाली होती है. इसका भूसा गायोंको खिलाया जाता है. कागज चिपकानेकेलिये इसके आटेकी लेही अच्छी बनती है.

गुण—बडे गेहूं—चिकने, मधुर, शीत, गुरु, धातुवर्धक, बलकर, कफकर, सारक, वर्ण्य, रुच्य, जीवन, भग्नसंधानकारक, व्रणोंको हितकर, स्थिरताकारक और आमको करनेवाले और वायु तथा पित्तनाशक हैं. पुराने होनेपर वे कफनाशक होते हैं. बारीक गेहूं—स्निग्ध, वृष्य, कफकारक, गुरु, आमदोषकारक, बलकर, मधुर, धातुवर्धक और पौष्टिक हैं और बाकी सारे गुणोंमें बडे गेहूंके समान हैं.

औषधिप्रयोग— (१) बदपर—गेहूंके आटेकी पुल्टिस (लपसी) करके ७ । ८ बार बांधनेसे गांठ पककर फूट जायगी. फिर उसपर व्रणका इलाज करना चाहिये. किसीभी गांठको पकानेकेलिये यही ' पुल्टिस ' अच्छी दवा है. (२) आम पीले होते हैं उसको मराठीमें ' कामीण ' कहते हैं उसपर— चमचा खूब गरम अर्थात् लाल करके

गेहूंपर दबाना और जो गेहूंका पसीना उसपर लगे वह आखमे लगाना. (३) शीघ्र प्रसूती होनेके लिये- गेहूंकी सेवईको पानीमें उबालना और कपडेसे छानकर वह पानी आधा सेर आधा पाव ताजा घी डालकर पिलाना. स्मरण रहे कि पेट दूखना आरंभ होतेही यह पानी पीछे नहीं देना चाहिये (४) अस्थिभगपर- थोडे भूने हुए गेहूंका आटा शहदके साथ खिलाना. कमर या जोड मुड गए हों उनके लिये यह अच्छी दवा है (५) नहरुएपर- गेहू और सनके बीजोंका चूर्ण घीमें भूनकर गुडमे गोली बनाकर खिलाना. बचूना और बिडलोनको गेहूंमें पीसकर लेप करना. (६) नाकमेंसे रक्त बहत हो तो - शक्कर और दूध डालकर गेहूका आटा देन. (६) प्रमेहपर- आध पाव गहूं रातको पानीमें भिगो देना. सबेरे उनको पीस छानकर १ तोला मिश्री मिलाकर ७ दिनतक पीना.

१०८. गाजर

नाम- स गर्जर म गाजर.

वर्णन- गाजरकी लबी २ गाठें होती और जमीनमेंसे निकलती हैं. रग इसरा लालसा होता है पेड इसका १।१ हाथ ऊंचा होता है. दिल्लीकी और पैदा होनेवाली गाजर सर्वोत्तम हाती है कच्ची गाजर

औषधिप्रयोग— (१) इसब (यह पैरमें होता है) रोगपर- गाजरको कीसकर थोडा नमक मिलाना और बिना पानी डाले पका- कर रोगपर बांधना. (२) ऋतु आनेकेलिये— गाजरके बीज पानीमें पीसकर ५ दिन देना.

१०९. भंग.

नाम— सं. विजया. म. गांजा.

वर्णन— इसका पेड लगभग ३ हाथ ऊंचा होता है. पत्ते इसके अंबा- डा जैसे होते हैं. पेडपर तुर्रे आते है उसे गांजा कहते हैं. गांजेका चूरा भंग कहलाता है. भंग घोटकर पी जाती है. भाग पीने और गांजा चिल- ममें रखकर पीनेसे नशा आता है, मनुष्यका कलेजा जल जाता है, शक्ति क्षीण हो जाती है और एक प्रकारका ऐसा असर होता है कि मनुष्य अंधासा हो जाता है और चाहे कुछ बकने लगता है. यह एक दुर्व्यसन है. ऐसे दुर्व्यसनीको गेंजेडी भंगेडी कहते हैं.

गुण—भंग— पित्तल, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, ग्राहक, लघु, कर्षणकारक, अग्निदीपक, रुचिकर, मादक, वाणीवर्धक, मोहकारक और कफ-वायु- नाशक है.

औषधिप्रयोग—(१) मूत्रकृच्छ्रपर—भंग घोटकर पिलाना. (२) अर्शपर—भंग और गायके सींगके चूर्णकी धूनी देना. (३) बैल और भैंसे रक्त मूतते हों तो—भंग, सोंफ और इलायची पीसकर अथवा केवल भंग पीसकर शक्तिके अनुसार पिलाना. (४) अतिसार- पर—गांजेका चूर्ण गुड या शक्करमें देना. (५) श्वासपर—गांजेकी राख शहदमें देना. (६) निद्रानाश, अतिसार, ग्रहणी और अग्निमंद पर—रातको भंग भूनकर शहदके साथ लेना. (७) चातुर्थिक ज्वर— गुडमें मिलाकर भंगकी बेरके बराबर गोली बनाना और ज्वर आ- नेमे चार घडी पहले लेना. (८) भूतज्वरपर—रातको भंगके झाडको न्योता देना और सबेरे उसकी जड निकालकर मस्तकपर बांधना.

२१०. गिधान. (यह नाम मराठी है.)

वर्णन— यह वनस्पति वर्षायु है अर्थात् साठमरमही रहता नम्म

और मरण दोनोंही चुकते हैं. मराठीमें इसको 'गवाटी' और 'किडामार' भी कहते हैं. दक्षिण हिंदुस्थानकी नदियोंके किनारेपर काली जमीनमें इसकी बेल श्रावण मासमें उगती है. इसके पत्तोंका रस बडा कडवा और उग्र होता है.

औषधिप्रयोग-(१) जानवरोंके क्षतोंमें कीडे पड जाते हैं उनपर-इसका रस या पत्ते पीसकर भरनेसे कीडे मर जाते हैं. (२) दादपर-इसके पत्तेका रस और अंडी (अरंडी) का तेल मिलाकर लगाना. (३) पेट दुखनेपर-इसके दो पत्ते पानीमें पीसकर देना. (४) छोटे बच्चेको दस्त साफ लानेकेलिये-इसका पत्ता नाभीपर बांधना. (५) शीतज्वर और संततज्वरपर-इसके पत्तेका रस शरीरपर लगानेसे ज्वर तुरंत चला जाता है. (६) कृमिपर- इसका रस देना या इसके बीजोंके चूर्णकी फंकी लेना. (७) सूजनपर-इसको समुद्रफलको, मालकांगनीको और काली मिरचको पीसकर लेप करना.

१११. गुग्गुल.

नाम-सं. म. गुग्गुल. गु. गूगल.

वर्णन-इसका पेड मारवाड और सिंध देशमें होता है तथा सिंगापुर टापूमेंभी बहुत होता है. गरमीके दिनोंमें इस पेडपरसे जो चेप बहता है वही गुग्गुल होता है. धूपके काममें गुग्गुल बहुत आता है. इसकी धूपसे हवा साफ होती है और रोगकारक असर दूर होता है. यही इसमें बड़ा गुण है ठाकुरके आगे नित्य धूप लगानेका मूल-कारणभी "औषध ही होगा।

गुण- गुग्गुल पांच प्रकारका होता है -(१) महिषाक्ष (भैंसा गुग्गुल), (२) महानील, (३) कुमुद, (४) पद्म और (५) हिरण्य. यह कटु, तीखा, उष्ण, रसायन, विशद, पिच्छल, सारक, कषैला, लघु, पाचक, वृष्य, टूटी हुई हड्डीको जोडनेवाला, सूक्ष्म, स्वर्य, अग्निदीपक, तेजवाला, मधुर, बल्य, नेत्रहित, स्निग्ध, सुगंधित, पौष्टिक, कांतिवर्धक, देह, और कफ, वायु, कास, कृमि, वातोदर, श्लेष्म, सूजन, अर्श,

देवदार, चित्रक, पीपरमूल, कुलींजन, अतीस, दारुहलदी, हलदी, हिंगुपत्री; जीरा, सौंफ, समामा, काला नमक, वायविडंग, जौखार, सोहागा, गजपीपर और सेंधा-नमक समभाग, इन सबके बराबर गुग्गुल रीतिके अनुसार मिलाकर बेरके बराबर गोली बनाना और घी या शहदके साथ प्रातःकाल लेना. इससे आम, उदावर्त, अंत्रवृद्धि, और गुदकृमिका नाश होता है. यह दवा महाज्वर, मूत्राघात, आनाह, उन्माद, कुष्ट, पार्श्वशूल, हृद्रोग, गृध्रसी, हनुस्तंभ, पक्षाघात, अपतानक, शोफ, प्लीहा, कांसर और अपचीके रोगियोंकेलिये हितकर है. यह बडे धन्वन्तरीकृत योग सब रोगोंका नाशकर्ता है. त्रिभायगुग्गुल—शता वरी, एरंडकी जड, सोंठ, दारुहलदी, कूट, सेंधा, रास्ना, गिलोय और इन सारे चूर्णसे दुगना गुग्गुल मिलाकर गोली बनाना और एक २ गोली खाना. मासमें पथ्यसे रहना. इससे अमवात नष्ट होता है. दूसरा प्रकार—सोंठ, पीपरामूल, वायविडंग, देवदार, सेंधा, रास्ना, चित्रक, अजवाइन, काली मिरच, कूट और हरड समभाग और गुग्गुल दुगना मिलाकर घीके साथ देना. इससे वायु, अपचन, गुल्म, शूल, कंप और गृध्रसीका नाश होता है. रास्नादि गुग्गुल—रास्ना, गिलोयका सत्व, एरंडकी जड, देवदार और सोंठ समभाग और सबके बराबर गुग्गुल मिलाकर खाना. इससे वायु, शिरोरोग, नाडीव्रण, भगंदरका नाश होता है. कचनारगुग्गुल—कचनार वृक्षकी छाल ४० तोला, हरड, बेहडा और आंवला आठ तोले, सोंठ, मिरच, पीपर चार तोले, वरना चार तोले, दाल-चीनी, इलायची और तमालपत्र एक २ तोला तथा सबके बराबर गुग्गुल लेकर कटना और चार २ मासेकी गोली सोंठके काथमें या खैरकी छाल-के काथमें या हरडके काथमें या गरम पानीमें लेना. इससे भयंकर गंडमाला, गंडमालाका भेदरूप अपचीरोग, अर्बुद, फुन्सी, व्रण, गंडमाला, भगंदर, सूजन, गुल्म और अर्श दूर होता है. गोक्षुरादि गुग्गुल-११२ तोले गोखरूको कुछ कूटकर छ गुने पानीमें चढाना और आधा पा-नी रहनेपर उतारकर छान लेना. २८ तोले गुग्गुल पीसकर उसमें डा-

छना और आगपर चढाकर गुडकासा सीरा बनाना. पीछे सोंठ, मिरच, पीपर, हरड, बेहडा, आवला और नागरमोथा चार २ तोला पीसकर मिलाना और गोली बना लेना. इससे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, मूत्राघात, वातरक्त, वातरोग, धातुविकार और अश्मरी दूर होता है. लाक्षादि-गुग्गुल—लाख, हाडसांधे (हडजोड), अर्जुनसादडा (कोह), अश्वगंध, नागबला और गुग्गुलका चूर्ण अस्थिभंग और मुक्तास्थिका नाश करता है और देहको वज्रसमान दृढ करता है. आभादि गुग्गुल—बबूलके बीज, सोंठ, मिरच, पीपर, हरड, बेहडा और आंवला समभाग तथा सबके बराबर गुग्गुल मिलाकर टूटी हड्डी जोडनेकेलिये दिया जाता है. घी या शहदके साथ गुल्म और शूलपर—शुद्ध गुग्गुल गोमूत्रमें देना विडंगाद्य गुग्गुल—वायविडंग, हरड, बेहडा, आवला, सोंठ, मिरच पीपर समभागमें चूर्णके बराबर गुग्गुल डालकर घीमें मीसना और गोली खाना. और पथ्य करना इससे दुष्टव्रण, नाडीव्रण, अपची, मेह, पीवर समभाग पीसकर लेप करनेसे दुष्टव्रण, नाडीव्रण और वायविडंगके समभाग चूर्णमे बराबर गुग्गुल मिलाकर तोलेभरकी गोली बनाना और नित्य १ खाना. इससे व्रण, वातरक्त, गुल्म, उदररोग, पाडु और सूजन दूर होती है. पथ्यागुग्गुल—हरड १००, बेहडा२००, आवले ४०० और गुग्गुल ६४ तोलेको २०९८ तोले पानीमे रातको भिगो देना. सवेरे आगपर चढाकर पकाना आधा सेर पानी रह जाय तब उतारकर छान लेना और लोहेकी कटाईमें डालकर फिर आगपर चढाना. गाढा हो जाय तो उतारकर वायविडंग, दातूणी (दंती)की जड, त्रिफला, गिलोय, पीपर, निसोथ, सोंठ और मिरचका चूर्ण दो दो तोले मिला देना. बस गुग्गुल तैयार हो गया. यथेष्ट आचरण और भोजन करनेवालेकोंभी इससे फायदा होता है. इससे गृध्रसी, नूतन मंदता, प्लीहा उभ अठर, पगुता(लंगडापन), पाडु, कडु(खुजली), कृमि और वातरक्तका नाश होता है. यह मनुष्यको बलमें हाथी और वेगमें घोडे समान कर देता है और आयु, चक्षुबल तथा पुष्टि करता है, विघ्ननाशक है, व्रत अदृढ करनेवाला है. अर्थात वैद्यलोग इससे सब रोगोंपर

बडा फायदा होता है. यह प्रयोग 'बोपदेवशतक'में लिखा है.दूसरी योगराज गुटी-सोंठ, पीपरामूल,चव्य, चित्रक, काली मिरच, भूनी हींग, अजमोद, शिरस, जीरा, शाहजीरा, रेणुकबीज, इंद्रजौं, पाठ, बायविडंग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारंगीमूल, वच, मरोरफली, तमालपत्र, देवद्वार, पीपर, कूट, रास्ना, नागरमोथा,सिंधव, इलायची, गोखरू, हरड, धनिया, बेहडा, आवला, दालचीनी, खस,यवक्षार और तिल समभाग तथा इन सबके बराबर शुद्ध गुग्गुल लेकर घीमें खूब पीसना और गोली बनाकर चिकने बरतनमें रख देना. इसकी मात्रा आधे तोलेकी है. विशेष करके जरा और व्याधिका यह नाश करनेवाली है.इसमें मैथुर और खाने पीनेकी कोई रोक-टोक नहीं है. इससे संपूर्ण वातरोग,आमवात,अपस्मार,वातरक्त,कुष्ट,दुष्टव्रण, अर्शरोग, प्लीहा, गुल्म, उदररोग, आनाह, अग्निमांद्य,श्वास, काम, अरुचि, प्रमेह, नाभीशूल, कृमि, क्षय, हृद्रोग, शुक्रदोष, उदावर्त, और भगंदरका नाश होता है. तीन मासेसे सात२दिनमे एक तोलातक बढा देना. यह सब प्रकारके वातरोगोंपर–रास्नाके काथमें, मेहपर–दारूहल्दीके काथमें, वातरक्तपर–गिलोयके काथमें,पांडुरोगपर–गोमूत्रमे, मेदवृद्धिपर-शाहदमे, श्वेत या कृष्णकुष्टपर–नीमके काथमें. शूलपर–मूलीके काथमें, चूहेके विषपर–पाडलके मूलीके काथमें, उग्र नेत्ररोगोंमें त्रिफलाके काथमें और संपूर्ण उदररोगोंमें पुनर्नवादि काथके साथ देना चाहिये. किशोर-गुग्गुल– गिलोयसेर, गुग्गुल १ सेर और त्रिफला १ सेरको पानी १६ सेरमे काथ करना. जलते२ जब ८ सेर पानी रह जाय तब छानकर फिर गरम करना. जब पकते २गाढा होने लगे तब उसमें सोंठ, मिरच, पीपर, बायविडंग और त्रिफलाका २।२ तोले चूर्ण मिलाना, निसोथ और दंतीमूल १।१तोला मिलाना, गिलोयका चूर्ण ४तोले मिलाना, और, ३।३ मासेकी गोली बना लेना. यह किशोरगुग्गुल–सूजन, व्रण, गुल्म-कुष्ट,उदर,वातरक्त, खासी, अग्निमांद्य, पांडु और प्रमेहको दूर करता है, द्वात्रिंशकगुग्गुल–त्रिकटु, त्रिफला, नागरमोथा, बायविडंग, चव्य चित्रक, दालचीनी, बडी इलायची, पीपरामूल, शिरणी,

देवदार, चित्रक, पीपरमूल, कुलींजन, अतीस, ह...
हलदी, हिंगुपत्री; जीरा, सौंफ, धमासा, काला नमक, वायविडंग, जौखार, सोहागा, गजपीपर और सेंधा-नमक समभाग, इन सबके बराबर गुग्गुल रीतिके अनुसार मिलाकर बेरके बराबर गोली बनाना और घी या शहदके साथ प्रातःकाल लेना. इससे आम, उदावर्त, अंत्रवृद्धि, और गुदकृमिका नाश होता है. यह दवा महाज्वर, भूतबाधा, आनाह, उन्माद, कुष्ठ, पार्श्वशूल, हृद्रोग, गृध्रसी, हनुस्तंभ, पक्षाघात, अपतानक, शोफ, प्लीहा, कांवर और अपचीके रोगियोंकेलिये हितकार है. यह बड़े धन्वन्तरीकृत योग सब रोगोंका नाशकर्ता है. विश्वाद्यगुग्गुल—शतावरी, एरंडकी जड, सोंठ, दारूहलदी, कूट, मेंथा, रास्ना, गिलोय और इस सारे चूर्णमें दुगना गुग्गुल मिलाकर गोली बनाना और एक २ गोली खाना. प्रातमें पथ्यसे रहना. इससे आमवात नष्ट होता है. दूसरा प्रकार—सोंठ, पीपरामूल, वायविडंग, देवदार, सेंधा, रास्ना, चित्रक, अजवाइन, काली मिरच, कूट और हरड समभाग और गुग्गुल दुगना मिलाकर घीके साथ देना. इससे वायु, अपचन. गुल्म, शूल, कंप और गृध्रसीका नाश होता है. रास्नादि गुग्गुल—रास्ना, गिलोयका सत्व, एरंडकी जड, देवदार और सोंठ समभाग और सबके बराबर गुग्गुल मिलाकर खाना. इससे वायु, शिरोरोग, नाडीव्रण, भगंदरका नाश होता है. कचनारगुग्गुल—कचनार वृक्षकी छाल ४० तोला, हरड, बेहडा और आंवला आठ तोले, सोंठ, मिरच, पीपर चार तोले, वरना चार तोले, दालचीनी, इलायची और तमालपत्र एक २ तोला तथा सबके बराबर गुग्गुल लेकर कटना और चार २ मासेकी गोली सोंठके क्वाथमें या मिरकी नालके काथमें या हरडके काथमें या गरम पानीमें लेना. इससे भयंकर गंडमाला, गंडमालाका भेदरूप अपचीरोग, अर्बुद, फुन्सी, व्रण, गंडमाला, भगंदर, सूजन, गुल्म और अर्श दूर होता है. गोक्षुरादि गुग्गुल-१२२ तोले गोखरूको कुट कूटकर छः गुने पानीमें चढाना और आधा पानी रहनेपर उतारकर छान लेना. २८ तोले गुग्गुल पीसकर उसमें डा-

लना और आगपर चढाकर गुडकासा सीरा बनाना. पीछे सोंठ, मिरच, पीपर, हरड, बेहडा, आंवला और नागरमोथा चार २ तोला पीसकर मिलाना और गोली बना लेना. इसमे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, मूत्राघात, वातरक्त, वातरोग, धातुविकार और अश्मरी दूर होता है. आभादि-गुग्गुल—आभा, हाडसांधे (हडजोड), अर्जुनयादडा (कोह), अश्वगंध, नागबला और गुग्गुलका चूर्ण अस्थिभंग और मुक्तास्थिका नाश करता है और देहको वज्रसमान दृढ करता है. आभादि गुग्गुल—बबूलके बीज, सोंठ, मिरच, पीपर, हरड, बेहडा और आंवला समभाग तथा सबके बराबर गुगुल मिलाकर टूटी हड्डी जोडनेकेलिये दिया जाता है. घी या शहदके साथ गुल्म और शूल्प—शुद्ध गुग्गुल गोमूत्रमें देना. विडंगाद्य गुग्गुल—वायविडंग, हरड, बेहडा, आमला, सोंठ, मिरच पीपर समभागमें चूर्णके बराबर गुग्गुल डालकर घीमें पीसना और गोली बनाना. और पथ्य करना. इससे दुष्टव्रण, नाडीव्रण, अपची, मेद, पीपर समभाग पीसकर लेप करनेमे दुष्टव्रण, नाडीव्रण और वायविडंगके समभाग चूर्णमे बराबर गुग्गुल मिलाकर तोलेभरकी गोली बनाना और नित्य १ खाना. इससे व्रण, वातरक्त, गुल्म, उदररोग, पांडु और सूजन दूर होती है. पथ्यागुग्गुल—हरड १००, बेहडा२००, आवले ४०० और गुगुल ६४ तोलेको १०२४ तोले पानीमें रातको भिगो देना. सवेरे आगपर चढाकर पकाना. आधा सेर पानी रह जाय तब उतारकर छान लेना और लोहेकी कढाईमें डालकर फिर आगपर चढाना. गाढा हो जाय तो उतारकर वायविडंग, दातूणी (दंती)की जड, त्रिफला, गिलोय, पीपर, निसोथ, सोंठ और मिरचका चूर्ण दो दो तोले मिला देना. बस गुग्गुल तैयार हो गया. यथेष्ट आचरण और भोजन करनेवालोंको भी इससे फायदा होता है. इससे गृध्रसी, नूतन खंजता, ओष्ठ उग्र जठर, पंगुता(लंगडापन), पांडु, कंडु(खुजली), कृमि और वातरक्तका नाश होता है. यह मनुष्यको बलमें हाथी और वेगमें घोडे समान कर देता है और आयु, चक्षुबल तथा पुष्टि करता है, विघ्ननाशक है, व्रत अदृढ करनेवाला है. अर्थात् वैद्यलोग इससे सब रोगोपर

काममें लेते हैं. गुग्गुलमें अपथ्य—अधिक तीखा और खट्टा पदार्थ खाना तथा मैथुन, श्रम, धूप, मद्य और क्रोध इ०

११२. चिरम.

नाम-सं. गुंजा. मं. गुंज. गु. चणोठी.

वर्णन—इसको गुंजाभी कहते हैं. इसकी बेल होती है. पत्ते इसके छोटे और लाल दो इसकी जात हैं. दोनोंकी बेलें एकसी होती हैं. सोना तोलनेमें यह काम आती है. एक तोलेमें ९६ चिरम चढती हैं. इसकी उपविषोंमें गिनती है.

गुण— चिरम—स्वादिष्ट, कटु, बलकर, उष्ण, कषेली, त्वचाके हितकर, केश्य, रुच्य, शीत,वृष्य, और नेत्ररोग, विष, पित्त, इंद्रलुप्त, व्रण. कृमि, राक्षस, ग्रहपीडा, कंडु, कुष्ट, कफ, ज्वर, मुखरोग, शिरदर्द, वायु, श्रम, दमा, तृषा, मोह और मदनाशक है. इसके बीज—वातिकारक, और शूलनाशक हैं. इसके पत्ते विषनाशक हैं. सफेद चिरममें और सब गुण तो लाल चिरम जैसेही होते हैं परंतु एक विशेषता यह है कि यह विशेष करके वशीकरण प्रयोगमें काम आती है.

औषधिप्रयोग— (१) आधाशीशीपर— चिरमकी जड पानीमें पीसकर नास देना. इससे तत्काल रोग मिटता है. (२) सीतलाले आखमें फूली पड गई हो तो—मुगलाई एरंडके चेप अर्थात् दूधमें सफेद चिरम घिसकर अंजन करना. (३) धातु गिरता हो तो और वीर्य बढाना हो तो—चिरमकी जड दूधमें पकाकर शक्करके साथ देना. (४) गंजे सिरपर—चिरमकी जड या फलको मिलावेके रसमें घिसकर लेप करना अथवा चिरम शहद या घीमें पीसकर लगाना. (५) आवाज साफ होनेकेलिये—सफेद चिरमके पत्ते चबाकर मुंहमें रखना और रस निगलते जाना. (६) गरमीसे मुंहमें फोडे हो गए हों तो— सफेद चिरमके पत्ते, सीतलचीनी (कबाबचीनी) और मिश्री मुंहमें रखकर रस उतारना अथवा उसकी जड चबाना. (७) लाल मेहपर—सफेद चिरमके पत्ते और मेंहदीके पत्तेका समान रस निकालकर उसमें

दुदुरलीकी जड घिसना और जीरा तथा मिश्री मिलाकर देना.७दिनतक दो वार नित्य देना.(८) घावंढेपर–सफेद चिरमके पत्तोंका लेप करना. (९) प्रमेहपर–चिरमके पत्तेका रस पावभर गायके दूधमें देना. (१०) आगपैणपर–सफेद चिरमके पत्तोंका रस जीरा मिलाकर देना. (११) मूत्रकृच्छ्रपर–सफेद चिरमके पत्तेका रस मिश्री और जीरा मिलाकर देना. (१२) गरमीसे माथा दूखता होतो–सफेद चिरमकी जड धोकर घिसना और कपडेसे ७दिन नाकमें रस टपकाना. (१३) उपदंशपर–लाल चिरमके पत्तेका रस मिश्री और जीरा७ दिन मिलाकर देना.(१४) शेंदरा (एक जातका सर्प)के विषपर–चिरमके पत्ते ७ दिन खाना. (१५) शिरोरोगपर–चिरमकी जड घिसकर नास देना.इससे आंखोंके आगे चक्कर आना, रतोंधा, आंखका जाला, आधाशीशी और मस्तकशूल दूर होता है. (१६) वायुरोगपर लेप– जिस अंगमें वायुका कोप होता हो वहांके बाल काटकर चिरमका पानीमें लेप करना. इससे अपबाहुक, विश्वाची, गृध्रसी और दूसरे वायुविकार दूर होते हैं. (१७) गांठपर–लाल चिरमकी डाल, इमलीका बीज और गेरू ठंडे पानीमे पीसकर लेप करना; और सूखनेपर दुबारा करना. (१८) उपदंशपर–सफेद चिरमकी जड और सफेद गुडहरकी जड घिसकर पिलाना और गरमीके चट्टेपरभी लगाना. (१९) खांसीपर–सफेद चिरमकी जड घिसकर देना. (२०) पलकपर होनेवाले पूय, अभिष्यंद रोगपर– चिरम पानीमें उबालकर पानी पलकपर लगाना. इससे जलन और सूजन मिटकर रोग बह जाता है. (२१) गंडमालापर–*चिरमके फल और जडके क्वाथमें आधा तेल डालकर पाचन करना और* उसका मालिश करना. इससे दारुण गंडमालाभी मिटती है. (२२) तिमिररोगपर–चिरमकी जड बकरेके मूत्रमें घिसकर अंजन करना. (२३) सर्पदंशपर– सफेद चिरमकी जड घिसकर पिलाना. (२४) गंजेसिरपर–चिरम, हाथीदांतकी राख और रसोतका लेप करना. इससे तुरंत बाल आने लगते हैं.

११३. गुलतुरी.

नाम- सं. शंसोदरी. गु. गुलतुरो. म. गुलतुरा.

वर्णन—इसका पेड छोटा और पत्ते पवाड जैसे होते हैं. इसके फू को 'शंकरका फूल' भी कहते हैं. इसके फूल बहुतसे कायमें काम आते लकडी इसकी मजबूत और खूटे बनानेमें प्रायः काम आती है. पेड इस जो बीचमें काट डाला जाता है तो फिर उग उठता है और अने शाखाएं निकलती हैं. पीले और लाल फूलवाली इसकी दो ज... हैं. इसकी छाया चारों ओर होती है. अंगुली जैसी मोटी, चपटी और ४।५ अंगुल लंबी फलिया लगती हैं. फलीमें ७।८दाने निकलते हैं. ये दाने बच्चे बडे स्वादसे खाते हैं. पेडमें काटे होते हैं. बीज और कलम दोनों तरह-से यह पेड लगाया जा सकता है. फूलके गुच्छेके गुच्छे लगते हैं परंतु गंध नहीं होती. यों तो इसमें बारहों महीने फूल लगते हैं परंतु आषाढसे भाद्रपदतक अधिक चढाव रहता है. शोभाकेलिये यह पेड बागमें लगाया जाता है. इस पेडको शंकासुरी, शंकेश्वर, रासतुर्रा और कुंकुम केशरभी मराठीमें कहते हैं.

गुण-यह उष्ण और कफ, वायु, शूल तथा आमवायुनाशक है.

औषधिप्रयोग-(१) नाकसे रक्त गिरता हो उसपर— आमकी गुठली (बीज) दूर्वाके रसमें घिसकर नाकमें डालना और गुलतुर्रेके पत्तेका रस अलिता और शहद डालकर पिलाना.

११४. गुलबास. (गुलाबांस)

नाम- सं. नक्ता. म. गुलबाशी.

वर्णन—मराठीमें इसको 'सायंकाळी' भी कहते हैं. पेड इसका छोटा और पत्ते छोटे तथा लंबे और मृदु होते हैं. इसमें लाल, पीला, सफेद, गुलाबी और बसंती फूल लगते हैं सफेद गुलबास दवामें अधिक उपयोगी है. गुलबास—बातल, शील और गलगंडनाशक और अपक्व व्रणोंको शमन करनेवाला है.

औषधिप्रयोग-(१)एक जातके बडे फुन्सीपर (यह चाहे उस शरीरके

स्थानमें होता है.)गुलबांसके पान घी लगाकर सेंककर बांधना. इससे रक्त निकलकर गांठ बैठ जाती है. अथवा इसकी गांठ पानीमें घिसकर बारबार लेप करना. (२)पुष्टतापर-सफेद गुलबांसकी गांठको कीसकर छायामें सुखाना और चूर्ण करना. उसको थोडे घीमें हिलाकर बादाम, पिश्ता, चिरोंजी आदि डालना और शक्करकी चाशनी मिलाकर लड्डू बना लेना. इसमेंसे नित्य तोला, दो तोला पाक खाकर ऊपरसे गायका दूध पीना. इसमेंसे नित्य तोला पाक खाकर ऊपरसे गायका कच्चा दूध पीना. इससे धातुवृद्धि और शरीर पुष्ट होता है. (३) धातु गिरता होतो-सफेद गुलबांसकी गांठ गायके दुधमें घिसकर ७ दिन पिलाना. (४) शरीरमेंसे गरमी झडने और रक्तशुद्धिकेलिये- गायके कच्चे दुधमें १ तोलातक सफेद गुलबांसकी जड पीसकर ६ रत्ती जीरा और १ तोला मिश्री मिलाना और दोनों बार देना. साथमें पथ्यभी रखना. तुरंत फायदा होता है. (५) बाल गिरानेकेलिये- गुलबांसकी जड पानीमें पीसकर लेप करना.

११९. गुलाब.

वर्णन—इसका पेड सर्वत्र प्रसिद्ध है. पेड छोटा और कांटेदार होता है. इसकी गुलाबी, लाल, पीली और सफेद जात होती हैं. बढिया गुलाब-अरबस्थान और तुर्कस्थानमें होता है. इसके फूलका इत्र और गुलाबजल बनता है. गंध इसमें बहुत अच्छी होती है. फूलकी पखडियोंका गुलकंद बनता है. इसके फूल सारक और गुलाबजल ठंडा होता है.

औषधिप्रयोग- (१) दस्त होनेकेलिये- थोडे सूखे गुलाबकी पखडियां और शक्कर खाकर ऊपरसे पानी पी लेना. अथवा रातको फूल भिगो देना और सवेरे छानकर वह पानी पीना. दूसरा प्रकार- सूखे गुलाबके फूलको चावलोंमें डालकर पकाना और घी, शक्कर डालकर वह भात खाना. इससे ग्लानि आदि कुछ नहीं होता और दस्त जल्द आने लगते हैं. (२) गुलकंद बनानेकी विधि—बढिया गुलाबकी पखडियां और दुगनी मिश्री लेकर बरणी या चपटी फिरे हुए मट्टीके बरतन-

में दोनोंके तरपर तह लगाना और मुंह बांधकर८ दिनतक धूपमें रखना यह गुलकंद बन गया.यह गुलकंद—दाहशामक, पित्तशामक और मलशुद्धि करनेवाला है.।(३)गुलाबका इत्र बनानेकी विधि—एक पानीके बरतन बहुतसे फूल डालकर आगपर चढाना और जब उबाल आ जावै तो उतारना. ठंडा होनेपर इत्रकी बुंदे पानीमें आ जावेंगी.उनको रूईसे उठाकर शीशीमें भर देना. मनभर फूलमेंसे तोलाभर इत्रभी नहीं निकलता. इसी महंगा बिकता है.इत्र निकालने बाद जो पानी बचता है वह गुलाबजल कहलाता है. (४)गुलाबका शरबत-गुलाबजलमें मिश्री मिलाकर उबालनेसे बनता है यह सुगंधित शरबत उष्णताका नाश करनेवाला,ठंडा और गरमीके दिनों में सेवन करने योग्य होता है (५)आखोंकी जलन और दृष्टि कम होगई हो तो-गुलाबजल आखोंमें डालते रहना.(६)वायूसे शरीर अकुंचित होता है उसपर— गुलाबजल मस्तकका मध्यभाग छोडकर नाक, माथा और आखोंपर रूईसे लगाना. (७) प्रदर, धातुविकार, रक्तार्श, पित्तविकार आदिपर—सुबह—शाम पाच २ ताजा गुलाबके फूल तीन २ माशे मिश्रीके साथ खाना. और ऊपरसे गायका दूध १४दिन पीना. दस्त साफ होता है, मूत्रस्थानका दाह, मूत्रकी आरक्तता, पीलापन आदिकेलिये यह उत्तम दवा है. (८) खुजली, दाद आदि त्वचारोगपर— गुलाबके फूलका छुलाब देनेसे बड़ा फायदा होता है (९) त्वग्दोषपर—गुलकंद खानेसे रक्तशुद्धि होती है. (१०) आखोंकी गरमी निकालनेकेलिये— २१बार गुलाबजलकी भावना देकर सुरमा आजना. (११) त्वग्दोषपर—कपूर, सोहागा, गंधक और लोबानको गुलाबजलमें घोंटकर गोली बना लेना और पानीमें घिसकर लेप करना. शुभं भवतु.

समाप्त.